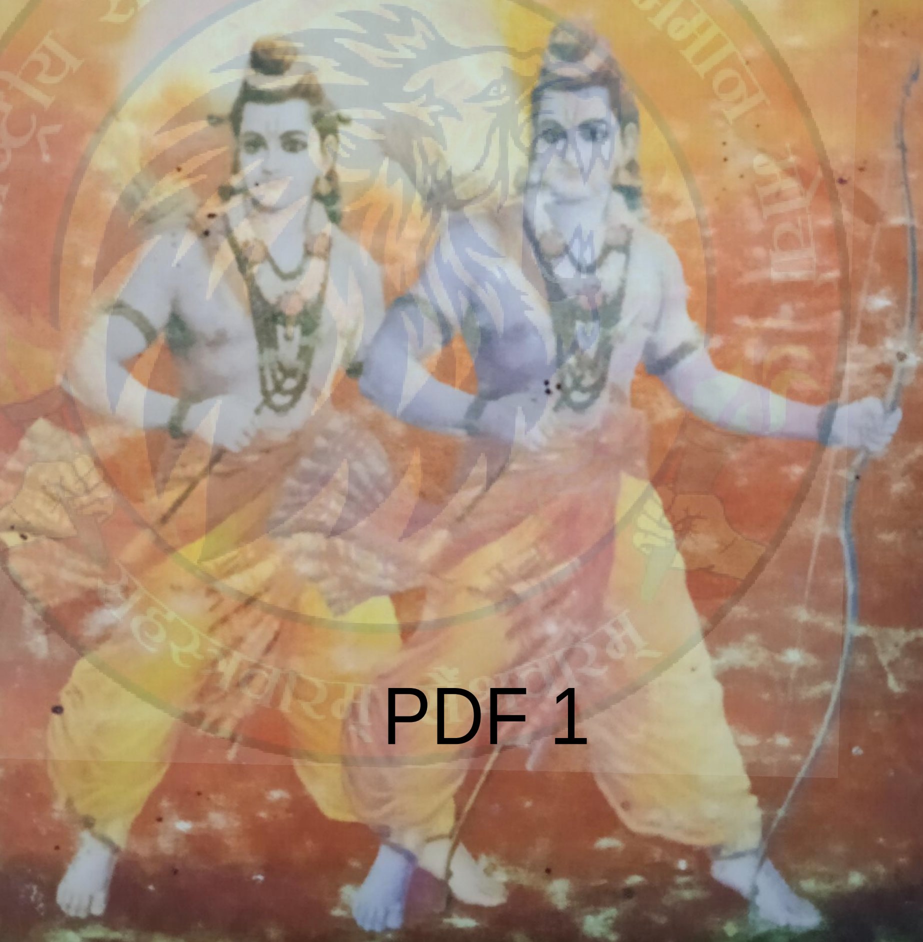
विसेन वंश दर्पण



लेखक
स्व० महताब नारायण मल्ल

लेखक परिचय



नाम	:	स्व० महताब नारायण मल्ल
शिक्षा	:	एम.ए. (इंगलिस), एम.ए. (इतिहास) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा भूतपूर्व प्रवक्ता (इंगलिस) राजकीय जुबिली इण्टर कालेज, गोरखपुर
जन्म तिथि	:	22 सितम्बर 1922
पुण्य तिथि	:	3 अक्टूबर 1995
जन्म स्थान	:	ग्राम-लखनौर, मधुबन, मऊ (उ०प्र०)

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥

श्रीमद्भगवद्गीता

अर्थात शूरवीरता, तेज, धैर्य, चतुरता और युद्धमें भी न भागनेका स्वभाव एवं दान और स्वामीभाव अर्थात निःस्वार्थभावसे सबका हित सोचकर, शास्त्राज्ञानुसार शासनद्वारा, प्रेमके सहित पुत्रतुल्य प्रजाको पालन करनेकाभाव- ये सब क्षत्रियके स्वाभाविक कर्म हैं।

अनुमोदन



राजर्षि कुंवर श्रीपाल सिंह

विद्यावाचस्पति

राष्ट्रीय अध्यक्ष,

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा

महताब नारायण मल्ल, डबल एम० ए०, अंग्रेजी, इतिहास, प्रवक्ता द्वारा रचित *विसेन वंश दर्पण* देखा। आपने अत्यन्त प्रयास के साथ अच्छा खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखा। इसके लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई है। इसके अवलोकन से क्षत्रिय समाज का हित होगा।

भवदीय

(राजर्षि कुंवर श्रीपाल सिंह)

राष्ट्रीय अध्यक्ष,

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा

विशेष सहयोगी



स्व. पं० फूल चन्द त्रिपाठी

(पुरातत्व वेत्ता)

जन्म स्थान : ग्राम-मखमेलपुर

जनपद-मऊ

विशेष सहयोगी



श्री अयोध्या प्रसाद मल्ल विसेन

(अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक एवं
प्रसार मंत्री अखिल भारतीय क्षत्रिय महा सभा, जनपद-मऊ)
भारत की जनगणना वर्ष 1981 में उत्कृष्ट सेवा हेतु
राष्ट्रपति द्वारा रजत पदक से सम्मानित
जन्म स्थान : ग्राम-लखनौर
जनपद-मऊ

विशेष आभार

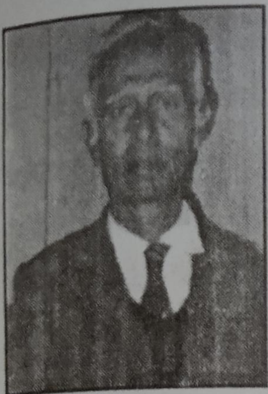
- स्व० बाबू जमुना मल्ल, सदस्य रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल

एवम्

- स्व० जंग बहादुर मल्ल, ग्राम लखनौर, जनपद मऊ, को उनकी प्रेरणा एवं ऐतिहासिक अभिलेखों के संग्रह हेतु।

- स्व० पं० फूल चन्द त्रिपाठी, पुरातत्व विद्व को जयपुर संग्रहालय से विसेन वंश के राजाओं के दुर्लभ चित्र उपलब्ध कराने हेतु।
- स्व० सूबेदार भगवान दीन सिंह ,क्षत्रिय वंशार्णव के लेखक एवं इतिहास खोजकर्ता को उनके जालन्धर स्थित राजा मोती दास के कोट के भग्नावशेष के संदर्भ में पुष्टि करने एवं राजा मोती दास की वंशावली उपलब्ध कराने हेतु ।
- राजर्षि कुंवर श्रीपाल सिंह, राजा सिगरामऊ, जौनपुर को उनके अभिभावकत्व एवं प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु ।
- डा० रघुनाथ चन्द इतिहासकार एवं प्राध्यापक, प्राचीन इतिहास विभाग, दिग्विजयनाथ डिग्री कालेज, गोरखपुर को उनके द्वारा प्रदत्त विभिन्न वंशों के संदर्भ में ऐतिहासिक तथ्य सम्बन्धित अभिलेख हेतु ।
- श्री वैजनाथ मल्ल, ग्राम लकुरा, मऊ को वंशावली प्रदान करने हेतु
- श्री अयोध्या प्रसाद मल्ल विसेन, सेवानिवृत, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापक एवं जनपद प्रचार मंत्री, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा, शाखा जनपद मऊ को उनके अथक सहयोग हेतु ।

लेखक प्रेरणा के दो शब्द



लेखक का जीवन प्रारम्भ से ही पठन पाठन में बीता। प्राथमिक शिक्षा से लेकर एम०ए० (इतिहास, अंग्रेजी) तक शिक्षा प्राप्त करके, तत्पश्चात् अगला जीवन भी शिक्षा क्षेत्र के सम्पर्क में शिक्षक के रूप में ही बीता। अनेक स्तरों को पार करते हुए, अन्त में राजकीय जुबिली इण्टर कालेज गोरखपुर में प्रवक्ता (अंग्रेजी) के पद पर रह कर अध्यापन कार्य किया। 30 जून सन् 1981 ई० को कार्यकाल समाप्त कर सेवा निवृत्त हुआ। घर पर लिखने-पढ़ने का क्रिया कलाप निरन्तर चलता रहा। अध्यात्म के रास्ते पर लेखक के मन में यह उद्‌गार पैदा हुआ कि दुनियाँ छोड़ने के बाद कोई अपने हाथ से लिखित इस प्रकार का चिह्न दुनियाँ में छोड़ जाऊँ जो समाज के लिए उपयोगी हो और मन में उत्पन्न प्रवृत्ति को भी निष्कासन मिल सके। अपने पूर्व जीवन के अभ्यस्त विषय (इतिहास) लिखने की प्रेरणा मन में हुई। फलस्वरूप प्रस्तुत पुस्तक लिखी गयी। इस लेखन कार्य में अनेक बन्धुओं (विद्वानों) की सहायता मिली जिसमें पं० फूलचन्द त्रिपाठी इतिहासज्ञ (पुरातत्व विभाग) ग्राम मखमेलपुर, बाबू जंगबहदुर मल्ल लखनौर, स्व० बाबू जमुना मल्ल सदस्य रायल एशियाटिक सोसायटी बंगाल, श्री बैजनाथ मल्ल लकुरा, श्री अयोध्या प्रसाद मल्ल विसेन (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त) सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक एवं जनपद प्रचार मंत्री अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा शाखा मऊ जनपद द्वारा विशेष रूप से सहायता मिली।

मैं इन लोगों का बहुत-बहुत आभारी हूँ। मैं आशा और विश्वास करता हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक को पढ़कर, समाज के लोगों में आपसी सम्बन्ध बढ़ेगा तथा आत्मीयता प्रगाढ़ होगी। इससे लेखक अपना परिश्रम सफल समझेगा और उसे हार्दिक सन्तोष होगा।

(स्व०) महताब नारायण मल्ल

एम०ए० (इतिहास, अंग्रेजी)

प्रवक्ता अंग्रेजी

राजकीय जुबिली इन्टर कालेज, गोरखपुर

ग्राम-लखनौर, जनपद-मऊ

प्रथम अध्याय

विसेन वंश

विसेन वंश की उत्पत्ति : इस वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतैक्य नहीं है। वर्तमान इतिहासज्ञ यह मानते हैं कि मल्ल क्षत्रियों और मौर्य क्षत्रियों के वैवाहिक सम्बन्ध और राजनैतिक सहानुभूति से मल्लगण राष्ट्र के दक्षिण भाग में एक छोटा सा अधीन राज्य भी स्थापित हो गया, जिसकी राजधानी मझौली हुई। मल्लों और मौर्यों के विवाह सम्बन्ध से जो राजकुमार उत्पन्न हुआ उसका नाम विश्वसेन रखा गया। यही विश्वसेन विसेन बंश के प्रथम पुरुष थे।

इस वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्न लेख और पुस्तकें मिलती हैं।

विसेन वंश वाटिका	:	श्री लाल खड्ग बहादुर मल्ल।
विसेन वंशागम	:	कुंवर क्षत्रपति सिंह।
भिनगा फेमिली	:	भिनगा नरेश स्व० राजर्षि उदयप्रताप सिंह।
क्षत्रिय कल्पद्रुम	:	
क्षत्रिय कल्पावतार	:	
जाति भाष्कर	:	पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र।
टाड राजस्थान (हिन्दी अनुवाद)	:	रायबहादुर महामहोपाध्याय पंडित गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा।
आईना अवध	:	सैय्यद मुहम्मद अब्दुल हसन मानिकपुरी।
गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास	:	पंडित डा० राजबली पाण्डेय।

शाही दर्पण	:	श्री बब्बन मल्ल विसेन।
इतिहास लौटा	:	श्री जगदीश नारायण सिंह।
क्षत्रिय वंश भाष्कर	:	श्री शिवनाथ भाष्कर।
क्षत्रिय मित्र	:	श्रद्धेय राजा अवधेशसिंह कालाकांकर जिला-प्रतापगढ़ वगैरह।

विसेन वंश वाटिका के लेखक श्री लाल खड्ग बहादुर मल्ल विसेन वंश की उत्पत्ति के विषय में उक्त पुस्तक के परिच्छेद चतुर्थ पृष्ठ संख्या 45-46 में लिखते हैं: विश्वसेन क्षत्रिय मुनेश्वर मयूर भट्ट के वंश में हैं। इसीलिए यह वंश मुनि वंश क्षत्रिय कहा जाता है। अब यह प्रकट कर देना आवश्यक है कि मयूर भट्ट कौन थे? कैसे थे ?

यह महाशय उस ऋषि कुल में से थे, जिस ब्रह्म वंश में ब्रह्मा के पश्चात् भृगु, वत्स्य, च्यवन, और्व्व आदि के पीछे जमदग्नि के पुत्र परशुराम जी ने अवतार ग्रहण किया और फिर द्रोणाचार्य, भिष्माचार्य, और रामाचार्य आदि के अनन्तर मथूर भट्ट हुए। मयूर भट्ट ऐसे न थे, जिनको आज तक भारत वर्ष में कोई शास्त्रज्ञ न जानता हो। यह बड़े विद्वान और तेजस्वी थे। कहते हैं इन्होने पंचवटी में जन्म लिया था। उन्होंने स्थान ककराडीह जनपद मऊ में बहुत दिनों तक निवास किया। यह स्थान पहले आजमगढ़ जनपद में था, मझौली से अनुमानतः 20 मील के अन्तर पर सरयू नदी के दक्षिण में स्थित है। यह गाँव लखनौर (मधुबन) के मल्लों के जमींदारी का गाँव रहा है। (ता उन्मूलन जमीन्दारी)

मझौली के विसेन राजाओं के राज्याभिषेक के लिये, अब तक क्कराडीह की मिट्टी मंगाई जाती रही है और धार्मिक रस्म पूरी की जाती है।

'शंकर दिग्विजय' के अनुसार स्पष्ट जाना जाता है कि मयूर भट्ट के समय में शंकराचार्य हुए थे। शंकराचार्य को 1000 (एक हजार) वर्ष से कम न हुए। इसी से मयूर भट्ट के समय का अनुमान किया जा सकता है।

मयूर भट्ट ने साम वेद में अधिक परिश्रम किया था। एक बार इन्होंने अयोध्या की यात्रा की थी। उस समय वहाँ श्री रामचन्द्र जी के वंशज राज करते थे। राजा ने इनकी विद्या और तपस्या देखकर प्रसन्नता पूर्वक अपनी कन्या सूर्य प्रभा को, जिसका प्रण था कि किसी योग्य वर से ब्याही जाऊँ, इनके संग ब्याह दिया। फिर राजा के गुरु ने जो वशिष्ठ कुल के ब्राह्मण थे, अपनी कन्या नागसेनी को इन्ही के साथ ब्याह दिया। कुछ दिनों के पीछे मयूर भट्ट ने गाधि कुल के चन्द्रवंशी राजा की कन्या हय कुमारी से तीसरा विवाह किया।

प्रथम स्त्री सूर्यप्रभा से विश्वसेन उत्पन्न हुए जो विसेन वंश के प्रथम पुरुष थे। दूसरी स्त्री नागसेनी से नागेश या नागेश्वर मिश्र हुए जो पयासी मिश्रों के प्रथम पुरुष थे। तीसरी स्त्री हय कुमारी से बज्रशाही व बधम्बरशाही हुए जो भगोछिया भूमिहारों के प्रथम पुरुष थे। पृष्ठ 51 मयूर भट्ट वंशीय विश्वसेन क्षत्रिय, मिश्र, भगौछिया भूमिहारों के सनातन धर्म :-

	विषय	उनका ब्यौरा	कुल संक्षिप्त बृतान्त
1.	गोत्र	वत्स्य गोत्र	यह प्रसिद्ध है इसी कुल मे वत्स्य मुनि हुए
2.	परवर	पंचपरवर	अन्नवान, च्वन, भार्गव, और्व्य, जमदग्नि

'जाति भाष्कर' के लेखक पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने विसेन वंश की उत्पति के सम्बन्ध में यह मत प्रकट किया है :- श्री मिश्रजी के उक्त पुस्तक के पृष्ठ संख्या 205 के देखने से ज्ञात होता है कि राजा रतनसेन अपने पाँच स्त्रियों और लड़कों को लेकर परशुराम जी के भय से महाराष्ट्र देश में दधीचि ऋषि के आश्रम पर गये थे। राजा रतनसेन जब वहाँ शिकार खेलने गये थे तो परशुराम जी से संयोगवश भेंट हो गयी। परशुराम जी ने उन्हे वध कर डाला। उनकी पाँचों स्त्रियाँ पति के मृतक शरीर के साथ सती हो गयीं और लड़कों को सती होने के पहले ही दधीचि ऋषि को सुपुर्द कर गयी थीं। कुछ दिनों के बाद श्री परशुरामजी दधीचि ऋषि के आश्रम पर पहुँचे और उन बालकों को क्षत्रिय बालक समझकर, उन्हें मारने का उद्योग किये, किन्तु दधीचि मुनि ने उनके प्राण बचाने के लिए, उन निर्योध बच्चों को ब्राह्मण की सन्तान बतलाया, तिस पर भी परशुराम जी को उनके ब्राह्मण होने पर विश्वास न हुआ और दधीचि ऋषि से कहा कि यदि आप इन लड़कों के साथ एक पात्र में भोजन करें तब मुझे विश्वास होगा कि ये बालक ब्राह्मण हैं। ऋषि जी ने ऐसा ही किया। दधिचि ऋषि ने प्राण रक्षा हेतु ज्येष्ठ पुत्र को जयशर्मा नाम से सम्बोधित किया था। परशुरामजी उसे अपने साथ ले गये और उसे स्वयं अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दिया, किन्तु कुछ दिनों के बाद किसी कारण से जयशर्मा के क्षत्रिय बंशोद्भव होने का उन्हे पता चल गया। किसी अन्य पुस्तक में इसका कारण यह लिखा है:

एक बार परशुराम जी सैन्य करने गये। उन्होंने जयशर्मा को आज्ञा दिया कि उनकी निद्रा में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आना चाहिए। वे गहरी निद्रा में सो गये। दुर्भाग्य तो देखिये। एक बड़े चूँटा ने जयशर्मा के जांघ में जख्म कर दिया, जिससे उसकी जांघ से

थोड़ा रक्त निकल पड़ा और वह रक्त बहकर सैन्य निद्रा में परशुराम जी के कान में पड़ गया। वे तुरन्त जग गये और क्रोधित होकर जयशर्मा को डाँटे कि तू ब्राह्मण पुत्र हो ही नहीं सकता क्योंकि तुम्हारा रक्त गर्म है। ब्राह्मण का रक्त इतना गर्म हो ही नहीं सकता। जयशर्मा ने डर कर अपना अपराध स्वीकार कर लिया। परशुराम जी उसे वध करने जा रहे थे कि उनकी समझ में आया कि अपने शिष्य को वध करना पाप है, अतएव उन्होंने क्रोध को शान्त किया। जयशर्मा को वध करने से परहेज किये, परन्तु उन्होंने श्राप दिया कि उनका (जयशर्मा) अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान विस्मृत हो जाये और वह ब्रह्म क्षत्रिय नाम से संसार में विचरण करें।

इसके बाद जयशर्मा दधीचि ऋषि के आश्रम में लौट आये, और पूरी घटना को ऋषि जी से बतलाया। दधीचि ऋषि ने उन्हें ढ़ाढ़स देते हुए कहा कि वे राज्य करें। इन्हीं जयसेन के वंश में श्रवण सेन राजा हुए जिनका विवाह सोमप्रभा नामक लड़की से, जो सूर्य वंश के राजा की पुत्री थी, से हुआ। इस विवाह सम्बन्ध से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम विश्वसेन रखा गया। सम्भवतः इसी विश्वसेन का बसाया और बनवाया हुआ विसेन नामक स्थान व किला है, जो आजकल वसीन नाम से प्रसिद्ध है। इसी विश्वसेन के वंश मे ध्रुवसेन और द्रोण सेन राजा पैदा हुए। ध्रुवसेन का विवाह महाराजा हर्षवर्द्धन की पौत्री से हुआ था। महाराजा हर्षवर्द्धन का जिक्र रायबहादुर महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा की हिन्दी अनुवाद टाड राजस्थान के पृष्ठ संख्या 485 से 488 तक में दिया गया है। महाराजा हर्षवर्द्धन पंडितो का बड़ा आदर करता था। प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट उसके दरबार के कवि थे। उन्होंने हर्ष चरित्र और कादम्बरी पुस्तकों की रचना किया। दण्डी काल्पदरी व

दशकुमार चरित्र आदि का कर्ता, मयूर भट्ट, सूर सतक का रचयिता और दिवाकर इत्यादि इसी हर्षवर्द्धन के दरबारी पंडित थे। हर्षवर्द्धन 606ई० में गद्दी पर बैठा।

ककराडीह (मधुबन, जनपद-मऊ) के ताम्र पत्र से जो लखनऊ के अजायबघर में तवारीखी याददास्त के लिए सुरक्षित रखी गयी है, से मालूम होता है कि ककराडीह वगैरह का क्षेत्र इसी हर्षवर्द्धन के राज्य के अन्तर्गत था। ताम्र पत्र ककराडीह के निकट में ही जमीन के अन्दर से ही निकला था। इस ताम्र पत्र का आवश्यक अंश नीचे दिया जा रहा है -

परम माहेश्वरी महेश्वर इव सर्व सत्यानुकम्पी ....

परम भट्टारक महाराजाधिराज श्री हर्ष :- श्री वस्ती मुक्तो कुण्डधानी वषौयिक सोम मुण्डिका ग्रामें.........अग्रहार त्वेन प्रतिपारित.........सम्वत 205 मार्ग शीर्ष वदी 6

ओ३म् स्वस्तिक प्रित्विका के जय स्कान्धावार से जिसमें नाव, हाथी, घोड़े आदि सम्मिलित थे परम माहेश्वर, शिव के समान सभी जीव धारियों पर दया करने वाले परम भट्टारक महाराज श्री हर्ष ने श्रीवस्ती मुक्ति के कुण्डधान विषय में सोम मुण्डिका ग्राम में अग्रहार ब्राह्मणों को ग्रामदान सम्पादन किया। सम्बत् 205 मार्ग शीर्षवदि-6

जय स्कन्धावार	:	सैनिक पड़ाव।
परममाहेश्वर	:	शिव के परम भक्त।
मुक्ति	:	प्रान्त
कुण्डधान विषय	:	जिला-आजमगढ़

इस लेख से मालूम होता है कि आजमगढ़ जिले का उस समय नाम कुण्डधान था और वर्तमान उत्तर प्रदेश का सारा पूर्वी भाग श्रीवस्ती (कोशल) मुक्ति में सम्मिलित था और उसके ऊपर सीधे हर्षवर्द्धन का राज्य था। कोई स्थानीय राजा स्वतन्त्र राज्य नहीं करता था। गोरखपुर जनपद भी श्रीवस्ती मुक्ति में शामिल था। इस ताम्र पत्र के सम्बन्ध में शज़रे शादाब के लेखक अब्दुल गफूर फारूकी महोदय वर्णन करते हैं। उन्ही के शब्दों में उनका वर्णन नीचे की पंक्तियों मे दिया जा रहा है।

"मल्ल लोग अपने तई मयूर भट्ट एक बड़े मशहूर आलिमें वेद की औलाद से जाहिर करते हैं। अभी चन्द साल का अर्सा गुजरा होगा कि मौजा खीरी कोठा इलाके जमीनदारी मल्लान में एक तख्ता मुसम्मी जमीन से बरामद हुआ और अब बतौर यादगारे तारीखी आजायब खाना शहर लखनऊ में मौजूद है। कुतवा से मालूम होता है, कि वह एक दान पत्र है जिसके जरिये से बमुकामें सोम कुण्ड थानेश्वर राजा नरेश बर्मन पिसर ठाकुर बर्मन फरयारवायें कश्मीर ता नेपाल ने, बाण भट्ट को, जो ऋगुवेद के माहिर थे, कुछ जायदाद नजर की थी।

बाबू विष्णुदयाल मल्ल साकिन लखनौर वाइम्तीयाज और लायके इत्माद आदमी हैं। उनके बयान से मालूम हुआ कि मिस्टर पालवेली ने जो आजमगढ़ के कलक्टर थे, पत्थर मजकूर को कलकत्ता भेजकर पढ़वाया और उसका यह खुलासा हुआ, जो ऊपर तहरीर किया गया है।

यह बाण भट्ट, मयूर भट्ट की औलाद से थे और इस पत्थर का

मुकामे हुकुमत मल्लान से मिलना करीन इस उम्र का है कि मयूर भट्ट की औलाद जो मुख्तलिफ वतन से पैदा हुई अर्से तक परगना नत्थूपुर में सकूनत मजीर थी और जैसा कि लोग कहते हैं अजब नही है कि खुद मयूर भट्ट की सकूनत किसी वक्त में वहीं रही हो। वताइद इस ख्याल के एक यह वाक्या भी लायके जिक्र है कि जब राजगाने मझौली को, जिनका सिलसिला आइन्दा बयान किया जायेगा, जब राजगद्दी का तिलक दिया जाता है तो उसके मरासिम के अदायगी के लिए मिट्टी मौजा-ककराडीह ताल्लुका मल्लान की कोट से मँगाई जाती है। यह कार्यवाही जाहिर करती है कि राजघराने मझौली के मौरिसों का पुराना स्थान उसी मौजे में था और बवजह उसी तायलुक्क के अबतक ककराडीह की मिट्टी ऐसे बड़ी रस्म के लिए मुतबरक समझी जाती है।''

ककराडीह ग्राम सदा से ग्राम लखनौर (मधुबन) के मल्लों की जमींदारी का ग्राम रहा है, जाहिर करता है कि मधुबन के मल्ल मझौली राजवंश के पट्टीदार हैं। माधव मल्ल (मधुबन) राजा प्रसाद मल्ल (मझौली) के छोटे सहोदर भाई थे।

महाराजा हर्षवर्द्धन का एक पुत्र था जो लावल्द मर गया था। मालूम होता है मयूर भट्ट ने जो हर्षवर्द्धन का दरबारी था और विसेन के निकट नासिक का रहने वाला था, अपने देश के राजा ध्रुवसेन का विवाह हर्षवर्द्धन की पौत्री से करवा दिया था जिसके कारण यह वंश मयूर भट्ट का कृतज्ञ था। हर्षवर्द्धन के लावल्द होने के कारण उसके राज्य का कुछ भाग ध्रुवसेन को अपने नाना हर्षवर्द्धन से मिल गया होगा। इस ककराडीह में बहुत दिनों तक विशवसेन वंशी राजाओं का

राज्य रहा। अतः भिनगा नरेश का यह उल्लेख कि मझौली राज्य नाना से प्राप्त हुआ है, सही मालूम पड़ता है। यह नर श्रेष्ठ मयूर भट्ट को मझौली राजवंश का आदि पुरूष नही मानते हैं।

विसेन वंश वाटिका के लेखक ने विसेन क्षत्रियों को ब्रह्म कहे जाने का कारण यह बतलाया कि इस वंश के आदि पुरूष मयूर भट्ट थे जो ब्रह्म ऋषि थे। इस अवतरण में कोई इतिहासिक प्रमाण नहीं है। यह अवतरण केवल जन श्रुति तथा सुनी-सुनाई किम्वदन्तियों पर आधारित है, जिसे लेखक महोदय स्वयं स्वीकार करते हैं जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं कि "हमने जो सुना लिख दिया ईश्वर जाने क्या सच है?"

जिस मयूर भट्ट को इतिहास जानता है, वह मयूर भट्ट कान्य कुन्ज (कन्नौज) के राजा हर्षवर्द्धन के सभा कवि थे, जिनका समय सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है। हर्षवर्द्धन 606ई० में गद्दी पर बैठा।

शिवनाथ भाष्कर ने अपनी पुस्तक क्षत्रिय वंश भाष्कर पृष्ठ संख्या 54-55 में विसेन वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा हैः कर्नाटक प्रदेश के सूर्यवंशी राजा मयूर भट्ट ने कांची के पल्लवों को हराकर वहाँ अपना राज्य स्थापित किया था। उसके बाद उसके वंशज सैकडों वर्षो तक राज्य करते रहे। मयूर भट्ट का पाँचवा वंशधर कुकुत्स्थ वर्मा था जिसका शासनकाल वहाँ सन 359 में प्रमाणित होता है इसके बाद वहाँ का राजा मयूर भट्ट द्वितीय हुआ जो हर्षवर्द्धन का समकालीन था। मयूर भट्ट का पुत्र विश्वसेन था, जिसके वंशज विसेन या विश्वसेन कहलाते हैं।

इनकी रियासतें और ठिकाने सलेमपुर जिला गोरखपुर अब देवरिया, मझौली जिला गोरखपुर अब देवरिया,

भिनगा जिला बहराईच, मनकापुर जिला-गोण्डा, मरोटिया जिला-बस्ती, कालाकांकर जिला-प्रतापगढ़, भदरी जिला-प्रतापगढ़, डुमरिया, जिला-मोतीहारी, महरौड़ा जिला-छपरा हैं। इसके अतिरिक्त इस वंश के क्षत्रिय इलाहाबाद, गोरखपुर, गोण्डा, फैजाबाद, प्रतापगढ़, बांदा, जौनपुर, बनारस, गाजीपुर, आजमगढ़, मऊ, आदि जिलों में बसे हैं।

"इतिहास लौटा" नामक इतिहास के लेखक श्री जगदीश नारायण सिंह अपनी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 91 में विसेन वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखते हैं -

मल्ल वंश - यह वंश सूर्यवंश की शाखा है। ये लक्ष्मण के पुत्र चन्द्र केतु के वंशज हैं, जिन्हें मल्ल की उपाधि मिली थी। इनका विवरण बौद्ध ग्रन्थों में मिलता है। चन्द्रकेतु की राजधानी चन्द्रकान्ता थी। इनका गोत्र पाराशर, कहीं भारद्वाज, कहीं शांण्डिल्य, कहीं अत्रि तो कहीं वत्स है। प्रवर पाँच, वेद सामवेद, शाखा कौथुमी, सूत्र गोभिल गृहयसूत्र, देवी दुर्गा हैं।

विश्वेन वंश - यह सूर्यवंश के लक्ष्मण-पुत्र चन्द्रकेतु के वंश की शाखा है। इस वंश की एक शाखा ने चन्द्रचक्र से जाकर कर्नाटक में अपना राज्य स्थापित किया है। इस वंश में मयूर वर्मन नाम का राजा हुआ, जिसने कांची के पल्लवों को हराकर अपना अधिकार किया। इस वंश की पाँचवीं पीढ़ी के काकुस्थ वर्मन के वंशज 359 ई० में पुनः मल्ल राष्ट्र आये। यह मल्ल राष्ट्र कारूपथ अर्थात बस्ती के पूर्व और गोरखपुर जिले के पश्चिम में था। चूंकि ये मयूरवर्मन के वंशज थे, अतः मयूरवंशी कहलाये। मयूर के वंश में एक राजा विश्वसेन था।

उनके नाम पर विशेन वंश की स्थापना हुई। मल्ल, विशेन एक शाही वंशज है। विशेन क्षत्रियों का गोत्र पाराशर, प्रवर-पाँच पराशर, भारद्वाज, शाण्डिल्य, अत्रि एवं वत्स है। वेद सामवेद, शाखा कौथुमी सूत्र गोभिन गृहवसूत्र, कुल देवी दुर्गा हैं। विशेन क्षत्रिय मुख्यतः उत्तरप्रदेश के मझौली राज्य गोरखपुर, सलेमपुर (देवरिया), भिनगा (बहराइच), मनकापुर (गोण्डा), भरौतिया (बस्ती), कालाकांकर (प्रतापगढ़), वाराणसी, बाँदा, जौनपुर, गाजीपुर तथा आजमगढ़, मऊ आदि स्थानों में पाये जाते हैं। इस वंश की कई शाखाएँ भी हैं।

वटमेला वंश - यह वंश सूर्यवंश के विशेनों की शाखा है। गोत्र शाण्डिल्य, प्रवर तीन शाण्डिल्य, असित एवं देवल, वेद-सामवेद, शाखा कौथुमी सूत्र गोभिल गृहय-सूत्र, कुल देवी दुर्गा हैं। इस प्रकार के क्षत्रिय मुख्यतः उत्तरप्रदेश के हरदोई, फरूखाबाद तथा बिहार प्रदेश के रोहतास एवं कैमूर जिलों में पाये जाते हैं।

गाई वंश - यह सूर्यवंश की विशेनों की शाखा है। गोत्र, शाखा, सूत्र सब विशेनों की तरह है। इस वंश के क्षत्रिय बिहार प्रदेश के छपरा, रोहतास, भोजपुर आदि स्थानों पर पाये जाते हैं।

दागी या डांगी वंश - यह सूर्यवंशी मल्लों की शाखा है। गोत्र, शाखा, सूत्र सभी विशेनों की तरह हैं और ये बिहार प्रदेश के गया जिले में पाये जाते हैं।

बम्बवाट वंश - यह सूर्यवंश की विशेनों की शाखा है। गोत्र भारद्वाज वार्हस्पत्य आंगिरस, वेद-यजुर्वेद, शाखा वाजसनेयी, सूत्र पारष्कर गृह्यसूत्र देवी दुर्गा है। इस प्रकार के क्षत्रिय मुख्यतः बिहार प्रदेश के

गया, कैमूर, रोहतास, भोजपुर जिलों में बहुतायत से पाए जाते हैं।

अवकहो वंश - यह सूर्यवंशी विशेनों की ही शाखा है, जिसके गोत्रादि विशेनों की तरह है। ये बिहार प्रदेश के पटना आदि जिलों में पाये जाते हैं।

तवकहों वंश - यह सूर्यवंशी विशेनों की शाखा है, गोत्रादि विशेनों की तरह है।ये बिहार प्रदेश के पटना तथा वैद्यनाथ के आस-पास पाये जाते हैं।

दोनवार वंश - यह सूर्यवंशी विशेनों की शाखा है। गोत्र कश्यप, प्रवर तीन कश्यप, अवत्सार, नैध्रुवि, वेद-यजुर्वेद, शाखा वाजसनेयी, सूत्र पारष्कर गृह्यसूत्र देवी दुर्गा हैं।उत्तर प्रदेश में गाजीपुर, आजमगढ़, मऊ, गोरखपुर, बलिया, तथा बिहार प्रदेश में कैमूर तथा रोहतास भोजपुर जिलों में ये पाये जाते हैं।द्रोण ऋषि के नाम से द्रोणवार या दोनवार प्रसिद्ध हुए।



मल्ल राष्ट्र की स्थापना

मल्ल लोग प्राचीन सूर्यवंशी क्षत्रियों के वंशज हैं। इनकी उत्पत्ति बाल्मीकी रामायण के अनुसार लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु से है। चन्द्रकेतु की उपाधि मल्ल थी। इसलिए उनके वंशज मल्ल कहे जाते हैं (चन्द्रकेतुश्वमल्लस्य) मत्स्य भेद में प्रवीण होने के कारण चन्द्रकेतु को यह उपाधि मिली थी। लक्ष्मण सूर्यवंशी क्षत्रिय थे। इसलिये उनके वंशज भी सूर्य वंशीय क्षत्रिय हुए। इतिहासिक पुराणों के अनुसार इस देश के मूल राजा मनु थे। मनु वेवस्वन थे जो विविस्वान अर्थात् सूर्य से उत्पन्न हुए थे। सूर्य से उत्पन्न का अर्थ है सूर्य के उपासक थे, समझना चाहिए। राजा मनु के पहले कोई मानव समाज नहीं था। केवल मानव समूह था। मानव के जीवन और पशुओं के जीवन स्तर में विशेष अन्तर नहीं था। जंगली राज था। जिस प्रकार शक्तिशाली पशु किसी कमजोर पशु को मार कर खा जाते थे उसी प्रकार उस समय का मानव अपने से कमजोरों को सताया करता और कष्ट देता था। उस समय हर जगह केवल अराजकता और अव्यवस्था थी। इस नारकीय जीवन से तंग आकर लोग एकत्र होकर मनु के पास गये और उनसे प्रार्थना किये कि वे समाज को व्यवस्थित रूप देने के लिए नियम व कानून बनायें, जिसके पारिश्रमिक में उन्हें अपनी पैदावार का छठा भाग देंगें। मनु ने उनके आग्रह को स्वीकार किया और शान्ति तथा सुव्यवस्था हेतु नियम और शासन विधान बनाये। नीति और धर्म की भावना का उसी समय उदय हुआ। मनु को प्रथम कानून निर्माता कहते हैं। मनु के बाद उनके वंश और उनकी शासन

व्यवस्था देश के विभिन्न भागों में फैली । पौराणिक जनश्रुति के अनुसार मनु के नौ पुत्र थे जिनमे से सबसे जेष्ठ ईच्छाकु थे। इनके पुत्रों ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में अपने राज्य स्थापित किये। ईच्छाकु को कौशल राज्य मिला। इन्होंने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया।

ईक्ष्चाकु के छब्बीसवीं पीढ़ी में राजा दशरथ हुए। उनकी तीन रानियां थीं। कौशिल्या, सुमित्रा और कैकेयी। कौशिल्या से रामचन्द्र जी, सुमित्रा से लक्ष्मण जी व शत्रुध्न जी और कैकेयी से भरत जी पैदा हुए। राम दशरथ के उत्तराधिकारी हुए परन्तु उनकी विमाता कैकेयी के षड़यन्त्र से उन्हें चौदह वर्ष का वनवास करना पड़ा। उन्होंने राक्षसों का दमन किया। उनके समय में सुख शान्ति और समृद्धि थी। उनका राज्य आदर्श था। राजा रामचन्द्र जी को हिन्दू लोग विष्णु का अवतार मानते हैं। वनवास से लौटने पर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। इस यज्ञ के बाद अपने साम्राज्य को अपने भतीजों और पुत्रों में बांट दिया। फलतः भरत के पुत्रों को सिद्ध नदी के दोनो तटों पर स्थित गांधार देश मिला। भरत के ज्येष्ठ पुत्र तक्ष ने तक्षशिला और कनिष्ठ पुत्र पुष्कल ने पुष्कलावली नाम की राजधानी बनायी। शत्रुध्न के दो पुत्र थे सुवाहु और सूरसेन। उन्हें जमुना के पशिचमी भाग सात्यतों का राज्य मिला। उन्होंने मथुरा अपनी राजधानी बनायी। लक्ष्मण के दो पुत्र थे अंगद और चन्द्रकेतु। रामचन्द्र जी ने अंगद को कारूपथ और चन्द्रकेतु को कारूपथ का पूर्वी भाग दिया । चन्द्रकेतु ने चन्द्रकान्ता को अपनी राजधानी बनाया। आधुनिक बस्ती जिले का पूर्वी भाग और गोरखपुर का पश्चिमी भाग कारूपथ देश कहलाता

है। कारूपथ के पूर्वी भाग को चन्द्रकान्ता कहते थे। बाल्मीकी रामायण में चन्द्रकान्ता को मल्ल भूमि कहा गया है। मल्ल राष्ट्र या मल्ल भूमि का वर्णन बौद्ध ग्रन्थों में धरा पड़ा है।

राम चन्द्र जी ने कुश को कुशावती और लव को शरावती का राज्य दिया। कुशावती आधुनिक कुशीनगर अथवा कसया, कारूपथ के पूर्वी छोर पर किन्तु कौशल राज्य के अन्तर्गत थी। कौशल राज्य की पूर्वी सीमा बड़ी गण्डक नदी थी। शरावती कुशीनगर के ठीक पूर्व और उससे बहुत दूर स्थित नहीं रही होगी। इस स्थान का ठीक-ठीक पता अभी नहीं लग पाया है। कुश को कुशावती बहुत प्रिय थी। राजा रामचन्द्र जी के देहावसान के बाद कुश का राज्याभिषेक हुआ। कुशावती इतनी प्रिय थी कि कुछ दिनों तक कुशावती को ही अपनी राजधानी बनाकर कौशल राज्य पर शासन करते रहे। बाद में अयोध्यावासियों के आग्रह पर वे अयोध्या चले गये। लव भी शरावती छोड़कर अयोध्या चले गये और श्रीवस्ती को अपनी राजधानी बनाया। कुश और लव के अयोध्या लौट जाने का परिणाम यह हुआ कि कौशल राज्य का प्रायः कुल पूर्वी भाग लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु को मिल गया। उन्होंने चन्द्रकान्ता को छोड़कर कुशावती को अपनी राजधानी बनाया। तभी से कुशावती (कुशीनगर) मल्ल राष्ट्र की राजधानी रही जो बौद्ध काल तक चली।

बौद्ध साहित्य का पांचवा मल्ल गणराज्य :

मल्ल गणराज्य दो भागों में विभक्त था। कुशीनगर का मल्ल राज्य तथा पावा का मल्ल राज्य। एक की राजधानी कुशीनारा तथा दूसरे की पावा थी। बौद्ध साहित्यों में इनकी गणना महाजनपदों में

की गयी है। लिच्छवियों के साथ इन्होंने एक लीक बनायी थी। ईसा पूर्व 500 के मल्ल राज्य पर मगध का अधिकार हो गया।

मल्ल गणराज्य का उल्लेख यूनानी लेखकों ने मल्लोई के नाम से किया है। कौटिल्य ने इसकी गणना राज्यशब्दोपंजीवी संघ के अन्तर्गत की है। यह राज्य अत्यन्त विस्तृत था जो गोरखपुर पावा से पटना तक फैला हुआ था। कनिंधम के अनुसार पावा, देवरिया जनपद का आधुनिक नाम पडरौना है। पर दूसरे विचारकों ने वही बताया है जहाँ आज फाजिलपुर है। इन दोनों बातों में पडरौना देवरिया की बात ठीक प्रतीत होती है क्योंकि उसी के पड़ोस में आज भी एक मल्लान नामक गांव है जो सम्भवतः पहले मल्लों की बस्ती रही होगी। वहाँ महाबीर स्वामी की मृत्यु हुई थी। डाक्टर मुकर्जी के अनुसार मल्लान की एक शाखा मऊ जनपद के मल्लान गाँवों की है।



प्राचीन एवं अधुनिक मल्लों के सम्बन्ध तथा वैदिक एवं बौद्धिक क्षत्रियों की परिकल्पना

अब तक मल्लों की उत्पत्ति तथा वंश का जिक्र किया गया है। अब हमें यह देखना है कि इन प्राचीन व प्रसिद्ध मल्लों, जो सूर्यवंशी थे, आधुनिक मल्लों से जो विसेन क्षत्रिय हैं तथा गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, मऊ, प्रतापगढ़, गोंडा, फतेहपुर, बहराईच आदि जनपदों में निवास करते हैं, का क्या सम्बंध है?

प्रसिद्ध इतिहास कारों के मत :

इतिहास और पुरातत्व के प्रकाण्ड विद्वान स्वर्गीय डा० काशी प्रसाद जायसवाल ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिन्दु राजतंत्र' में मल्लों के वंशजों के ऊपर प्रकाश डाला है। वे लिखते हैं :

"They (Malls) disappeared in the time of the Mauryas or a little later as a republican community though individual Mall families rose up now and then in tirut and Nepal upto the eleventh centuries and even later The modern representatives of the Malls are the Mall caste in the districts of Gorakhpur and Azamgarh."

''मौर्यों के समय में या उसके बाद मल्ल गण जाति के रूप में गायब हो गये। यद्यपि 11वीं शताब्दी और उसके बाद तक तिरहुत और नेपाल में व्यक्तिगत मल्ल परिवारों का उदय होता रहा है। मल्लों के वर्तमान प्रतिनिधि गोरखपुर और आजमगढ़ के मल्ल जाति वाले हैं।''

पंडित हरिनन्दन पाण्डेय, सुपरिटेन्डेन्ट, आर्केलाजिकल

डिपार्टमेन्ट आफ इण्डिया, पावा के मल्लों के सम्बन्ध में लिखते हैं:
"Pava was very close to Kushinagar........... . It is interesting to note in this connection that a section of the people inhabiting these parts still style themselves as Malls. They are the Sainthawars in the scale of Hindu society. Depending upon financial resources and local influences of the families, some of whom at least are given a place next below the Kshattriyas.......... The Sainthawars occupy about one hundred villages in the Padrauna Tahsil and are generally of fair complexion and are believed to have descended from Aryan ancestors. It is supposed these Sainthawars come from Paragana Lakhnaur in the Azamgarh district where a large number of their kin still reside and style themselves as Malls. But the rulers of Majhaoli to whose court they are said to have migrated as adventurous soldiers from near Allahabad during the reign of Humayun is believed to have come from the same ancestors and their descendants, though they are recognised to be Rajputs, have been styled as Malls which title they retain even now along with the better class of Sainthawars. Sainthawars claim to be Kshattriyas. From the above it is clear that the surmise I made when I first addressed by enquiries regarding Malls of Pava has proved to be substantially correct. Their ancestors were soldiers. They claim origin from the recognised Kshattriyas. These are all indicative of a close affinity between the present day Malls and the Malls of the ancient frame."

"पावा कुशीनगर के बहुत निकट थी।.......

इस सम्बन्धमें यह नोट करना मनोरंजक है कि इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों का एक वर्ग अपने को मल्ल कहता है। हिन्दू समाज

में इन्हें सैथवार कहा जाता है और उनका स्थान उनके आर्थिक समृद्धि तथा उनके स्थानीय प्रभाव पर अवलम्बित है। उनमे से अधिकांश को क्षत्रियों के निकट स्थान समाज में मिला है। पडरौना तहसील में सैथवारों के कब्जे में लगभग 100 गाँव है। उनका रंग साफ और वे आर्य पूर्वजों से उत्पन्न समझे जाते हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि ये सैथवार आजमगढ़ जिले के परगना लखनौर से आये और जहाँ पर बहुसंख्यक भाई अब भी निवास करते हैं और मल्ल उपाधि धारण किये हुए हैं। किन्तु मझौली के शासक जिनके दरबार में ये सैथवार सैनिक रूप में हुमायूँ के शासन काल में इलाहाबाद के निकट से आये हुए बताये जाते हें, स्वयं उन्हीं पूर्वजों से उत्पन्न हुए समझे जाते हैं और उनके वंशज जो राजपूत माने जाते हैं मल्ल उपाधि धारण किये हुए हैं और इस उपाधि को उच्च वर्ग के सैथवारों के साथ अब भी कायम रखे हैं। सैथवार क्षत्रिय होने का दावा करते हैं।

ऊपर की बातो से स्पष्ट है कि पावा के मल्लों के सम्बन्ध में अन्वेषण करते समय जो अनुमान मैने किया था वस्तुतः सत्य निकला। इनके पूर्वज सैनिक थे। वे अपनी पदवी मल्ल मानते हैं। क्षत्रियों से उत्पत्ति का दावा करते हैं। यह बातें आधुनिक मल्लों और प्राचीन प्रसिद्ध मल्लों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध के द्योतक हैं।"

बौद्ध साहित्य तथा पुरातत्व के प्रसिद्ध विद्वान राहुल सांकृत्यायन ने अपनी पुस्तक 'बुद्धचर्या' में कुशीनारा (कुशीनगर) के मल्लों के प्रतिनिधि आज कल की सैथवार जाति को बताया है। दूसरे स्थान पर भी इसकी पुष्टि की गयी है। उपर्युक्त तीनो विद्वानों ने

केवल मल्ल जाति तथा उसके वंशजो पर प्रकाश डाला है किन्तु मल्लों के अतिरिक्त उनकी सजातीय और समकालीन इतिहास प्रसिद्ध अन्य गणजातियां भी थीं जैसे शाक्य, कोलीय तथा मौर्य। इन जातियों में आपस में विवाह आदि सम्बन्ध भी थे। अतएव इनके बारे में भी वर्णन करना आवश्यक है।

बौद्धग्रन्थ 'दिव्यदान' के अनुसार इच्छाकु से नौ क्षत्रिय कुल उत्पन्न हुए। 1. मल्ल 2. जनक 3. विदेह 4. कोलीय 5. मौर्य 6. लिच्छवी 7. ज्ञात्रि 8. बज्जि 9. शाक्य

"गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास" के लेखक डाक्टर राजबली पाण्डेय ने पिप्लीवन के मौर्यों का वर्णन पृष्ठ 71 मे निम्न शब्दो में किया है :-

वंश परिचय :- जब तक बौद्ध साहित्य का पूरा अध्ययन नहीं हुआ था केवल पाटलिपुत्र के साम्राज्यवादी मौर्य का पता था तब तक मौर्यों के उत्पत्ति के सम्बन्ध में विचित्र कल्पनायें की गयी थीं। विष्णु पुराण में नन्दों के उन्मूलन और मौर्य के आगमन का वर्णन निम्न प्रकार दिया गया है :

"ततश्च चेतान्नन्दान कौटिल्यों ब्राह्मणः
समृद्ध रिष्यति तेषामभा वे मौर्या।
पृथ्वी भोग्यन्ति कौटिल्य एवं
चन्द्र गुप्त उत्पन्न राज्येभिषेंक्ष्यति।"

इसके पश्चात ब्राह्मण कौटिल्य इन नौ नन्दों का उन्मूलन करेगा। उनके अभाव में मौर्य पृथ्वी का भोग करेगें। कौटिल्य चन्द्रगुप्त को राज्य के लिए अभिषिक्त करेगा। 'विष्णु पुराण' पर टीका करते

हुए श्रीधर स्वामी ने 'उत्पन्न' की व्याख्यायें की है। नन्द व भार्या, मुरासंज्ञायां सजातम अर्थात नन्द की मुरा नामक भार्या से उत्पन्न। श्रीधर स्वामी को मौर्य का प्राचीन इतिहास मालूम नहीं था इसलिए मौर्य शब्द की उत्पत्ति बतलाने के लिए उन्होंने मुरा की कल्पना कर ली। इनसे बढ़कर ढुढिराजशास्त्री ने 'मुद्राराक्षस' की टीका करते समय अपनी भूमिका में कल्पना के बल पर मुरा की पूरी कथा लिख दी और उसको नाइनी कन्या शुद्रा बतलाया। फिर क्या था? यह बात प्रचलित हो गयी कि मौर्य मुरा नामक नाइन से उत्पन्न शुद्र थे किन्तु मौर्य की उत्पत्ति ढूंढ निकालने की धुन में न तो उपर्युक्त विद्वानों को और न उनके अनुयाईयों को यह बात ध्यान में आयी कि संस्कृत व्याकरण के अनुसार मूरा का उत्पत्व मौरेय होगा, मौर्य नहीं। मौर्य के शुद्र होने का दूसरा प्रमाण दिया जाता है- वह है 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक का बृषल शब्द। चाणक्य चन्द्रगुप्त को इसी शब्द से सम्बोधित करता है किन्तु सोचने की बात है कि मंत्री चाहे कितना भी प्रतिभाशाली अथवा शक्तिशाली हो, राजा को शुद्र शब्द से सम्बोधित नहीं कर सकता है। वास्तव में बृषल शब्द यूनानी वेसिलियस राजा का संस्कृत रूपान्तर था, जिसका प्रयोग केवल चन्द्रगुप्त के लिए होता था। यूनानी राजा सेल्यूकस से सम्बन्ध हो जाने के बाद उसको यह उपाधि मिली थी। संस्कृत व्याकरण से भी इस मत की पुष्टि होती है। *बृषलो गुन्जने शुद्रे चन्द्रगुप्ते च राजनि* अर्थात बृषल शब्द का प्रयोग गुन्जन (लहसुन), शुद्र और चन्द्रगुप्त राजा के लिए होता है। आज कल कोई भी विद्वान मुरा कल्पित नाइन से मौर्यों की उत्पत्ति मानने को तैयार नही है। बौद्ध साहित्य में

मौर्य को स्वतन्त्र गणतांत्रिक जाति बतलाया गया है और उनके क्षत्रिय होने के उल्लेख हैं। बौद्ध ग्रन्थ 'महावंश' में मौर्य की चर्चा निम्नलिखित प्रकार से की गयी है।

मोरिया नं खत्रिया नं वंसे जातं सिरीधरा
चन्द्रगुत्ते त्रियजुंत चाणको ब्राह्मणे तातों।

मौर्य क्षत्रिय के वंश में उत्पन्न चन्द्रगुप्त को चाणक्य ब्राह्मण प्रचण्ड क्रोध से नवे घननन्द का विनाश कर समस्त जम्बूदीप के राजा पद पर बैठाया। दूसरे बौद्ध ग्रन्थ 'दिव्यदान' में चन्द्रगुप्त का सुपुत्र विन्दुसार अपने को मुर्द्धाभिषक्त क्षत्रिय कहता है।

तवं नायनि अहम राजा क्षत्रियांमुर्द्धाभिषक्ता
कथं था साधि समागमो भविष्यति ॥

तुम नाई की लड़की और मै मुर्द्धाभिषक्त क्षत्रिय हूँ। मेरे साथ तुम्हारा समागम कैसे होगा? इस ग्रन्थ में अशोक भी अपने को क्षत्रिय कहता है।

देवि अह्म क्षत्रियंः कथं पलाण्डुं मरिम क्षयायमि?
हे रानी मैं क्षत्रिय हूँ, प्याज कैसे खाऊंगा?

'महापरिनिर्वाण सुतान्त' में लिखा है कि भगवान बुद्ध के अन्त्येष्टि में भाग लेने के लिए मौर्यों ने निम्नलिखित सन्देश के साथ मल्लों के यहाँ अपना दूत भेजा।

अथ खो पिप्लिवनिया मौरियानं कोसिनारकानं।
मल्ला नं दूत पहिसुं भगवापि खतियोमयं वोमयं विरबतियां॥

इसके पश्चात् पिप्लिवन के मौर्यों ने कुशीनगर के मल्लों के पास यह कहकर दूत भेजा कि भगवान भी क्षत्रिय हैं और हम भी

क्षत्रिय हैं। 'महावंश टीका' मे लिखा हुआ है कि मौर्य लोग उसी जाति के थे, जिस जाति के भगवान बुद्ध। 'महावंश', 'महावस्तु' और 'ललित विस्तार' आदि ग्रन्थों में प्रमाणित है कि बुद्ध सूर्य वंशीय क्षत्रिय हैं। अतः मौर्य भी उसी वंश के हुए।

महात्मा बुद्ध कपिल वस्तु गणराज्य के राजा शुद्धोधन के पुत्र थे और शुद्धोधन दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न के वंशज थे। इन्होंने हिमालय की तलहटी में राज्य स्थापित किया। शत्रुघ्न ईक्ष्वाकुवंशी अर्थात् सूर्यवंशी राजकुमार थे। राजा शुद्धोधन तथा उनके पुत्र महात्मा बुद्ध भी सूर्य वंशीय क्षत्रिय हुए। कपिल वस्तु में साखू (शाक्य) वन में निवास करने के कारण इन क्षत्रियों को शाक्य वंशी क्षत्रिय कहते हैं।

"गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों के इतिहास" के लेखक महोदय ने पूर्वांचल के क्षत्रियों को टुकड़ों में बाँट दिया एक वैदिक क्षत्रिय और दूसरा बौद्धिक क्षत्रिय।

लेखकों और कवि की कल्पना शक्ति विचित्र होती है। वे शून्य तथा अर्थहीन चीज का वर्णन ऐसे करते हैं, मानो वे हाड़मांस के वास्तविक जीव हों। उनको वे निश्चित नाम देते और उन्हें निश्चित निवास प्रदान करते हैं।

अंग्रेजी के नाट्यकार तथा कवि शेक्सपिअर के शब्दो में **When their imagination bodies forth they give to airy nothing but a local habitation and a name.**

उपर्युक्त पुस्तक के लेखक पाण्डेयजी महोदय ने ऐसी ही रचना कर डाली है। उनका कहना है कि सैथवार शब्द प्राचीन संस्थागार (गणजातियों का सभाभवन) के ऊपर रखे हुए नाम संस्थागार शब्द

का प्राकृत रूप है। और उनके प्राचीन तथा अर्वाचीन संघ का द्योतक है।

भगवान बुद्ध की जन्म भूमि तथा लीला भूमि के ये क्षत्रिय बहुत दिनों तक बौद्ध बने रहे। उनके सजातीय वैदिक क्षत्रिय अपनी परम्परा के आग्रह के कारण उनको अपने से नीचा समझते थे। भारत वर्ष में बौद्धिक धर्म के ह्रास (समाप्त) होने और मारिल तथा शंकराचार्य द्वारा हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार के समय गोरखपुर जनपद के बौद्ध क्षत्रिय भी हिन्दू धर्म में वापस आये परन्तु उनके ऊपर पुराने धार्मिक मतभेद का संस्कार था। उनके हिन्दू धर्म में प्रविष्ट होने पर भी उनके सजातीय वैदिक क्षत्रिय उन्हें अपने समान सामाजिक तथा धार्मिक अधिकार देने को तैयार नहीं थे।

संस्थागारिक अथवा बौद्धिक क्षत्रिय केवल काल्पनिक नाम है। इनकी कोई ऐतिहासिकता नहीं है और न इनका वर्णन ही किसी मध्य कालीन इतिहास या कहीं अन्यत्र मिलता है। ये शब्द लेखक के मस्तिष्क की उपज हैं। यदि ये संस्थायें रहीं भी हों तो इन सैथवार क्षत्रियों का विवाहादि सम्बन्ध मधुबन के विसेन क्षत्रियों से है, कोई सम्बन्ध व सरोकार संस्थागार से नहीं है।

लेखक महोदय ने मल्ल क्षत्रियों को भी दो टुकड़ों मे बाँटने का प्रयत्न किया है। एक वैदिक मल्ल और दूसरा बौद्धिक मल्ल लेखक महोदय का कहना है कि आजमगढ़ जनपद मऊ के उत्तरी भाग अर्थात् नत्थूपुर परगना तथा मधुबन के मल्ल बौद्धिक मल्ल हैं। ***मधुबन के मल्ल विसेन राजा माधव मल्ल के वंशज हैं।*** इसे लेखक महोदय भी स्वीकार करते हैं। वे अपनी पुस्तक के 232 पर लिखते हैं :-

तुजुक जहांगिरी में जशन एक पृष्ठ 3 9 में लिखा है:
'पंज हजार रूपया वनत्थमल्ल राजा मझौली मरहमत नमूदम' अर्थात् मझौली के राजा नत्थमल्ल को मैने पांच हजार रूपया बतौर इनाम के दिया।

'विसेन वंश वाटिका' में ऊपर के अवतरण पर यह टीका दी गयी है: यह लेख तुजुक जहांगीरी नामक फारसी इतिहास में पृष्ठ संख्या 38-39 के प्रथम पंक्ति में लिखी है। यद्यपि इसमें मझौली का ठिकाना लिखकर नत्थमल्ल लिखा है।इस वंश में यह किसी का नाम नहीं था। फारसी अक्षरो में नत्थ और भीम एकही तरह से लिखा जाता है।कई बार छपने से बिन्दुओं का हेर फेर होगया है।

यह टीका मान्य नहीं। एकतो फारसी में नत्थ और भीम एक तरहसे नहीं लिखे जाते। दूसरे नत्थमल्ल का अस्तित्व और प्रमाणों से सिद्ध होता है। आजमगढ़ मऊ जिले के उत्तरी भाग में नत्थूपुर परगना और नत्थूपुर के कोट के खण्डहर अब तक विधमान हैं। इसी भाग में मधुबन गांव माधव मल्ल के नाम पर बसाया गया था। मधुबन कोट के भग्नावशेष भी हैं।

यह पहले कहा जा चुका है कि आजमगढ़ जिले का यह भाग प्राचीन मल्ल राष्ट्र का भाग था और मध्य युग में भी अवसर मिलने पर मझौली ने अपना अधिकार उस पर जमाया। इसलिए माधव मल्ल और नत्थमल्ल दोनों ही मझौली के विसेन राजवंश के हैं। विसेन वंश वाटिका से यह मालूम होता है कि राजा देव मल्ल (पीढ़ी 98) के तीन पुत्र थे। परसाद मल्ल, माधव मल्ल और राय मल्ल। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि सरयूपार वाले राज्य का प्रबन्ध

माधव मल्ल के हाथ में था और उन्हीं के नाम पर उसका नाम मधुबन पड़ा। इसी माधव मल्ल के पुत्र नत्थमल्ल दिल्ली दरबार में जहांगीर के समय में ही मझौली राज्य के प्रतिनिधि थे। इसीलिये स्थानीय रूप से उनका उल्लेख हुआ है।

राजा नत्थमल्ल के अस्तित्व का प्रमाण अन्य स्त्रोतों से भी मिलता है। मध्यकालीन इतिहास विशेषज्ञ अवध प्रान्त से सम्बन्धित प्रसिद्ध और विश्वसनीय पुस्तक "आइना अवध" के लेखक मौलाना सैय्यद मोहम्मद अब्दुलहसन शाह मानिकपुरी को इस क्षेत्र के इतिहास लिखने के लिए मझौली राजाओं के वंशावली की आवश्यकता हुई। वे तत्कालीन कलक्टर गोरखपुर के पत्र 3 अप्रैल 1874 के साथ मझौली दरबार में उपस्थित हुए। उस समय मझौली के सिंहासन पर राजा उदयनारायन मल्ल विराजमान थे। उनके पुत्र लाल खड्ग बहादुर मल्ल राजकुमार थे। उन्होंने लेखक मजकूर को मझौली राज की वंशावली दिया। इस शजरे इन्साव में 113 पीढ़ियों के नाम दिये गये हैं। परन्तु इस शजरे में राजा नत्थमल्ल का नाम नहीं है। आइना अवध के लेखक जिसने तमाम तत्कालीन इतिहासों जैसे तबकातेनासिरी, तारीखेफिरिस्ता, तजकिराते शादात, आइना अकबरी, अकबरनामा, तुजुक जहाँगीरी, आलमगीर नामा आदि पुस्तकों का गहन अध्ययन किया था, को इस वंश में राजा नत्थमल्ल का नाम न पाकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने इस वंशावली के विषय में अपनी राय यूं प्रकट किया है:

"इस शजरे इन्साब में पुश्तें बदलायेअकली किसी कदर पर करीनव्यास नही है कि तखलीक आमद अलेइस्लाम से इस कदर

इनकी पुश्तें गुजरी हों कायदा तमामे हिन्दुआने हिन्द का यह है कि इब्तदा और जमाने पर बहुत कोशिश करते हैं और शजरे इन्साव अपना इस कदर तवील लिखतें है जिनका कोई शुमार नहीं कर सकता है और अक्सर बरहमनो को जमा करके वंशावली फर्जी बना लिया करते हैं। ***चुनान्चे तुजुक जहांगिरी मे बशफा 83 पर यह इबारत लिखी है कि राजा नत्थमल्ल जमीन्दार मझौली को 1014 हिजरी मे मुव0 5000 रु0 बतौर इनाम बादशाह ने दिया। मगर शजरे इन्साब मझौली मे नाम राजा नत्थमल्ल का नही है। इससे जाहिर है कि यह शजरे इनसाब यकीनी फर्जी है क्योंकि बमुकाबले तुजुक जहांगीरी कि तन्सीफ करदा खास बादशाह जहाँगीर का है किसी तरह तहरीर राजा साहब पर इतमाद नहीं हो सकता है*** लेकिन इसमें कुछ शक नहीं कि यह खानदान बहुत कदीम और शाहानेदेहली हमेशा मुअजिज और मुमताज रहा।''

अतः तमाम ऐतिहासिक घटनाओं और पुस्तकों से स्पष्ट मालूम हो गया कि राजा माधव मल्ल और उनके पुत्र नत्थमल्ल मझौली राजवंश के प्रभावशाली पुरूष थे। अब प्रश्न उठता है कि उनके विवाह सम्बन्ध कहाँ हुए?

राजा माधव मल्ल की ससुराल मगरौल में थी (गहरवार राजपूत)। राजा नत्थमल्ल और उनके सजातीय बन्धुओं का विवाह सम्बन्ध उन राजपूत घरानो में थे, जो अधिकांश संख्या में राजा मोती दास (गौड़ नागवंशी) के साथ बनारस तथा गोरखपुर की ओर जंगे कश्मीर (1625 ई0) के बाद आये और इसी क्षेत्र में बस गये। इन राजपूतों का वाटिका के लेखक द्वारा काल्पनिक संस्थागारिक

अथवा बौद्धिक क्षत्रियों से कोई सरोकार या सम्बन्ध न था।

वाटिका के लेखक की यह धारणा है कि ये सैथवार जिनमें पड़रौना के राजगान भी सम्मिलित हैं, इसी क्षेत्र के मूल निवासी थे और ये देश के किसी अन्य प्रान्त से नहीं आये हैं, बिल्कुल गलत है।

मध्यकालीन गोरखपुर जनपद रियासत जौनपुर में था। उस समय के मध्यवर्ती रईशों और ताल्लुकेदारों एवं सामान्य जनता के हालात का पूरा विवरण किसी प्राचीन इतिहासिक पुस्तक में नहीं मिलता। इसका कारण यह है कि उस समय लोगों को इतिहास लिखने का ढ़ंग नहीं मालूम था कि वे घटनाओं को क्रमबद्ध तथा तिथिवार लिखते या यह कि इतिहास लेखन कार्य में रूचि नहीं लेते थे। धार्मिक बातें, पौराणिक गाथायें आदि में लेखक इस तरह घुल मिल गये कि कोई इतिहासकार उनकी सहायता से कोई वास्तविक इतिहास नहीं लिख सकते। उनकी लेखनी सम्राटों, सामन्तो, आदि के ऐश्वर्य्र और गौरव तथा साधु, सन्तों के चमत्कारी कार्यों तक सीमित थी। इन लोगों के ज्ञान भण्डार में वह विस्तार नहीं था कि वे साधारण तथा मध्यवर्गीय रईशों के विषय में वर्णन कर अपनी पुस्तक को आने वाले समय के लिए उपयोगी सिद्ध कर सकें। अंग्रेजी शासन काल के पूर्व ऐसे इतिहासकार कम हुये जिन्होनें ऐसे राजाओं और रईशों का वर्णन किया हो। बहरहाल हम ऐसे राजाओं और रईसों के पूर्व वंशों का, जिनको अपनी प्राचीनता का दावा है, विस्तृत और प्रमाणित वर्णन प्राचीन अथवा मध्य कालीन पुस्तकों में नहीं पाते। यदि यही दशा कुछ दिन और रही तो जानकारी का जो भण्डार

वर्तमान में है, वह भी समाप्त हो जायेगा। अतएव हमारा कर्तव्य है कि इस तत्कालीन समय के इतिहास की जानकारी के लिए मूल साधनों का संग्रह करें। ये साधन हैं उस समय के लेख, इतिहास, प्रमाण-पत्र, ताम्र पत्र, सिक्के, भग्नावशेष, इमारतों के खण्डहर, धार्मिक स्थल, संस्थाओं का वर्णन इत्यादि।

इन साधनों की प्राप्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि मधुबन जनपद मऊ का क्षेत्र प्राचीन काल से सांस्कृतिक तथा प्रगतिशील रहा है। मधुबन की कोट तथा नयपुर की कोट और पोखरों का सिलसिला तथा खण्डहर आदि मधुबन के मल्ल रईसों की दौलतमन्दी तथा कुलीनता के द्योतक हैं। अभी चन्द साल का समय बीता है मौजा-खीरीकोठा दोआब मधुबन में एक ताम्र पत्र जमीन के अन्दर से बरामद हुआ है जो इस समय इतिहास जानने के लिए लखनऊ अजायब घर में रखा हुआ है।

बिशुनदयाल मल्ल साकिन लखनौर प्रतिष्ठित तथा विश्वसनीय व्यक्ति थे। उनके बयान से मालूम हुआ कि मिस्टर मारफेली इस ताम्र पत्र के प्राप्त होने के समय जिले के कलक्टर थे। उन्होंने उपरोक्त ताम्र पत्र को कलकत्ता भेजकर पढ़वाया। उसका सारांश निम्नलिखित है: यह ताम्र पत्र एक दान पत्र है। जिसके द्वारा सोनकुण्ड स्थान थानेश्वर के राजा नरेश वर्द्धन पुत्र प्रभाकर वर्द्धन जो कश्मीर से नेपाल तक के शासक थे, ने बाणभट्ट को, जो ऋग्वेद के प्रकाण्ड विद्वान थे, को कुछ जायदाद दान में दिया था।

ह्वेनसांग अपनी यात्रा वर्णन में लिखता है: कुशीनगर की राजधानी ध्वस्त हो गयी थी। इसके ग्राम उजाड़ और नगर शून्य हो

गये थे। नगर की दीवारें कई मिलों से जीर्ण शीर्ण थी।

वंश परिचय :- प्रभाकर वर्धन की पुत्री राज्यश्री का विवाह कान्यकुंज्ज के एक मुखरवंशी ग्रहवर्द्धन से हुआ था। हर्षवर्द्धन पुष्यमूर्ति वंश का था। यह वंश (वैस) वैस्य क्षत्रिय वंश है। इस वंश के क्षत्रिय प्रदेश में रायबरेली, लखनऊ, जौनपुर, मऊ जिलो में बहुसंख्यक बसे हैं, कान्यकुंज में पुष्यमूर्ति वंश के उत्कर्ष के समय और उसके बाद क्रमशः गोरखपुर जनपद में आकर बसे थे। हर्षवर्द्धन के कोई पुत्र न था। उसके मरने के बाद देश में अराजकता फैल गयी। इसी बीच मे यशोवर्मन नामक एक वीर और महत्वाकांक्षी व्यक्ति ने कान्यकुन्ज पर अपना अधिकार जमा लिया। यह चन्द्रवंशी राजपूत था। यशोवर्मन के विजय का वर्णन 'गोईनही' नामक काव्य में दिया हुआ है।

आठवीं शताब्दी विक्रमी में भारतीय इतिहास में एक नये युग का प्रारम्भ होता है। जिसे राजपूत काल कहते हैं। राजपूत संस्कृत शब्द, राजपुत्र का अपभ्रंश है। जिसका अर्थ राजा का पुत्र होता है। इस शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त प्राचीन ग्रन्थों में राजपूत शब्द का प्रयोग क्षत्रिय के पर्याय के अर्थ में किया जाता है।

पाणिनी ने राजपूत शब्द का प्रयोग राजन्य क्षत्रिय के पर्याय में किया है। महाभारत से लेकर आधुनिक समय तक पौराणिक तथा वंशागत परम्पराओं से क्षत्रियों का अस्तित्व सिद्ध है। ऐसे सैकड़ो राजवंश हुए हैं, जिनको स्पष्ट क्षत्रिय माना गया है।

दुर्भाग्यवश देशी लेखकों ने धर्मान्धता और अज्ञान के वशीभूत होकर, इस कारण से कि बहुसंख्यक क्षत्रियों ने आर्य बुद्धिष्टकाल में

आर्य धर्म और आर्य संस्कारों को छोड़ दिया और बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया, यह मत प्रकट किया है कि राजपूत शुद्ध क्षत्रिय नहीं हैं और इस सीमा तक गये हैं कि एक संदिग्ध वर्णन देते हैं कि कलियुग में क्षत्रिय और वैश्य वर्ण नही हैं। क्योंकि वैश्य भी और अधिक संख्या मे बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिये हैं। केवल ब्राह्मण और शुद्र दो ही वर्ण हैं।

श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य प्रसिद्ध इतिहासकार ने इस सम्बन्ध में अपना मत प्रकट किया है। वे लिखते है :

"The Brahmins has not turned Buddhists in any great number and had not lost touch with the Vedas and Vedic sanskar practices. The other two varnas, on the other hand, had become Buddhist in thousands and had lost all touch with vedic religion. When Buddhists being over thrown, they came back to Hinduism, most have forgotten their Gotras and had no knowledge of the Gayitri and they were naturally looked upon as Shudras. They still adhere to certain practices of their own and kept their distinctiveness as Kshattriyas and Vaishyas. The bigoted Brahmins could not assign to them the status of Kshattriyas in the newly constituted Hindu society and generally the opinion gained strength that in the Pialli age there remained only two Varnas- the Brahmins and the Shudras. When this happened, is not quite clear but that is later than the tenth century A.D. and that it arose in the south or the east cannot be said".

''ब्राह्मण किसी बड़ी संख्या मे बौद्ध नहीं हुए थे और वेदों तथा वैदिक संस्कारों से उनका सम्पर्क भी नहीं छूटा था। इसके विपरीत दूसरे दो वर्ण क्षत्रिय और वैश्य सहस्त्रों की संख्या में बौद्ध हो गये थे

और वैदिक धर्म से कुल सम्पर्क खो दिये थे। बौद्ध धर्म से बहिष्कृत होने पर जब वे हिन्दू धर्म में वापस आये तो उनमें से अधिकांश अपना गोत्र भूल गये और उनमें गायित्री का ज्ञान भी सम्भवतः न रहा और सम्भवतः उन्हें शुद्र समझा जाने लगा। उनमें अब भी अपने निजी कर्म काण्ड हैं और वे क्षत्रिय और वैश्य के रूप में अपना प्राणक्य बना रहे हैं। धर्मान्ध ब्राह्मणों ने उन्हें नव निर्मित हिन्दू समाज में क्षत्रिय का पद नहीं दिया और यह विचार प्रचलित हो गया कि कलियुग में केवल दो ही वर्ण ब्राह्मण और शुद्र हैं। यह घटना कब हुई बिल्कुल स्पष्ट नहीं है किन्तु यह निर्विवाद है कि यह घटना दसवीं शताब्दी ईस्वी के पीछे दक्षिण और पूरब में प्रचलित हुआ।''

राजपूताना और आस पास के प्रदेशों मे नवीन राजपूत जातियों की उत्पत्ति और संगठन पर श्री वैद्य महोदय पुनः अपना विचार प्रकट करते हैं -

"After the expulsion of Buddhism from India, caste began to stiffen gradually till it became rigid in the this period of our history. Every caste began to limit its field, specially for the purpose of marriage, to families which were known to be pure and unmixed. That there were kingly families in India in the seventh century which belonged to the Kshattriya Varna is undisputed from the statement of Hiven Tsang quoted in our first volume. But Kshattriyas turned Buddhist by scores and lost touch with the Aryan practices pertaining to Kshattriyas. Such families were now vigorously excluded. And, further, distance made it difficult to determine the exact nature of the caste purity of the families and it became the tendency not only among Kshattriyas but among the Brahmins and Vaishyas also

to form such castes based on........... So that the question of the purity of families residing in distant provinces might not arise. Hence it is that about the beginning of the eleventh century Rajputs confined themselves to the track where the Kshattriyas kingly families were chiefly gathered. And the status of Kshattriyas was naturally confined to those who could prove descent from undoubted Kshattriya kings within the memory of generation and had not to depend upon legends, broken as they were by many centuries of Buddhists and foreign rule. The word Rajputana became, therefore, of special importance and the thirty six royal families of Kshattriyas were enumerated, marriage within which group was considered proper. We need not wonder that those families were chiefly confined to what is now called Rajputana and the adjoining portions of central India, where, as the religious map appended to our first volume shows. Hinduism was very strong even in the days of Hiven Tsang and Buddhism had not much hold upon the people. Kshattriyas and Rajputs outside these limits were looked upon as not undisputed Kshattriyas. And it is thus the difference between the central track Rajputs and the Kshattriyas of Bengal and Decan arose."

"भारत वर्ष में बौद्ध धर्म के निष्कासन के बाद जाति प्रथा धीरे धीरे कड़ी होने लगी। यहाँ तक कठोर हो गयी कि प्रत्येक जाति अपने विवाह सम्बन्ध के लिये उन परिवारों अथवा वंशों तक सीमित रहने लगे जो शुद्ध और अमिश्रित समझे जाते थे।

हमारे इतिहास के प्रथम भाग में उद्धृत ह्वेनसांग के व्यक्तित्व से यह निसन्देह है कि सातवीं शताब्दी ई० में क्षत्रिय वर्ण के राजवंश

थे परन्तु बहुसंख्यक संख्या में क्षत्रिय बौद्ध हो गये और क्षत्रियोचित संस्कारों से उनका सम्पर्क टूट गया था। ऐसे बौद्ध परिवार बल पूर्वक क्षत्रिय जाति से बहिष्कृत कर दिये गये। इसके अतिरिक्त दूरी ने जाति शुद्धि के निश्चय को कठिन बना दिया और केवल क्षत्रियों में ही नहीं बल्कि ब्राह्मणों और वैश्यों में भी प्रान्त के आधार पर उपजातियां उत्पन्न हुई जिससे दूर के प्रान्तों में रहने वाले जातियों की शुद्धि का प्रश्न न उठे। यही कारण है कि ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में राजपूतों ने अपने को उसी प्रदेश में सीमित रखा जहाँ पर क्षत्रिय राजवंश एकत्रित थे और क्षत्रिय पद उन्ही तक सीमित किया गया जो अपनी उत्पत्ति उस पीढ़ी के स्मृति में किसी राजवंश से सिद्ध कर सकते थे और जिन्हें शताब्दियों के बौद्ध तथा विदेशी शासन से चारण गाथाओं पर अवलम्बित नहीं होना पड़ता था। राजपूताना शब्द का एक विशेष महत्व हो गया और यहाँ पर छत्तीस राजवंश की परिगणना हुई। जिसमें पारस्परिक विवाह सम्बन्ध उचित माना जाता था। हमें इसमें आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं कि यह वंश मुख्यतः राजपूताना और उसके निकट के मध्य भारत के भागों तक सीमित थे जहाँ पर ह्वेनसांग के समय में भी हिन्दू धर्म प्रबल था और जनता पर बौद्ध धर्म का प्रभाव कम था।

यह बात हमारे इतिहास के प्रथम भाग से संलग्न धार्मिक लेख में दर्शाया गया है। इस सीमा के बाहर के क्षत्रिय और राजपूत असंदिग्ध क्षत्रिय नहीं माने जाते थे इस प्रकार से केन्द्रीय प्रदेश राजपूताना के राजपूतों और दक्षिण तथा बंगाल के क्षत्रियों के बीच खाई उत्पन्न हो गयी।"

□□□

वंशावली विसेन वंश

विसेन वंश वाटिका के पंचम परिच्छेद के अनुसार

मझौली के विश्वसेन राजाओं की नामावली और संख्या

महाराजा विश्वसेन से लेकर वर्तमान समय तक जिन-जिन राजाओं ने राज्य किया, उनके नाम क्रमानुसार दिये गयें हैं।

क्रमसं०	नाम	क्रमसं०	नाम
1.	महाराजा विश्वसेन	2.	मणिमालसेन
3.	बीरसेन	4.	इन्द्रसेन
5.	चन्द्रसेन	6.	मणिदीपसेन
7.	मैनसेन	8.	मनचैन सेन
9.	मानसेन	10.	जयमृत्युसेन
11.	कुन्जसेन	12.	जयपाल सेन
13.	हृदय सेन	14.	गौरवमानसेन
15.	शंकरदत्त सेन	16.	हरिशचन्द्र सेन
17.	धीरदत्त सेन	18.	हरीपाल सेन
19.	जयपाल सेन द्वितीय	20.	पृथ्वी पालसेन
21.	कृपाल सेन	22.	ज्ञानसेन
23.	ध्यान सेन	24.	रागेनसेन
25.	गोपालसेन	26.	जयगोविन्दसेन
27.	अत्रसेन	28.	मुरारी सेन
29.	मैनमानसेन	30.	द्विग्विजयसेन
31.	इन्द्रपालसेन	32.	कनक सेन

33. मणिमालसेन द्वितीय
34. मालसेन
35. जयमाल सेन
36. कल्याणसेन
37. कर्त्तासेन
38. राजमाल सेन
39. उदयपाल सेन
40. चक्रसेन
41. अनन्त सेन
42. धुरन्धरसेन
43. उमरावसेन
44. करतार सेन
45. दयाल सेन
46. नन्दसेन
47. रावसेन
48. हरिचन्द्र सेन द्वितीय
49. खग्ड़राव सेन
50. राजसेन
51. भीम सेन
52. विक्रम सेन
53. सकृतसेन
54. सुवर्णसेन
55. धवल सेन
56. कमलराव सेन
57. कृपानन्द सेन
58. परशुराम सेन
59. इन्दुमान सेन
60. ईश्वरदत्त सेन
61. गम्भीर सेन
62. चक्रधार सेन
63. अर्जुनराव सेन
64. गुरुमाल सेन
65. गुरुमान सेन
66. कर्मसेन पृथ्युसेन
67. ध्रुवसेन
68. प्रताप सेन
69. अनकुम्भ सेन
70. पृथ्वी पाल सेन द्वितीय
71. अमरदत्त सेन
72. जयजीतसेन
73. कृपाल सेन द्वितीय
74. चेतधर सेन
75. धर्मसेन
76. धुम्रसेन
77. बेलीदत्तसेन
78. गंगादत्त सेन
79. धूम सेन मल्ल
80. हरदेव मल्ल
81. भूप मल्ल
82. दीपत्रम मल्ल

83. आनन्द मल्ल
84. माधवमल्ल
85. धीरमल्ल
86. भीम मल्ल
87. बलभद्र मल्ल
88. अरिदमन मल्ल
89. श्रृतु मल्ल
90. बहादुर मल्ल
91. बासुदेव मल्ल
92. केवल कृष्ण मल्ल
93. रघुबंश मल्ल
94. रतन मल्ल
95. राम मल्ल
96. नृप मल्ल
97. हरिश्चन्द्र मल्ल
98. देवमल्ल
99. प्रसाद मल्ल राय मल्ल
100. भीम मल्ल द्वितीय
101. नारायण मल्ल
102. रूप मल्ल
103. विक्रमादित्य मल्ल
104. पूरंन मल्ल
105. बोध मल्ल
106. भवानी मल्ल
107. लक्ष्मी मल्ल
108. आनन्द मल्ल
109. भीम मल्ल तृतीय
110. शिव मल्ल
111. अजीत मल्ल
112. रानी दिलराज कुवंरि तेज मल्ल (गोद लिये गये)
113. उदय नारायण मल्ल

(पृष्ठ 56 और 57 विसेन वंशवाटिका)

उक्त नामावली के द्वारा नाम तो श्रेणीबद्ध प्रकट हो ही जायेंगे। अब वाटिका के लेखक की विशेष प्रवृत्ति जानने के लिए मयूर भट्ट से लेकर आज तक के विश्वसेन कुल की वंशावली भी लिख दी जाती है। सविस्तार वृतान्त आगे वर्णन किये जायेंगें।

अथ विसेन वंशावली

(विसेन वंश वाटिका के अनुसार)

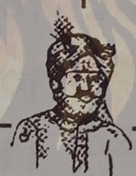
श्री मयूर भट्ट

- राजा विश्वसेन
- वक्रशाही (भगोछिया भूमिहार के प्रथम पुरुष)
- नागेश मिश्र (मिश्र पयासी के आदि पुरुष)

राजा विश्वसेन
|
राजा मणिमाल सेन
|
वीर सेन
|
इन्द्रसेन
|
चन्द्रसेन

इसी प्रकार नम्बर 97 तक एक के पीछे दूसरे का समझ लेना चाहिए।

नम्बर 98 राजा देव मल्ल



- राजा प्रसाद मल्ल
- माधव मल्ल (इनके वंश में महेन, पूनक, खरवनिया के बबुआन हैं)

राजा प्रसाद मल्ल
|
राजा भीम मल्ल (द्वितीय)

- राजा नारायण मल्ल
- वीर मल्ल (धौवला के बाबू)
- बाबू राम शाही (शाही पार के बबुआन)

(वीर मल्ल के पुत्र)

- राजा रूप मल्ल
- चतुर शाही (केचुआर के बबुआन)
- बा० क्षत्रशाही (मैरवा आदि)

(राजा रूप मल्ल के पुत्र)

- राजा विक्रमादित्यमल्ल
- राय होम मल्ल (इनके वंश में राजा कालाकांकर और उनके भाई जि० प्रतापगढ में आबाद हैं।)

राजा विक्रमादित्यमल्ल
|
आगे मझौली के राजगान

उक्त वंशावली के प्रमाणिकता के सम्बन्ध में पाठ्कगण विचार कर सकते हैं। महाराजा देव मल्ल जो 98 पीढ़ी पर हैं। उनके द्वितीय पुत्र माधव मल्ल के वंशज मधुबन जनपद मऊ में बसे हैं। माधव मल्ल के दो पुत्र थे। प्रथम राजा नत्थमल्ल और द्वितीय बाबू अजयी मल्ल उर्फ फतेहबाहदुर मल्ल। राजामाधव मल्ल और नत्थमल्ल के विषय में पं० डाक्टर राजबली पाण्डेय अपनी पुस्तक 'गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों के इतिहास' के पृष्ठ संख्या 232 पर लिखते हैं:

जहाँगीर के समय में मझौली राज्य के बारे में जो उल्लेख है, उसमें और विसेन वंश वाटिका के वर्णन में अन्तर है। तुजुक जहाँगिरी में जश्न प्रथम पृष्ठ संख्या 39 में लिखा है पंज हजार रुपया बनत्थमल्ल राजा मझौली मरहमत नमूदम अर्थात मझौली के राजा नत्थमल्ल को पाँच हजार रुपया बतौर इनाम मैने दिया।

'विसेनवंश वाटिका' में ऊपर के अवतरण पर यह टीका की गयी है: लेखक महोदय लिखते हैं यह बात उपरोक्त तुजुक जहाँगिरी नामक फारसी इतिहास के जश्न 1 पृष्ठ संख्या 38-39 की प्रथम पंक्ति में लिखी है। यद्यपि उसमें मझौली का ठिकाना लिखकर नत्थमल्ल लिखा है। इस वंश में यह किसी का नाम नहीं था। फारसी अक्षरों में नत्थमल्ल और भीम मल्ल एक ही तरह से लिखा जाता है। कई बार छपने से बिन्दुओं का हेर-फेर हो गया है। लेखक महोदय की यह उक्ति कितनी मनगढ़न्त और तथ्यहीन है। ***कदापि यह टीका मान्य नहीं हो सकती। एक तो फारसी में नत्थ और भीम एक ही तरह से नहीं लिखे जाते हैं दूसरे नत्थ मल्ल का अस्तित्व और प्रमाणों से सिद्ध होता है।*** जनपद आजमगढ़ (मऊ) के उत्तरी भाग में नत्थूपुर परगना तथा नत्थूपुर कोट के खण्डहर अभी तक विद्यमान हैं। मधुबन कोट का भग्नावेश अब भी

मौजूद है, जो विशाल है। मधुबन श्री माधव मल्ल का बसाया हुआ है।

पहले यह कहा जा चुका है कि आजमगढ़ जिले का यह भाग प्राचीन मल्ल राष्ट्र का भाग था और मध्य युग में भी अवसर मिलने पर मझौली ने अपना अधिकार जमाया। अतः माधव मल्ल और नत्थमल्ल दोनों ही मझौली के विश्वसेन राजवंश के इतिहासिक पुरूष हैं।

विसेनवंश वाटिका से मालूम होता है कि राजा देव मल्ल 98 पीढ़ी के दो पुत्र थे। प्रसाद मल्ल और माधव मल्ल। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि सरयू के दक्षिण पार वाले मझौली राज्य के भाग का प्रबन्ध राजा माधवमल्ल के हाथ में था। इन्हीं के नाम पर उसका नाम मधुबन पड़ा, और विशाल कोट वहाँ बनायी गयी। नत्थमल्ल इसी माधव मल्ल के पुत्र थे जो दिल्ली दरबार में जहाँगीर के समय में मझौली राज्य के प्रतिनिधि थे। इसीलिये स्थानीय रूप में इनका उल्लेख है।

राजा नत्थमल्ल के अस्तित्व तथा व्यक्तित्व का वर्णन

''आइना अवध'' के लेखक मौलाना मौलवी शाह सैय्यद मोहम्मद अब्दुल हसन पीरजादा मानिकपुरी पृष्ठ संख्या 270 पर लिखते हैं: ''आइना अवध'' के लेखक को इस पुस्तक को लिखने के लिए मझौली के विसेन वंश की वशांवली की आवश्यकता पड़ी। लेखक महोदय जिलाधीश-गोरखपुर के पत्र दिनांक 3 अप्रैल 1874 ई० को लेकर मझौली गये और मझौली के राजा से उनकी वंशावली के लिए उपरोक्त पत्र के माध्यम से प्रार्थना किये।

"राजा साहब के उत्तर लिखने के अनुसार, इस कौम की बुनियाद मुसम्मी मयूर भट्ट से पायी जाती है जिसका कोई सम्बन्ध सूर्यवंश व चन्द्रवंश से नहीं था। परन्तु उनका विवाह सूर्य प्रभा नामक कन्या (सूर्यवंश) से हुआ था। इस विवाह सम्बन्ध से विश्वसेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ और इनके वंशज इन्हीं के नामानुसार विश्वसेन कहलाये। मुअलिद विश्वसेन का ककराडीह तहसील नगरा वर्तमान घोसी जिला-आजमगढ़ (वर्तमान मऊ) है। अपने कुछ लोग इकट्ठा करके परगना सलेमपुर के मालिकों पर जो कौम भर से थे अपने असली स्थान से एकाएक दौड़ मारी। घमासान युद्ध के बाद परास्त किया गया और तब से रियासत पर इनका कब्जा हो गया और खास मुकाम मझौली को इन्होंने अपनी राजधानी करार दिया। अब तक मझौली इस कौम में मर्यादा पूर्ण चला आता है।

चूंकि तहकीकात हो चुका है कि अगले जमाने की कोई तवारिख ऐसी नही है कि जिससे उस जमाने का हाल बकैदा सन् व तारीख तहरीर किया जाये। इस कारण से हवाला सन् व तारीख का नहीं हुआ। उस समय के युवराज मझौली लाल खड्गबहादुर मल्ल ने इस वंश की वंशावली दिया। इस वंशावली के अनुसार उन तक 113 पीढ़ियाँ गुजरी है। इन सब राजाओं का नाम उन्होंने एक के पीछे दूसरे का दिया है।"

लेखक अब्दुल हसन की राय इस वंशावली के सिलसिले में यह है जो आइना अवध में लिखित है (पृष्ठ संख्या 83)

राय मुअल्लिफ अक्षरशः

"इस शेजरे इन्साव मे पुश्तें बदलाये अक्ली किसी कदर करीब कयास नहीं है कि तखलीक आमल अले इस्लाम से इस कदर पुश्तें इनकी गुजरीं हों।कायदे तमामे हिन्दुआने हिन्द का यह है कि इब्तदा और जमाने पर बहुत कोशिश करते हैं और शजरे इन्साव अपना इस कदर तवील लिखते हैं कि जिनका कोई शुमार नहीं कर सकता और अक्सर ब्राह्मनों को जमा करके वंशावली फर्जी बना लिया करते हैं। चुनांचे तुजुक जहाँगीरी में बसफा 83 पर यह इबारत लिखी है कि राजा नत्थमल्ल जमीन्दार मझौली को 1014 हिजरी में मुबलिग पाँच हजार रूपया बतौर इनाम बादशाह ने दिया मगर शजरे इन्साब राजा मझौली में राजा नत्थमल्ल का नाम नहीं है। इससे जाहिर है कि यह शजरे इन्साब यकीनी फर्जी है क्योंकि बमुकाबिले तुजुक जहाँगीरी के कि तसनीफ करदा खास बादशाह जहाँगीर का है किसी तरह पर तहरीर राजा साहब पर एतमाद नहीं हो सकता लेकिन इसमें कुछ शक नहीं कि यह खानदान बहुत कदीम और पेशेशाहनेदेहली हमेशा मुअजिज व मुमताज रहा।"

राजा नत्थमल्ल अपने जमाने के बहुत बड़े वीर, प्रभावशाली और तेजस्वी पुरूष थे। इनसे विश्वसेन वंश का गौरव ऊँचा होना चाहिए परन्तु खेद की बात है कि "विसेन बंशवाटिका" के लेखक महोदय ने अपनी पुस्तक के पृष्ठों से नत्थमल्ल को उड़ा दिया है, लेकिन जब तक नत्थूपुर की कोट, नत्थूपुर का परगना और उनके इलाके पर उनकी सन्तानों का कब्जा होना, उनके वजूद कायम हैं, तब तक वे

सफेदुनियाँ से उड़ा नहीं सकते। राजा नत्थमल्ल का जिक्र तुजुक जहाँगीरी के पृष्ठ संख्या 39, 146 तथा 341 पर है।

मल्ल खानदान के गौरव का वर्णन करते हुए मौलाना मोहम्मद अब्दुल गफूर फारुखी, रिटायर्ड सब जज 1889 ई० में लिखते हैं :

"मल्लों का फिरका अपने जिले में इज्ज़त की नजर से देखा जाता है। अब तक इन लोगों के कब्जे मिल्कियत में 6 ताल्लुके और चन्द मुतफरीक मौजे मौजूद हैं जिनका रकबा मल्लान के नाम से मशहूर है। तयैगुरात जमाने (कालपरिवर्तन) के असर से बहुत बड़ा रकबा इन लोगों की जमीन्दारी का दूसरी कौम के हाथ में चला गया। सुना जाता है कि अवध की इब्तदाई हुकुमत तक उन लोगों की जमीन्दारी का रकबा सात कोस तक फैला हुआ था। ताल्लुका दुबारी भी उसी में शामिल था। विसेन दुबारी नाम का गाँव अब भी उसकी पुष्टि का साक्षी है। बड़े-बड़े मिट्टी के हौदे, जो इलाके मल्लान में पाये जाते हैं, इन लोगों के कदीम अजमत के गवाह हैं। यह सब निशानात कोट के हैं। जिसे अपने हिफाजत के वास्ते इस मुल्क के बड़े-बड़े ताल्लुकेदार और राजे बजवाते थे। इन निशानातों में मधुबन की कोट मुमताज है। जिसके देखने और जबानी बयानात पर तवजुह करने पर यह राय कायम होती है कि इस कौम का सदर मुकाम वहीं था। इसीलिये वहाँ वसीम और मजबूत कोट बनायी गयी थी। इसी तरह नत्थूपुर के पोखरों का सिलसिला मल्लों की दौलतमन्दी और उनकी हौसलामन्दी का साहेबे आमिल (उदाहरण) है।"

अतएव राजा नत्थ मल्ल की वजूद के बारे मे सन्देह करना

तथा भीम मल्ल का नत्थमल्ल होने का ख्याल करना, बिल्कुल गलत है। तुजुक जहाँगीरी में जो राजा नत्थमल्ल दर्ज है, वास्तव में राजा नत्थमल्ल ही हैं, भीम मल्ल नहीं। विन्दुओं के हेर फेर की बात गलत है।

'क्षत्रिय कल्पलता' के लेखक ठाकुर बब्बन सिंह मडिला के लेखानुसार महाराजा भीम मल्ल 1603 ई० मे मर गये थे और सम्राट जहाँगीर का प्रथम जलसा 1605 ई० मे हुआ था। चुनान्चे गद्दीनसीनी होने के पहले बादशाह जहाँगीर ने कैसे भीम मल्ल को खिलउत दिया होगा। महाराजा भीममल्ल की रुह का दरबार जहाँगीर में खिलउत के लिए आना बिल्कुल असम्भव है।

भीम मल्ल के बाद राजा नारायन मल्ल मालिक रियासत मझौली हुए। इसके बाद राजा रूप मल्ल मझौली के राजा हुये। राजा रूप मल्ल के दो पुत्र थे। प्रथम विक्रमादित्य मल्ल, ये राजगद्दी पर बैठे, दूसरे कनिष्ठ पुत्र बाबू माधव मल्ल द्वितीय थे जिनके वंशज महेन, पूनक, खरवनिया, के बाबूआन हैं परन्तु वाटिका में लिखा है कि राजा रूप मल्ल के कनिष्ठ पुत्र होम मल्ल हैं, जो राजा कालाकांकर के पूर्वज थे। यह महान इतिहासिक गलती है।

राय होम मल्ल महराजा रघुवंश मल्ल के पुत्र बाबू रूप मल्ल के पुत्र थे। इनका जिक्र आइना अवध के पृष्ठ संख्या 271 में है। राय होम मल्ल को सिकन्दर लोदी ने आराजी मौजा देरदा मे जो उस समय जंगल था, डेरा कराया और सरहद के इलाकों की रक्षा करने हेतु मुलाजिम नियुक्त किया और उनके वेतन के लिए 12 गाँव गिर्दवपेश

नानकारे में दिया। **यह सर्व विदित है कि सिकन्दर लोदी का शासन 1489-1517 ई० में था। अतः राजा रूप मल्ल जो महाराजा भीम मल्ल (मृत्यु 1603 ई०) के पोते थे, राय होम मल्ल के पिता कैसे हो सकते हैं?**

राय होम मल्ल तथा उनके वंशजों का वर्णन आगे किया जायेगा।

गजेटियर प्रतापगढ़ के पृष्ठ संख्या 91 के अवलोकन से विदित होगा कि होम मल्ल राजा रघुवंश मल्ल के पोते तथा बाबू रुप मल्ल के लड़के थे। उपरोक्त गजेटियर के अन्तिम पृष्ठों में होम मल्ल का वंश वृक्ष दिया गया है। आइना अवध के पृष्ठ संख्या 271 और 272 में भी राय होम मल्ल का वंश वृक्ष दिया गया है। जिसकी नकल इस पुस्तक में भी है। वाटिका में राजा रघुवंश मल्ल का क्रम नम्बर पीढ़ी 93 है। और राजारुप मल्ल का पीढ़ी 102 है।

अतएव राजारघुवंश मल्ल के कनिष्ठ पुत्र बाबू रुप मल्ल अथवा सरुप मल्ल 94वें पीढ़ी में हुए। जिस जगह पर वाटिका में होम मल्ल का नाम दर्ज किया गया है वहाँ पर वास्तव में महेन के आदि पुरुष का नाम दर्ज होना चाहिए था किन्तु वाटिका में मधुबन के मल्ल ठाकुरों के पुरखा माधव मल्ल का नाम जो राजा देव मल्ल के पुत्र थे उक्त बाबूआनों का पुरखा कल्पित तौर पर दर्ज किया गया है। जहाँ पर उक्त बाबूआन के आदि पुरुष का नाम होना चाहिये, वहाँ पर होम मल्ल का नाम दे दिया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए दोनो वंश वृक्ष नीचे दिया जा रहा है।

'विसेन वंश वाटिका' के अनुसार वंशावली

राजा रघुवंश मल्ल 93वें पीढ़ी

|

राजारतन मल्ल

|

राजराम मल्ल

|

नृप मल्ल

|

राजा हरिश्चन्द्र मल्ल

|

राजा देव मल्ल 98वे पीढ़ी

- (99वीं पीढ़ी) राजा प्रसाद मल्ल रायमल्ल
  - राजारूपमल्ल 102 पीढ़ी
    - राजा विक्रमादित्यमल्ल
    - रायहोम मल्ल (इस वंश मे राजा कालाकांकर और इनके भाई प्रतापगढ़ जिले में बसे हैं)
- बाबू माधव मल्ल (इस वंश मे महेन, खरवनियां, पूनक के बबुआन हैं)

वास्तविक वंशावली

जो इतिहासिक पुस्तकों 'आइना अवध' पृष्ठ संख्या 271, 272 तथा अन्य पुस्तकों और 'गजेटियर प्रतापगढ़' पृष्ठसंख्या 91 पर अवलम्बित है।

राजा रघुवंश मल्ल (६३ पीढ़ी)

- (मझौली राज) राजा रतन मल्ल
  - राजा राम मल्ल
    - राजा नृप मल्ल
      - राजा हरिश्चन्द्र मल्ल
        - महाराज देव मल्ल
          - राजा प्रसाद मल्ल
            - ⋮
              - राजा रूप मल्ल (१०२वीं पीढ़ी)
                - राजा विक्रमसदित्य मल्ल
                - बाबू माथवमल्ल द्वितीय (इनके वंशज महेन, खरवनियां, पूनक के वंशज हैं।)
          - माधव मल्ल (मधुबन) (बाद में राजा की उपाधि १५६५ में अकबर ने दी इनके वंशज मधुबन मऊ में बसे हैं।)
          - रायमल्ल (नरहरपुर के राजा) ↓
      - राम प्रताप मल्ल (गोंडा)
- बा० रूप मल्ल
  - राय होम मल्ल (इस वंश में राजा कालाकांकर व उनके भाई प्रतापगढ़ जिले में बसे हैं।)



राजा रघुराज मल्ल विसेन

महेन, पूनक खरवनिया के बाबुआनों के आदि पुरूष बाबू माधव मल्ल द्वितीय थे। ये माधव मल्ल राजा रूप मल्ल के कनिष्ठ पुत्र थे। अतएव वाटिका में होम मल्ल की जगह पर माधव मल्ल द्वितीय होना चाहिए। यह तवारीखी गलतियां जान बूझकर हुई अथवा इतिहास की सही जानकारी न होने के कारण इसका निर्णय करना कठिन है। वास्तविकता छिप नहीं सकती

"झूठ तो झूठ ही है, सच्च हो सकता नहीं
पानी में मिला चूने का घोल, दूध बन सकता नहीं।"

इस प्रकार जनश्रुति के आधार पर एक अप्रमाणित साहित्य "विसेन वंशवाटिका" उक्त युवराज मझौली द्वारा लिखा गया। इस लेख में भी अलगाववादी नीति के तहत तथ्यहीन बातों का वर्णन कर इतिहास का रूप देकर अपने ही खानदान में वंश भेद पैदा किये जाने की कोशिश की गयी जो ईर्ष्या अथवा संकीर्णता का द्योतक है।

इस अप्रमाणित साहित्य तथा प्रचार से एक ही खानदान में अलगाव की गहरी खाई पैदा हो गयी। परन्तु सौभाग्य की बात है अपने में कुल भूषण तथा विद्वान भी तो बहुत हैं, इन्होंने इस खानदानी कटुता तथा अलगाव को बड़े ही गम्भीरता से लिया। ऐतिहासिक खोज किया और कराया। अन्त में वास्तविकता को ढूढ़ लिया। फलस्वरूप इस प्रकार का निर्णय क्षत्रिय समाज द्वारा एक विशाल क्षत्रिय सम्मेलन के माध्यम से जिसके अध्यक्ष श्रद्धेय माननीय श्री अवधेश सिंह राजा साहब कालाकांकर जिला प्रतापगढ़ बनाये गये थे, लिया गया। यह निर्णय 9 मार्च सन्1929 को लिया गया था।

रेज्युलुशन नम्बर-4 :- जो कमेटी तारीख 9 मार्च 1929 को अखिल भारतीय क्षत्रिय संघ की ओर से इस बात को निश्चय करने के उद्देश्य से संगठित हुई थी कि तय करे कि पडरौना और उसके सम्बन्ध के सैथवार तथा मल्ल जाति क्षत्रिय है या नहीं।

उक्त कमेटी के निर्णयानुसार यह कान्फ्रेन्स यह घोषित करती है कि पडरौना तथा उसके सम्बन्ध के अन्य सैथवार जाति क्षत्रिय हैं :-

क. यह कान्फ्रेन्स यह भी घोषिरा करती है कि मल्ल जाति जिसमें पड़रौना तथा उनके सम्बन्धी अन्य सैथवार जाति का विवाह सम्बन्ध है, विसेन क्षत्रिय हैं। अतः यह कान्फ्रेन्स अखिल भारतीय क्षत्रिय समाज से अनुरोध करती है कि वह पड़रौना और मल्ल तथा उनके सम्बन्धी अन्य सैथवार जाति से हर प्रकार का सामाजिक व्यवहार अर्थात् रोटी बेटी का सम्बन्ध जो क्षत्रियों में परस्पर होते हैं, करें।

रिपोर्ट सब कमेटी

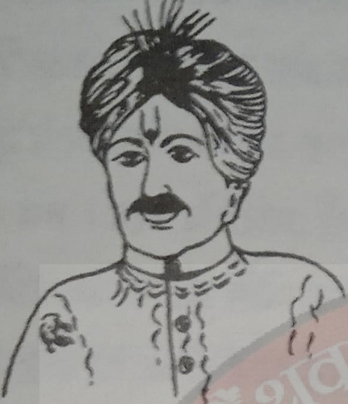
अखिल भारतीय क्षत्रिय युवक संघ बमूजिव रेज्युलुशन नम्बर-4

भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक पुस्तकों, पत्रों तथा लिखित घटनाओं से कमेटी सर्व सम्मति से इस निश्चय पर पहुँची है कि राजा नत्थमल्ल माधव मल्ल के पुत्र थे। उनके वंशज 'मल्ल' कहलाने वाले 'विसेन क्षत्रिय' हैं। कमेटी ने यह भी तय किया कि सैथवार राजपूत प्रमाणित राजपूत हैं। साथ ही साथ मल्ल वंश वालों से सैथवारों के विवाह आदि सम्बन्ध भी हैं। परन्तु कमेटी को इसका काफी प्रमाण अभी तक नहीं प्राप्त हो सका कि सैथवार कौन से राजपूत हैं? इसलिए यह कमेटी

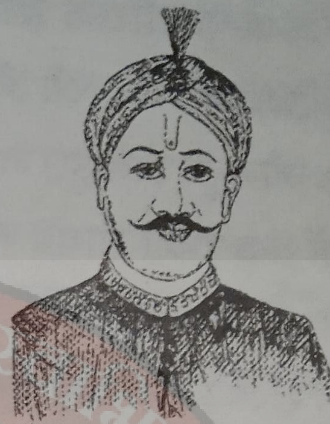
अखिल भारतीय क्षत्रिय नवयुवक संघ से सिफारिस करती है कि सैंथवार जाति को राजपूत तो घोषित कर देवे किन्तु उक्त जाति के लोग कौन से राजपूत हैं अर्थात् गौड़ या गहरवार। इसके लिये यह कमेटी जाति हितैषियों से निवेदन करती है कि वे काफी प्रमाण तीन मास के अन्दर सभा पति के पास भेजें और फिर कमेटी उन प्रमाणों पर विचार कर अपना निश्चय देवे। कार्यवाही हुई।

कार्यालय द्वारा घोषित





राजा प्रसाद मल्ल विसेन



राजा माधव मल्ल विसेन

महाराजा प्रसाद मल्ल व राजा माधवमल्ल के जीवन की दिलचस्प घटनाओं का वर्णन -

लेखक सैय्यद सफीक अहमद मुकाम पोस्ट दरगाह, जिला मऊ ने अपनी छोटी पुस्तक 'तजकिरे सैय्यद अहमद बादपा रहमतुल्लाह अलय' नामक पुस्तक में इनका जिक्र किया है। मैं सैय्यद सफीक साहब का महान कृतज्ञ हूँ कि इन्होंने इतिहास की एक ऐसी घटना का वर्णन किया है, जो इस क्षेत्र के लिए बड़ी उपयोगी है। यह रिपोर्ट स्व० बाबू जमुना मल्ल, मेम्बर रायल एशियाटिक सोसायटी बंगाल की रिपोर्ट पर आधारित है।

शेरशाह सूरी की आकस्मिक मृत्यु के बाद छोटा लड़का सलीम शाह राजगद्दी पर बैठा। उसने सन् 1554 तक हुकुमत किया। इसके शासन काल में बगावत की शुरूआत हुई। सलीम शाह के

बाद उसका लड़का गद्दी पर बैठा। उसके मामू ने उसको मार डाला और स्वंय नूर मोहम्मद आदिल शाह के नाम से राज करने लगा। वह अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। अवसर पाकर उसके चचेरे भाई इब्राहिम खाँ ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया। आदिल शाह जौनपुर होते हुए मझौली राज्य की तरफ भागा और फिर कुछ दिनों तक राजा माधव मल्ल मधुबन के यहाँ अतिथि रहा। जब यह खबर दिल्ली पहुँची तो इब्राहिम खाँ को यह सन्देह हुआ कि आदिल शाह राजाओं के यहाँ धूम-धूम कर सेना और धन इकट्ठा कर रहा है। लेहाजा हुकुम दिया कि राजा मझौली प्रसाद मल्ल और राजा मधुबन माधव मल्ल को तुरन्त दिल्ली लाया जाय। जब यह लोग दिल्ली पहुचे तो इन्हें नजर बन्द कर दिया गया। इन पर यह इल्जाम था कि यह लोग हमारे शत्रु आदिल शाह की सहायता करते हैं। इन राजाओं ने बड़ी सफाई पेश किया परन्तु उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया गया। राजा मझौली और राजा मधुबन को एक उपाय सूझा। उनको मालूम था कि शेरशाह की पुत्री माहबानू कोल्हुआबन दरगाह में निवास कर रही है जो इब्रहिम खाँ की रिश्ते में बहिन होती है। उन्होंने अपने मंत्रियों और रानियों को पत्र लिखा कि वे तुरन्त कोल्हुआबन दरगाह जाकर माहबानू से मिलें और वह पत्र उन्हे दे दें। अतएव मंत्रियों की राय से सविता राय नामक भाँट को, जो बड़े बुद्धिमान और राजनितिक कार्य में बड़े दक्ष थे, भेजा गया। सविता राय माहबानू की सेवा में पत्र लेकर दरगाह उपस्थित हुए। माहबानू ने पत्र पढ़कर अपने भाई इब्राहिम खाँ को यह पत्र लिखा कि यह दोनों राजे आपके खैर ख्वाह हैं। (स्वामभिक्त हैं।) इनको

तुरन्त मुक्त कर दिया जाये। पत्र पाते ही इब्राहिम खाँ ने दोनों राजाओं को मुक्त कर दिया। दोनो राजाओं ने एक साथ कोल्हुआबन की यात्रा किया और माहबानू से भेट करके हृदय से धन्यवाद दिया और कृतज्ञता प्रकट की। इस क्षेत्र के लोग अब तक मेला के समय में जाते हैं और दरगाह की हाजिरी देते हैं।

इस घटना के सम्बंध में समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा दिनांक 19 नवम्बर 2000 ई० में एक लेख इस प्रकार प्रकाशित हुआ है:

......जब मझौली इस्टेट की रानी के भेजे सिन्दूर की लाज रखी महाबानो ने।

"राष्ट्रीय सहारा" 19 नवम्बर 2000

राम जानकी मार्ग-55, *राजेश त्रिपाठी*

गोरखपुर बड़हलगंज ।....उस वक्त दरगाहा वाले मीर शाह की खिदमत में अपना बेशकीमती जीवन अर्पण करने वाली बादशाह शेरशाह सूरी की बेटी माहबानो नमाज अता कर उठी ही थी कि उनकी एक दासी उन्हें सूचना दी कि मझौली राजा का एक दूत कवि सविता राय उनकी खिदमत में हाजिर होना चाहता है। माहबानो को थोड़ा कौतूहल मिश्रित आश्चर्य ने एक पल के लिए जरुर घेरा था, परन्तु अगले पल ही मझौली दूत को सामने लाने की सहमति माहबानो ने दासी को दे दी थी।

जिस समय दूत कवि सविता राय मझौली के रानी के पत्र के साथ सुनहले कपड़े में लिपटा सिन्होरा (सिन्दूर रखने का पात्र)

माहबानो के हाथ में सौंपा उस वक्त तो वो चौंक ही पड़ी थीं। लेकिन खत का मजमून पढ़ते-पढ़ते वे न सिर्फ सिन्होरे की मौजूदगी का अभिप्राय ही समझीं बल्कि वे गंभीर हो गयी थीं। मझौली राज्य की महारानी ने माहबानो को पत्र लिखकर तथा सुहाग की पवित्र निशानी सिन्दूर भेजकर अपने शौहर मझौली राज की जान बचाने की फरियाद की थी जो उस वक्त दिल्ली के तख्त पर बैठे सुल्तान इब्राहिम की कैद में थे।

एशियाटिक सोसाइटीज के पृष्ट संख्या 452 के मुताबिक सन् 1545 का दौर था जब बादशाह सूरी की जलकर मौत हो चुकी थी। उसका छोटा लड़का सलीम शाह गद्दी पर बैठा। उसने सन् 1554 तक राज्य किया। लेकिन उसके व्यवहार से उपज रही अफगान सरदारों की नाराजगी धीरे-धीरे विद्रोह का रुप लेती गयी और अंततः शेरशाह के बड़े लड़के फिरोज खाँ को गद्दी पर बैठा दिया गया। परन्तु उसको उसके मामा ने ही मार डाला और गद्दी चली गयी मुहम्मद शाह आदिल को। इस बीच अव्यवस्था का बोल बाला चरम पर पहुंच चुका था।

बंगाल और मालवा हाथ से निकल चुके थे। इस अवसर का लाभ उठाया चचेरे भाई इब्राहिम खाँ ने। और न सिर्फ दिल्ली की गद्दी ही हथियाई बल्कि अपनी ताकत में भी इजाफा किया। इब्राहिम की बढ़ती ताकत तथा अपनी जान के भय को भाँपकर मुहम्मद शाह आदिल भाग कर चुनार चला गया।

लेकिन तब तक इब्राहिम को उसके मुखबिरों ने सूचना दे दी थी कि आदिल शरण लेने के लिए चुनार के किले की तरफ कदम

बढ़ाया है। सुल्तान इब्राहिम ने अपने सेना की टुकड़ी आदिल के पीछे लगा दी। आदिल को यह सूचना मिल चुकी थी कि इब्राहिम अपनी सेना की टुकड़ी उसे पकड़ने के लिए भेज चुका है। वह जौनपुर होते हुए मझौली इस्टेट की तरफ रवाना हुआ लेकिन इस बीच आदिल मधुबन (ककराडीह) के राजा माधव मल्ल के पास भी कुछ दिन रुका। वहां से वह मझौली के राजा के पास पहुंचा और पडरौना की तरफ निकल गया।

इस बात की जानकारी जब गुप्तचरों से सुल्तान इब्राहिम को लगी तो उसे इस बात की आशंका हुई कि आदिल इन राजाओं के यहां पनाह लेने के साथ-साथ सहयोग लेकर उसके खिलाफ कोई साजिश तो नहीं कर रहा है? इब्राहिम ने छल पूर्वक एक पत्र भेजकर मधुबन एवं मझौली राज्य के दोनों राजाओं को मिलने के लिए दिल्ली बुलाया। परन्तु वहां उनका स्वागत फूलों और इत्रों का सुगन्ध की बजाय हथकड़ी बेड़ियों ने किया। दोनों राजा आदिल को पनाह देने के जुर्म में कैद कर लिए गये। दोनों राजाओं को यह एहसास हो चुका था कि इब्राहिम शायद उनकी हत्या करा दे।

उन्होंने अपने-अपने महल में एक विश्वास पात्र द्वारा पत्र भेजवाया जिसमें बताया गया था कि शेरशाह सूरी की बेटी माहबानो दरगाह वाले मीर शाह की खिदमत में वहीं रह रही है। माहबानो रिश्ते में सुल्तान इब्राहिम की बहन लगती थी। अगर उसकी रहमोकरम हो जाय तो इब्राहिम उन्हें छोड़ सकता है। डा. आरिफ उस्मानी बताते हैं कि इसी बात की जानकारी होने पर मझौली की महारानी ने एक मार्मिक खत माहबानो को लिखकर भेजा साथ ही

अपने सुहाग की पवित्र निशानी सिन्होरा भी यह कहते हुए दूत कवि सविता राय के हाथों भिजवा दिया कि अब उनके सुहाग की रक्षा वही कर सकती है। इसी तरह की फरियाद मधुबन (ककराडीह) के राज परिवार से भी माहबानो को मिली। पत्र की मार्मिक शब्दावली और सुहाग की निशानी को देख कर दीन दुखियों सहित खुदाई खिदमत गार मीरशाह की सेवा में जीवन अर्पण करने वाली माहबानो का हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने मझौली के दूत को आश्वस्त करते हुए रानी को संदेश भेजा की वे निश्चिंत रहें उनके सुहाग की सही सलामत वापसी अब उनकी जिम्मेदारी बन गयी है। इसी आशय का संदेश उन्होने ककराडीह (मधुबन) के राज परिवार में भी भेजा। तदुपरांत शेरशाह की बेटी तथा मीरशाह की सेविका माहबानो ने रिश्ते के अपने भाई इब्राहिम को खत लिखा कि मझौली और ककराडीह उनके विद्रोही नहीं बल्कि खैरख्वाह रहे हैं। पत्र की सारगर्भित भाषा व रिश्ते की बहन की फरियाद ने सुल्तान पर असर डाला और दोनों राजा छोड़ दिये गए। सिन्दूर के मर्यादा का आदर किया माहबानो ने और माहबानो के फरियाद का आदर किया सुल्तान इब्राहिम ने।

कहते है दोनों राजा इब्राहिम की कैद से छूटने के बाद सीधे दरगाह पहुँचे और माहबानो के प्रति आभार प्रकट किया। और वही आभार तथा गूढ़ सम्बन्ध मधुबन और मझौली का आज भी मीरशाह के दरगाह के प्रति बरकरार है।

इसी राजा माधव मल्ल के पुत्र राजा नत्थ मल्ल व अजई मल्ल हैं, जिनके वंशज लखनौर, गांगेबीर, जजौली, उफरौली, परशुरामपुर, लकुरा, बहरामपुर, कंधला, उसरी, खीरी कोठा, पाँती, सीधा-अहिलासपुर, गुरम्हा, गोपालपुर, कटघरा शंकर, नत्थूपुर, अहिरौली, नन्दौर आदि गाँव में बसे हैं।

राजा प्रसाद मल्ल के दिल्ली दरबार मे बुलाये जाने और नजरबन्द हो जाने का वर्णन जो वाटिका में लिखा है :-

'विसेन वंश वाटिका' के लेखक ने वास्तविकता को बदल कर कुछ हेर फेर करके अपने पुस्तक में इस प्रकार लिखा है (पृष्ठ संख्या 92) राजाप्रसाद मल्ल को दिल्ली बुलाकर नजर बन्द कर दिया गया। वह प्रसिद्ध और प्रतापी हो गये हैं। इन्होंने अपने समय में उत्तम रीति से राज्य और प्रजा पालन किया। इनको दिल्ली बुलाकर सलीम शाह सूर ने कैद कर लिया। तब राजा के प्रसिद्ध कवि सविता राय बन्दीजन अपनी कविताई से बादशाह को प्रसन्न किया पर कवि ने उस समय अपना नाम और ग्राम यथार्थ नहीं बताया। बादशाह ने पूर्व रीति के अनुसार मुह मांगा इनाम देना स्वीकार किया तो कवि ने धन, जमीन और वाहन आदि कुछ न चाहकर राजा को ही छुड़वाया। तब राजा ने इस कवि को सांरग में गांव दिये जिसमे अब तक कवि के गाँव वाले बसे हैं और जमीन्दार भी वे ही हैं। राजा परसाद मल्ल के सम्बन्ध में इस जनश्रुति का खण्डन करते हुए पं० डाक्टर राजबली पाण्डेय, लेखक "गोरखपुर और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास" नामक पुस्तक में लिखते है :-

राजा परसाद मल्ल के सम्बन्ध में यह किम्वदन्ति सम्भवतः

सविता राय के वंशजों में ही सुरक्षित थी, जिसको विसेन वंश वाटिका लेखक ने अपने पुस्तक में उद्धृत कर लिया। इस जन श्रुति पर विश्वास करना कठिन है। एक तो गोरखपुर जनपद के साथ सूरवंश के सम्बन्ध का कोई कागजी प्रमाण नही है दूसरे सलीम शाह ने एक कवि बन्दी जन सविता राय की कुछ कविता सुनकर अपने अपराधी राजा को छोड़ दिया। यह घटना केवल बच्चों के विश्वास करने योग्य है। सत्य बात तो यह है कि अकबर के पहले किसी तुर्क या पठान शासक ने गोरखपुर जनपद पर पूरा अधिकार जमाने और शासन करने का प्रयास नहीं किया और स्थानीय राजाओं के समान मझौली के राजा भी स्वतन्त्र ही बचे रहे।

वाटिका के लेखक महोदय ने लिखा है कि राजा परसाद मल्ल को सलीम शाह बादशाह ने दिल्ली बुलाया और कैद कर लिया। आखिर अपराध के कोई कारण? क्या बादशाह इतना अविवेकी था कि बिना किसी अपराध के राजा परसाद मल्ल को दिल्ली बुलाता और उन्हें कैद कर लेता? दूसरे क्या बादशाह इतना भोला था कि जरा सी कविता सुनकर मुहमांगा इनाम देना स्वीकार करता और अपराधी राजा को मुक्त कर देता? यह सब शंकायें बतलाती हैं कि वाटिका के लेखक ने जन श्रुति के आधार पर जो सुने, लिख दिये परन्तु स्व० बाबू जमुना मल्ल मेम्बर रायल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल की रिपोर्ट एक ऐतिहासिक घटना है। इस घटना का सिलसिला अब तक मौजूद है। दरगाह कोल्हुआबन जहाँ माहबानो निवास करती थी, आज भी दर्शनीय स्थान है। यहाँ हर वर्ष मेले के अवसर पर लोग आते हैं और श्रद्धा के साथ माहबानो के कब्र पर सिर झुकाते हैं।

सविता राय को राजा मझौली ने गाँव दिये थे।ऐसी कहावत है जिसे मल्लान में हर जावाने आम व खास से सुना जाता है।

कवि को मिला गाँव हजारी

सूखा जाय न जाय दहारी ॥

(हजारी अर्थात एक हजार बीगहा)

शेरशाह सूरी द्वारा बारह गाँव माफी दिये जाने का शाही फरमान

शाही फरमान जिनके द्वारा शेरशाह सूरी ने बारह गाँव माफी मे दिया था शाह साहब के यहाँ मौजूद है। माफी सैय्यद रहमतुल्लाह अलय के नाम से बादशाह ने दिया था।

शेरशाह की मृत्यु के पश्चात् जितने सम्राट गुजरे न केवल बारह गाँव की माफी को कायम रखा वरन उसमें वृद्धि ही किया। इस प्रकार बारहो गाँव के माफी के प्रमाण पत्र (शाही फरमान) वर्तमान सज्ञादह नशीन साहब के पास मौजूद हैं। जो सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह के नाम से है। यह सब फारसी भाषा मे हैं।

जब हिन्दुस्तान में अंग्रेजी हुकुम्मत शुरू हुई और लार्डकार्नवालिस गर्वनर जनरल नियुक्त हुआ तो उसने बहुत से शाही फरमानों को रद्द कर दिया। फिर वह दरगाह आया और शाह घराने के सज्जाद नसीन शाह अब्बास अली को मय फरमान तलब किया। फरमान लेकर कहा मैं इन मौजो पर माल गुजारी रखना चाहता हूँ। शाह अब्बास अली को बड़ा दुख हुआ और उन्होंने कहा कि अगर मेरा भला न होगा तो तुम्हारा भी भला न होगा। मैने मालगुजारी कभी नहीं दी और न आपको दूंगा। लार्डकार्नवालिस कोल्हुआबन दरगाह से रवाना हुआ और चन्द फरर्लागं पर कोल्हुई ग्राम के निकट बीमार पड़ा और गाजीपुर पहुँच कर अक्टूबर सन् 1864 को मर गया। जो शाही फरमान माहबानू के नाम से थे वह अपने साथ लेता गया था, लेकिन सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह

नाम के फरमान थे, छोड़ कर गया जो अब तक मौजूद है। यह सब फारसी भाषा मे है। इनका तरजुमा निम्नलिखित है। यह अनुवाद डाक्टर मोमिन महीनउद्दीन सदर शोवये अलूम बम्बई युनिवर्सिटी ने किया। हम इनके महान कृतज्ञ हैं।

मुहर - बादशाह आलमगीर हाकिम फजले अली खाँ सैय्यद रहमतुल्लाह बादपा रहमुतल्लाह अलय बनाम मकरान परगना सिकन्दरपुर सरकार जौनपुर सूबा इलाहाबाद पटवारी हल्का को हुकुम दिया जाता है कि मौजा-हिराजपट्टी ताल्लुका जजौली, तप्पा फतेहबाद में सात बीघा जमीन बगरज नियाज हर साल अखराजात दरगाह सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह अलय मीरान शाह सैय्यद बुखारीनी को दिया जाये 1162 फसली।

मुहर-बादशाह गाजी आलमगीर बहादुर हाकिम फजले अली सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह अलय हुक्म दिया जाता है कि तप्पा फतेहबाद परगना-सिकन्दरपुर सरकार जौनपुर में मौजा खंडचा बहक न्याज अखराजात दरगाह सैय्यद अहमद रहमतुल्लाह अलय के बावत शाह सैय्यद अहमद बुखारी हसन को दिया गया। मोरखा - माह शव्वम 1175 फसली

मुहर - बादशाह आलमगीर हाकिम फजले अली खाँ 1164 फसली सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह बादशाह आलमगीर हाकिम फजले अली खाँ के जरिये 1164 फसली में दिये गये ताल्लुका दुबारी तप्पा-अकबरपुर, परगना-सिकन्दरपुर के अन्दर बगरज न्याज दरगाह सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह अलय सिकरीकोल, कसना, सारंगपुर, कचला बखरिया दिया गया और

मालगुजारी से माफ किया गया।

मोहर- हाकिम हैदर खाँ बेग। 1179 फसली सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह अलय मोहर हाकिम हैदर खाँ 1179 फसली के जरिये हुकुम दिया गया मोरखा सात जमादुल अव्वल 1179 फसली परगना नत्थूपुर सरकार जौनपुर सूवा इलाहाबाद के मौजा- रामपुर, आदमपुर बगरज न्याज व अखराजात दरगाह सैय्यद बादपा रहमतुल्लाह अलय 1174 फसली शाहशेफ अली को दिये गये।

मोहर खादिमेशाह अहमद अरबी व महरकाजी सैय्यद हसन अली सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह अलय।

काजी सैय्यद अली ने बजमाने आसफउद्दौला जरिये तहरीर मोरखा दस रमजान 1210 हिजरी परगना-नत्थुपुर घोसी चकिया के ओहदारान माल को परखापुर, आदमपुर, जो बगरज अखराजात दरगाह आस्ताना कोल्हुआबन सैय्यद आरफीन मीरान शाह को दिये गये थे। इसके मुतलिक शाहबक्श अली साहब ने अर्जी दी है कि इसके मुहासिले की वसूली में हुक्काम माल एतराज कर रहे हैं। यह शिकायत बादशाह तक पहुँची है। इस पर यह हुकुम बहाल रखा जाय और हुक्काम माल वसूली मे कोई मुजाहिमत न करें। इन बुजुर्गो ने अपनी रूहानी और अखलाकी शक्तियों से इस क्षेत्र के लोगो के हृदय को जीत लिया है। इस क्षेत्र के व इस क्षेत्र के बाहर के लोग इन सैय्यदों के साथ अदब व मर्यादा का व्यवहार करते हैं। राजे अमीर और धनी लोग इन्हें जागीरें और बख्सिसें देते हैं। इन सैय्यदों बुजुर्गो और माधव मल्ल मधुबन के वंशजों के बीच पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति का वर्ताव रहा है। चुनान्चे अभी हाल तक अर्थात् लगभग 20-25

साल पहले तक इस वंश के शाह जी हमारे गाँव लखनौर मऊ प्रतिवर्ष आते रहते थे।उन्हें मौजा के पूर्वजों ने प्रेम में बांध रखा था।प्रत्येक वर्ष बख्सिसें दी जाती थी।यद्यपि ये बख्सिसें आर्थिक रूप से इतनी अधिक या पर्याप्त न थीं, फिर भी शाह साहब प्रतिवर्ष दर्शन देते रहते थे। वे कहते थे वे इतना कष्ट केवल इसलिए करते हैं कि हमारी आपसी प्रेम और ऐतिहासिक सहानुभूति और श्रद्धा जो मध्य युग में थी, अब भी कायम रहे।यह है ऐतिहासिकता।

राजा माधव मल्ल एवं महाराजा भीम मल्ल के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन

राजा माधव मल्ल एवं महाराजा भीम मल्ल के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन 'मुन्तखब्बुल तवारीख' कादिर बदायूँनी में मिलता है। इसकी एक ऐतिहासिक झाँकी नीचे लिखी जा रही है।

मझौली के महाराजा प्रसाद मल्ल की मृत्यु 971 हिजरी तद्नुसार सन् 1564 ई० में हो गयी। इनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र भीममल्ल मालिक रियासत हुए। ये नाबालिग थे। सम्राट अकबर के पंजहजारी जनरल अलीकुली खाँ और बहादुर खाँ आपस में हकीकी भाई थे। अलीकुली खाँ को गाजीपुर और जौनपुर का कुछ भाग जागीर में मिला था। उसको सम्राट ने खाने जमा की उपाधि दिया था। इसी उपाधि के अनुसार उसने खाँनेजमानिया जो गाजीपुर की एक तहसील है, बसाया। बहादुर खाँ को इटावा में जमुना नदी के किनारे तक जागीर मिली थी। दोनो भाई दूर-दूर रहने के कारण अपने बल को छिन्न भिन्न समझते थे। लगातार इस कोशिश में रहते थे कि कैसे पास-पास आ जायें ताकि अपने बल का पूरा-पूरा लाभ उठा सकें। महाराजा प्रसाद मल्ल की मौजूदगी में उनको यह अवसर नही मिला। उनके मरने के बाद उनके नाबालिग पुत्र भीममल्ल के समय में इन खाँ बन्धुओं ने मझौली राज्य के सरयू के दक्षिणी भाग का इलाका जो क्षेत्रफल में 300 वर्गमील का था, बल पूर्वक कब्जा कर लिया जिसमें मझौली की पुरानी राजधानी ककराडीह भी थी। इसके बाद इन भाईयों ने ककराडीह के निकट अपने नाम के गढ़ बनवाये जो

अलीपुर और बहादुरपुर के नाम से जाने जाते हैं। खाँ बन्धुओं का सामना करने में अपने को असमर्थ पाकर राजा भीम मल्ल ने सम्राट अकबर की सहायता लिया और खाँ बन्धुओं के अत्याचार की सूचना देने तथा उचित न्याय पाने के लिये अपने चाचा माधव मल्ल को, जो इस क्षेत्र का कार्यभार देख रहे थे और जिन्हें यहाँ की जनता राजा मझौली ही कहती थी, अपने साथ लेकर अकबर के दरबार में पहुँचे और फरियाद किया। सम्राट ने उन्हें सहायता का वचन दिया। 972 हिजरी मुताविक सन् 1565 ई० में हाथियों का शिकार खेलता हुआ सम्राट अकबर चुनारगढ़ पहुँचा। सम्राट के आगमन की सूचना पाकर तमाम अफसरान और अहलकारान उपस्थित हुए। सम्राट ने जब अली कुली खाँ और बहादुर खाँ से उनकी ज्यादतियों के बारे में पूछा तो वे खुल्लम खुल्ला बागी हो गये। वे मुहम्मदाबाद, मऊ के पास चले आये और अपने गुमास्तागान को गाजीपुर, जौनपुर, और अन्य मुकामों को कब्जा करने के लिए भेजा। उपरोक्त सम्पूर्ण घटनायें 'मुन्तखब्बुल तवारिख' कादिर बदायूँनी के पृष्ठ संख्या 442 पर दर्ज हैं।

ये बागी अब ऐलान करने लगे कि वे इस इलाके को जो उन्होंने कब्जा कर लिया है, सम्राट के सौतेले भाइ मिर्जा मुहम्मद हकीम को जो उस समय काबुल का हुक्मराँ था, सौंप देंगें। इस पर सम्राट इन बन्धुओं पर बड़ा क्रुद्ध हुआ और उन पर चढ़ाई कर दिया। अलीकुली खाँ नरहर घाट जो बड़हलगंज से 7 मील पश्चिम में है, नदी पार कर हिमालय की ओर भाग गया और बहादुर खाँ उसी क्षेत्र में कहीं छिप गया। सम्राट ने अपने मुंशी अशरफ खाँ को हुक्म दिया कि बहादुर खाँ

की माँ को कैद कर लो। सम्राट के हुक्म के अनुसार बहादुर खाँ की माँ जौनपुर के किले में बन्द कर दी गयी। यह समाचार पाकर बहादुर खाँ कमन्द लगाकर किले में घुस गया और अपनी माँ को किले से बाहर निकाल लिया और अशरफ खाँ को रात में कैद कर लिया।

सम्राट इनकी इन हरकतों से क्रुद्ध होकर निजामाबाद जिला-आजमगढ़ पहुँचा, जहाँ उसके साल गिरह का दिन आ पहुँचा था। अकबर का जन्म दिन पूर्णमासी 14 शहबान हिजरी 949 तद्नुसार गुरूवार 23 नवम्बर 1542 ई० को हुआ था। इसी लिए बदर (पूर्णमासी) जोड़कर उसका नाम बदरुद्दीन मोहम्मद अकबर रखा गया। कुछ लोग इसका जन्म 20 दिसम्बर 1542 ई० मानते हैं। निजामाबाद में उसका जन्म दिवस उस वर्ष के अंग्रेजी हिसाब से 11 मार्च 1565 ई० को पड़ा था। महा पंडित राहुल सांकृत्यायन के पुस्तक 'आजमगढ़ की पुरातत्व यात्रा' से उद्धृत है। अकबर ने तुलादान किया और कवियों ने अपनी कविताओं द्वारा जन्म दिवस का अभिनन्दन किया। रिवाज के अनुसार सम्राट ने अपने को सोना, चांदी से तौलाया और इस धनराशि को ब्राह्मणों और गरीबों में बटवाया। यह विवरण गजेटियर में है। 'आइना ए अकबरी' मे नत्थूपुर परगने का वर्णन है। 106003 वर्ग एकड़ भूमि जोत में थी।

वर्षगाठ के अवसर पर बड़े लोग सम्राट की लम्बी आयु के लिए गरीबों में बख्शिसें बांटते थे और सम्राट उन्हें उपाधियाँ तथा जागीरें देता था। इस वर्ष की वर्षगांठ का वर्णन अब्दुल कादिर बदायूँनी की पुस्तक 'मुन्तखबुल तवारिख' की उर्दू प्रति सन् 1889 ई० नवल किशोर प्रेस लखनऊ मुद्रित

पृष्ठ संख्या 240 पर अंकित है। वस्तुतः निजामाबाद के सालगिरह का महत्व केवल सोने-चांदी बाँटने तक का नही है। खाँ बन्धुओं का दबाव अत्यन्त बढ़ गया था जिसका निवारण करना बहुत आवश्यक हो गया था। इस वर्षगांठ का राजनैतिक महत्व बहुत है। इसमें समीप के अनेक राजे और रईस सम्मिलित थे। उनके कुछ नाम निम्न हैं 1. रीवा के राजा रामचन्द्र सिंह, 2. मझौली के राजा भीममल्ल और उनके चाचा माधव मल्ल 3. जगदीशपुर आरा के उज्ञनी राजा दलपत सिंह 4. उनवल गोरखपुर के राजा संग्राम सिंह 5. गिद्धौर के राजा पूरन मल्ल 6. चम्पारन के उदयकरण सिंह आदि। इनके अतिरिक्त राजा टोडर मल्ल, मुहम्मद कुली खाँ बर्लास आदि उपस्थित थे।

यह उत्सव सामूहिक शक्ति के निर्माण में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। ***प्रबन्ध की दृष्टि से अकबर ने सरयू पार वाले इलाके को जिसे खाँ बन्धुओं ने बल पूर्वक कब्जा कर लिया था, उसे माधव मल्ल को दिया और उन्हें भी मझौली के राजा की उपाधि दी। तथा भीम मल्ल को महाराज मझौली की उपाधि दिया।***

'विसेन बंश वाटिका' के लेखक लाल खड़ग बहादुर मल्ल ने अपनी उक्त पुस्तक में लिखा है कि उन्हें (राजा माधव मल्ल को) राजाओं को तिलक देने का अधिकार भी सम्राट ने दिया। राजा माधव मल्ल ने गोरखपुर कौशिकों के आदि पुरूष ध्रुव चन्द को तिलक दिया था। (मैगजिन क्षत्रिय महासभा अधिवेशन 1987 ई० में लिखा है।)

राजा माधव मल्ल ने सन् 1565 ई० में अपने नाम पर किला बनवाया और अपने नाम पर मधुबन ग्राम बसाया। मधुबन, मझौली

राज की पुरानी राजधानी क्करांडीह का एक भाग है। जिसमें महाराज हर्षवर्द्धन का ताम्र पत्र सन् 1887 ई० मे मौजा-खीरीकोठा इलाके जमीन्दारी मल्लान में प्राप्त हुआ। यह ताम्र पत्र लखनऊ म्यूजियम में सुरक्षित रखा गया है। इस ताम्र पत्र पर शुद्ध संस्कृत भाषा में 18 पंक्तियों का लेख है। मधुबन क्षेत्र हर्षवर्धन के राज्य का प्रमुख अंग था। वेदज्ञ ब्राह्मणों का यह केन्द्र था। यहाँ के सोम कुण्ड आधुनिक कुण्डा को हर्षवर्द्धन ने बाल स्वामी व शिव स्वामी नामक ब्राह्मणों को दान में दिया था। इस ताम्र पत्र से ककराडीह महाराजा हर्षवर्द्धन के राज्यान्तर्ग्रत होना सिद्ध होता है।

निजामा बाद की वर्षगाठ के उत्सव से सम्राट की शक्ति बढ़ गयी और राजा माधव मल्ल अकबर के प्रिय सामन्त हो गये।

'अकबर' नामक पुस्तक में पं० राहुल सांकृत्यायन ने अली कुली खाँ और बहादुर खाँ का अकबर के साथ जो युद्ध हुआ था उसका वर्णन पृष्ठ संख्या 183, 190,191 और 192 पर किया है।

खाँ बन्धुओं को परास्त करने के बाद और इस क्षेत्र का उचित प्रबन्ध करके सम्राट अकबर आगरा लौट गया। खानेजमा मानने वाला व्यक्ति नहीं था। अकबर के चले जाने के बाद कड़े मानिकपुर के आस-पास के गहरवार राजपूत राजाओं को उसने बरबाद करना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि राजा माधव मल्ल की ससुराल मगरौल के राजाओं को नष्ट कर डाला। [''आइना अवध'' में दर्ज है।]

खाँ बन्धुओं ने सम्राट को वचन दिया था कि वे गंगा पार न करेंगें। परन्तु वे वचन भंग कर कालपी की ओर बढ़े। सम्राट अकबर

भी मानिकपुर घाट पर पहुँचा। अपने बाल सुन्दर नामक हाथी पर सवार होकर गंगा में कूद गया। उनके साथ हजार डेढ़ हजार सैनिक भी गंगा में कूद पड़े। सम्राट का अनुमान ठीक निकला। खाँ बन्धु शराबखोरी और शतरंजबाजी में मशगूल थे। अचानक सम्राट की सेना की आमद देखकर उनके होश उड़ गये, मजबूरन लड़ाई के लिए तैयार हुए। एक छोटी सी लड़ाई के बाद खाने जमा अलीकुली खाँ मारा गया। बहादुर खाँ भाग गया, परन्तु बाद में पकड़ा गया और उसका सिर उड़ा दिया गया। कितने सैनिक हाथियों के पैरों के तले दबा दिये गये। विजय के बाद आवश्यक प्रबन्ध करके बादशाह 18 जुलाई सन् 1567 ई० को आगरा लौट गया। इस प्रकार सम्राट की एक बहुत बड़ी चिन्ता दूर हुई। माधव मल्ल, भीम मल्ल, तथा क्षेत्र की जनता को चैन की सांस मिली। महत्वाकांक्षा जब उचित सीमा पार कर देती है तो पतन ही उसका परिणाम होता है। सम्राट की क्षमता, उसमें सहिष्णुता और सहनशीलता महान थी परन्तु उसके साथ-साथ उसका दण्ड भी बड़ा कठोर था। मझौली राज्य में अनाधिकार हस्तक्षेप तथा निजामाबाद के सम्राट अकबर के जन्म दिवस पर आयोजित उत्सव खाने जमा और उसके भाई बहादुर खाँ के विनाश की भूमिकायें थी। यह सब घटनायें आजमगढ़ वर्तमान मऊ जिले ने अपनी छाती पर होते देखा है।

राजा नत्थ मल्ल



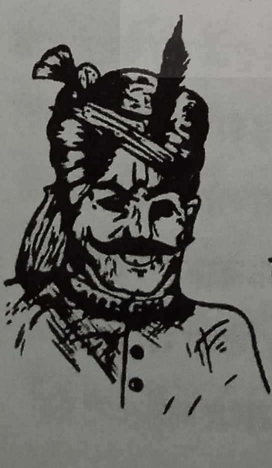
राजा नत्थ मल्ल विसेन

राजा माधव मल्ल की मृत्यु के बाद इनके पुत्र राजा नत्थमल्ल को सम्राट ने डेढ़ हजारी जात और ग्यारह सौ सवार का दर्जा देते हुए राजा मझौली घोषित किया। तुजुक जहाँगिरी के दसवे जुलूस से प्रकट होता है कि यह जुलुस 1615 ई० में हुआ था। जहाँगीर ने अपने समय में पंज हजारी जात और 1200 बाहर सौ सवार का दर्जा बढ़ाया।

तुजुक जहाँगीरी में पृष्ठ संख्या 38 पर यह इबारत लिखी हैः 'बनाम राजा नत्थमल्ल जमींदार मझौली पंज हजार रूपये मरहमत नमूदम' अर्थात् राजा नत्थमल्ल जमींदार मझौली को मैने पाँच हजार रूपये बतौर इनाम में दिया। सैय्यद नजमुल रज़ा रिजवी की पुस्तक 'अठारहवीं सदी के जमींदार' पृष्ठ 55 के अनुसार राजा नत्थ मल्ल का मनसब 1500 जात व 1100 सवार था, जिसमें 500 जात व 100 सवार वृद्धि हुई। तुजुक -ए- जहांगीरी (रोजर्स एवं बेवरिज कृत अंग्रेजी अनुवाद, सन् 1909 ई०) खण्ड-1 पृष्ठ 79, 296 केवल राम के अनुसार ''परगना मझौली के जमींदार राजा नत्थ मल्ल को जहांगीर के शासन के प्रथम वर्ष में मनसब तथा राजा की उपाधि

प्रदान की गयी थी। शासन के दसवें वर्ष में उनके मनसब को बढ़ाकर 2000/1200 कर दिया गया और उसने शासन के सोलहवें वर्ष तक (अर्थात 1621 ई० तक) सेवा की'' तजकिरात उल उमरा (फारसी एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, हस्त लिपि संख्या पी. 216 पृष्ठ 131.)

राजा नत्थमल्ल अपने शौर्य एवं पराक्रम के बल पर जहाँगीर के दरबार में निरन्तर प्रतिष्ठा प्राप्त करने लगे। उन्होंने अपनी वीरता के बल पर आसीर गढ़ के दुर्ग को शत्रुओं से बचाने का भार बादशाह जहांगीर की तरफ से अपने ऊपर लिया था जिसका जिक्र तुजुक जहाँगीरी के पृष्ठ 331 में पन्द्रहवें जुलुस मे दर्ज है। सन् 1624 ई० में खुर्रम ने जब राज लोभ के लिए विद्रोह किया तो उसे दबाने के लिये बादशाह ने शाहजादा परवेज के साथ सिपहसालार महावत खाँ और राजा नत्थमल्ल को भेजा। शाही फौज और खुर्रम की सेना से इलाहाबाद, बनारस और जौनपुर के बाद टौंस नदी के किनारे भी युद्ध हुए। जिन्हें इतिहास में जंगेटौस के नाम से जाना जाता है। इन युद्धों में राजा नत्थमल्ल और उनके भाई अजईमल्ल उर्फ फतेहबहादुर



बाबू अजय मल्ल विसेन उर्फ फतेहबहादुर मल्ल विसेन

मल्ल ने बहादुरी के जौहर दिखलाये। जंगेटौस में तीन स्थानों पर युद्ध हुए और तीनों युद्धों में परवेज की विजय हुई। इनके नाम फतेहपुर ताल नरजा, फतहपुर डोड़हरा और फतहपुर ताल रतोय हैं। यह सब स्थान घोसी तहसील के पास तथा कोपागंज के निकट है। कोपागंज को पुराने इतिहासों में कम्पायत लिखा है।

जंगेटौंस की विजय के बाद शाहजादा परवेज और सिपहसालार महावत खाँ राजा नत्थ मल्ल को साथ लेकर बंगाल की तरफ गये और जंगेटौस में जिन लोगों ने परवेज की सहायता किया था, उन्हे जागीरें और बख्शिसें आदि दिये। बंगाल से फतहयाबी हासिल करके ये सरदार बादशाह सलामत से मिलने कश्मीर पहुँचे। वहाँ जाकर महावत खाँ ने अपनी लड़की का विवाह नकशनेदी के बेटे से किया और दहेज तथा शादी में बहुत रकम खर्च किया। दहेज में हाथी, घोड़े तथा सोना चाँदी भी दिया। महावत खाँ की यह तरक्की आसफ खाँ, जो नूरजहाँ का भाई तथा सम्राट जहाँगीर का साला था, उसे बहुत खलने लगी। महावत खाँ को नीचा दिखाने के लिए बेगम नूरजहाँ के जरिये बादशाह से चुगुली इस मजमून से किया कि जितनी रकम फतह के हाथी, घोड़े आदि हाथ लगे हैं, ये सब शाही एकवाल से मिलें हैं। इस रकम को महावत खाँ को अपने मशरफ में लाने का कोई हक नहीं है। यह सब शाही खजाने, फील खाँ ने और घोड़शाल में दाखिल होना चाहिए लेकिन महावत खाँ ने फतह के इन सामानों को अपने दामाद को दिया है। इस चुगुली का फल यह हुआ कि सम्राट ने दहेज का सब सामान, जो महावत खाँ ने अपने दामाद को दिया था, छिनवा लिया और उसके दामाद को कोड़े भी लगवाया। उसे तथा महावत खाँ

के साले को, जो पटियाला का खजान्ची था, कैद करवा लिया। आशफ खाँ को अभी सन्तोष नहीं हुआ, इसलिये उसने कहा 'खेत खाये गदहा और मारा जाये जोलहा।' आशफ खाँ की चुगुली का यह नतीजा हुआ कि बादशाह ने महावत खाँ के खिलाफ एक हुकुमनामा जारी किया कि जब तक तमाम हाथी घोड़े तथा अन्य रकमों का हिसाब अफसरेआला को न दे दें तब तक अपने को नजरबन्द समझें और सलाम मोजरे से महरूम रहें। महावत खाँ जो शिशोदिया खानदान से मुसलमान हुआ था, यह अपमान सहन न कर सका। उसने यह सोचा कि इस अपमानित जीवन व्यतीत करने के बजाये युद्ध में लड़कर मर जाना अच्छा है। अतएव उसने कश्मीर और पंजाब के पाँच हजार खूँखार एक रंग, एक जेहत राजपूतों के जरिये बादशाह को कश्मीर में घेरवा लिया और कैद कर लिया। (1625 ई०) इन राजपूतों ने बहुत से शाही आदमियों को कत्ल कर डाला। नूरजहाँ ने इस खतरनाक मौके को सम्भालने के लिए तोप और तीरन्दाजों की सेना मंगवाकर उक्त राजपूतों का सर कलम करने का प्रबन्ध किया। तलवार और बर्छे से लड़ने वाले घुड़सवार राजपूत, तोप और तीर से लाचार हो गये। 8-9 सौ राजपूत मारे गये। बहुत से पकड़कर काबुल और हजारा की तरफ ले जाकर बेच डाले गये। महावत खाँ को इन राजपूतों को बचाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, बहुतों को फौज के द्वारा अफगान सरदारों के साथ तीर्थ यात्रा के बहाने मय उनके बाल बच्चों के साथ भिन्न-भिन्न स्थानों को भेजा। कुछ हरिद्वार तीर्थ यात्रा के निमित्त मेरठ, देहरादूनऔर सहारनपुर की तरफ गये और वहीं बस गये। एक बड़ी संख्या चित्रकूट के समीप बांदा जिले में

बस गयी। बनारस की यात्रा के सिलसिले में बहुत बड़ी संख्या में राजपूत राजा नत्थमल्ल के साथ गोरखपुर आये और जगह-जगह आबाद हो गये। इस गोल में छत्तीस किस्म के राजपूत थे, जो आइना अकबरी भाग दो में दर्ज है। इन राजपूतों के विषय में आगे लिखा जायेगा।

इधर परवेज सन्1627 ई० में बहुत शराब पीने के कारण बीमार पड़ा और मर गया। तब खुर्रम निर्विरोध शाहजहाँ के नाम से दिल्ली का बादशाह बन बैठा। वह 6 फरवरी सन् 1628 को आगरा के सिहांसन पर आसीन हुआ। सिहांसनारूढ़ होते ही जंगेटौस में जिन लोगों ने परवेज का साथ दिया था, उनसे बदला लेने के लिए अब्दुल्लाह खाँ फिरोज जंग को बिहार का सूबेदार बनाया। उसके हुक्म से नदवा सराय जिला मऊ के उदमतिया ठाकुर गाँव के गाँव मुसलमान बनाये गये। फतहपुर ताल नर्जा और उसके आस-पास के लोग भी मुसलमान बना दिये गये। घोसी के वैश्य ठाकुर, आजमगढ़ के गौतम ठाकुर, सिधारी के बाबू, पिपरीडीह के पास के सिंहेलबीर आदि जो जंगेटौस में परवेज की तरफ से लड़ाई में सम्मिलित थे, मुसलमान बनाये गये। परवेजपुर, नत्थूपुर, मधुबन, तथा फतेहपुर तालरतोय के किले ढहवा दिये गये। नत्थूपुर के किले के संरक्षक मोहन पाण्डेय को राजा नत्थमल्ल और उनके खजाने का पता न बताने पर, उक्त पाण्डेय जी को सात दिनों तक थोड़ा-थोड़ा जलाकर मार डाला गया।



मोहन पाण्डेय
का
चौरा

मोहन पाण्डेय जी की समाधि नत्थूपुर कोट के आँगन मे अब भी मौजूद है। जिसे मल्लान के प्रत्येक वर्ग के लोग पूजते हैं। राजा नत्थमल्ल के पिता माधव मल्ल को अली कुली खाँ और बहादुर खाँ को हराकर ३०० वर्ग मील का इलाका जो अकबर बादशाह ने दिया था, उसे जब्त कर लिया गया।

मोहन पाण्डेय के वंशज इस समय माधव मल्ल के वंशजो के गाँव अर्थात् लखनौर, गुरुम्हा, उफरौली, जजौली, उसरी, कटघराशंकर, सीधा, नन्दौर, बस्ती, परशुरामपुर, नेवादा, बहरामपुर, लकुरा, आदि गाँवों मे पुरोहिती का काम करते हैं। ये बड़े ही मर्यादा के पात्र हैं। ये लोग बड़े स्वामिभक्त पुरोहित हैं।

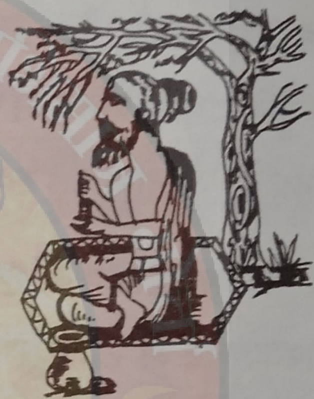
इस प्रसंग में एक अत्यन्त मार्मिक अध्याय छूटा जा रहा था। परवेजपुर में राजपूताना के राजपूत सरदार और राजपूत राजे जो जंगेटौंस में मारे गये थे, उनकी स्त्रियाँ राजपुताने से आकर आजमगढ़ वर्तमान मऊ जिले में परवेजपुर के पास अधिकाधिक संख्या में चिता बनाकर जल मरीं। जमीन की खुदाई के बाद उनकी बहुत सी अस्थिपंजियां और हड्डियाँ आदि मिले हैं। उनके नाम का सतिवढ़ उनके अमर प्रेम और गौरव को दिखा रहे हैं। प्रेम और बलिदान का यह उदाहरण अपना शानी रखता है अर्थात् अद्वितीय है। इतनी दूर की यात्रा और वह भी जल कर मरने के लिये, यह अद्भुत प्रेम और समर्पण हैं।

उधर महाराजा भीम मल्ल की 1603 ई० में मृत्यु हो गयी। (क्षत्रिय कल्प लता के लेखक बब्बन सिंह के अनुसार) महाराजा भीम

मल्ल के पश्चात राजा नारायण मल्ल मालिक रियासत मझौली हुए। उनके बाद राजा रुप मल्ल हुए। राजा रुप मल्ल के बाद विक्रमादित्य मल्ल और उनके बाद पूरण मल्ल मझौली के राजा हुए।

राजा बोध मल्ल और उनके बाद के मझौली राजे

राजा बुद्ध किशोर मल्ल उर्फ बोध मल्ल उर्फ राजा सलीम



राजा पूरण मल्ल के उपरान्त राजा बोध मल्ल (105 पीढ़ी) मझौली के राजा हुए। सम्राट औरंगजेब ने इनसे जजिया कर की मांग किया। जब इन्होने कर अदा नहीं किया तो इनके ऊपर आक्रमण की धमकी दिया। राजा बोधमल्ल ने अपनी सहायता हेतु पडरौना के तत्कालीन रईस रायनाथ राय व हुलास राय से प्रार्थना किया। जो चिट्ठी उन्होंने इस सम्बन्ध मे उक्त रईसों को लिखी थी उसकी मूल प्रतिलिपि राज पडरौना के जिक्र के साथ लिखा जायेगा।

'विसेन वंश वाटिका' के लेखक महोदय लिखते हैं कि कुछ दिन के बाद औरंगजेब बादशाह ने राजाबोध मल्ल को दिल्ली बुलाकर बरबस मुसलमान बना दिया और सलीम खाँ नाम रखा। बोध

मल्ल मुसलमान होने पर फिर कोट में नहीं आये और अलग गाँव में, जिसका नाम उन्होंने सलेमपुर रखा, रहने लगे। पर मरने पर उनकी कब्र मझौली के राजघाट के पास पक्की बनवायी गयी।

राजा बोध मल्ल की मृत्यु के पश्चात रानी के अनुरोध के बावजूद, उनके पट्टीदार एवं रिश्तेदार यह कह कर ब्रह्मभोज में शामिल नहीं हुए कि राजा तो मुसलमान हो गये हैं। उनके साथ हम भाता खानी नहीं रख सकते। मधुबन व गोण्डा के विसेनों ने खास तौर पर विरोध रखा। फलस्वरुप मझौली एवं मधुवन के सम्बधों में दरार पड़ गई।

राजा बोध मल्ल के पश्चात उनके पुत्र भवानी मल्ल राजा मझौली हुए। वे 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में राज किये। राजा भवानी मल्ल की मृत्यु के समय उनके पुत्र भीम मल्ल अवयस्क थे। अतः जमींदारी राजा भवानी मल्ल के भाई बाबू लक्ष्मी मल्ल को मिली किन्तु वह भी अल्पकाल में ही चल बसे। और उस समय भी उनके पुत्र शिव मल्ल एवं कृष्ण प्रसाद मल्ल अवयस्क थे। अतः राजा भवानी मल्ल के तीसरे एवं सबसे छोटे भाई बाबू आनन्द मल्ल को जमींदारी मिली। इन्होने, राजा भवानी मल्ल के पुत्र भीम मल्ल को वयस्क होने पर, मझौली की जमींदारी सौंप दी। राजा भीम मल्ल के अवध के नवाब सआदत खां से अच्छे सम्बन्ध न थे परन्तु उन पर नवाब का नियन्त्रण पूरी तरह से स्थापित भी नहीं हो सका था। राजा भीम मल्ल की निरसन्तान मृत्यु होने पर उनके चचरे भाई, बाबू शिव मल्ल पुत्र राजा लक्ष्मी मल्ल, उनके उत्तराधिकारी बने। राजा शिव मल्ल ने अवध के नवाब सफदरजंग से मैत्री पूर्वक सम्बन्ध

स्थापित किया परन्तु सफदर जंग की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र शुजाउद्दौला सन्1753 ई० में अवध और इलाहाबाद का सूबेदार बना। राजा शिव मल्ल के नवाब शुजाउद्दौला से सम्बन्ध विगड़ गये। वह उससे भयभीत रहते थे। वह डर कर बिहार प्रान्त में स्थित सारन जिले के सोहगरा नामक स्थान के जंगलों में कच्ची गढ़ी बनाकर रहने लगे और वहीं से अपनी जमींदारी की व्यवस्था करते थे। राजा शिव मल्ल की सन् 1781 ई० में मृत्यु हो गयी और उसके पश्चात उनके पुत्र अजीत मल्ल राजा बने। राजा अजीत मल्ल का नवाब शुजाउद्दौला से संघर्ष चलता रहा।

नवाब शुजाउद्दौला बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों से पराजित हुआ। इससे प्रोत्साहित होकर राजा अजीत मल्ल सहित गोरखपुर के कई जमींदारों ने विद्रोही आचरण अपनाया। नवाब के अधिकारी अबुल बख्त खां ने अंग्रेजी सेनाओं को सलेमपुर में प्रवेश करने से रोक दिया। मुफ्ती गुलाम हजरत (पृष्ठ 10) के अनुसार राजा अजीत मल्ल को मार डाला गया। राजा अजीत मल्ल का केवल नवाब के चकलादार गीगा मल्ल से संघर्ष में घायल होने का विवरण मिलता है। लाल खड्ग बहादुर मल्ल के अनुसार राजा अजीत मल्ल सन् 1805 ई० में मरे। उनका आजीवन मझौली पर अधिकार बना रहा। उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी रानी दिलराज कुँवरि ने सन् 1815 ई० से सन् 1835 ई० तक राज्य का प्रबन्ध देखा।

18 वीं शताब्दी में मझौली की स्थिति में निरन्तर ह्रास हुआ। और जमींदारी घटती रही। जो राजा मझौली अकबर के समय में स्वायत्त सरदारों की श्रेणी में आता था, उसकी हैसियत राजा अजीत

मल्ल के समय मात्र 3451 रु० वार्षिक नानकार तथा राजस्व मात्र 21,513 रु० वार्षिक रह गया।

(साभार- 'अट्ठारहवीं सदी के जमींदार '
'पूर्वी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन' सन् 1988 पृष्ठ 56
सैय्यद नज़मुल रिज़वी)

राजा अजीत मल्ल की मात्र दो पुत्रियाँ थीं, कोई पुत्र न था। राजा अपने वंश को ही आगे बढ़ाना चाहते थे। अतः यद्यपि कि उनका अपने चचेरे भाई बाबू सर्वजीत मल्ल से सम्बन्ध अच्छे नहीं थे तथा वे उनसे अलग टंडवा नामक स्थान में रहते थे, के पुत्र तेज मल्ल को बाद में गोद लिया तथा यही बाबू तेज मल्ल, राजा अजीत मल्ल के बाद सन् 1835 ई० में मझौली के जमींदार हुए। राजा तेज मल्ल के पश्चात उनके पुत्र उदय नारायण मल्ल राजा हुए।

सन् 1857 ई० की क्रांति के समय राजा उदय नारायण मल्ल ने अंग्रेजों का साथ दिया जिससे उनके सम्बन्ध अंग्रेजों से अच्छे हो गये तथा बाद में उसका लाभ मिला। राजा उदय नारायण मल्ल के अंग्रेजों के साथ देने के कारण मधुबन के विसेनों के साथ जो वैमनस्यता चली आ रही थी, और बढ़ गयी। नरहरपुर, बड़हलगंज के प्रतापी स्वतन्त्रता सेनानी राजा हरि प्रसाद मल्ल भी इस कारण से राजा उदय नारायण मल्ल से नाराज रहते थे।

राजा उदय नारायण मल्ल के पुत्र खड्ग बहादुर मल्ल थे। लाल खड्ग बहादुर मल्ल पढ़े लिखे व्यक्ति थे। उन्होंने गोरखपुर में पत्रकारिता की शुरुआत की एवं उसे आगे बढ़ाने में भी सहयोग किया। लेखन के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। उन्होने विसेन वंश वाटिका नामक पुस्तक लिखी। यद्यपि उन्हें इतिहास का कोई वैज्ञानिक ज्ञान न था। अपनी इस कमी को उन्होनें छिपाया नहीं। कई जगह पर उन्होंने लिखा है कि 'जैसा सुना वैसा लिख

दिया। भगवान जाने क्या सत्य है?' इस प्रकार उनकी पुस्तक में कई कमियां भी परिलक्षित होती हैं एवं कुछ स्थानों पर विरोधाभास भी है तथा सत्य से परे भी तथ्य हैं परन्तु फिर भी विसेन वंश के सम्बन्ध में उनकी पुस्तक से जानकारी मिलती है। अपनी पुस्तक में उन्होंनें अपने पूर्वज राजा नत्थ मल्ल का नाम जान बूझ कर या अनजाने में छोड़ दिया है, जबकि राजा नत्थ मल्ल का जिक्र तुजुक जहाँगीरी में कई स्थानों पर बादशाह जहाँगीर ने स्वंय जमींदार मझौली के रुप में किया है। इस गलती के कारण लाल खड्ग बहादुर मल्ल विवादास्पद बन गये एवं उनकी आलोचना होती है।

राजा उदय नारायण मल्ल के पश्चात उनके पौत्र कौशल किशोर मल्ल (पुत्र लाल खड्ग बहादुर मल्ल) राजा हुए। राजा कौशल किशोर मल्ल ने विकासोन्मुख कार्य किया। लखनऊ के अति प्रतिष्ठित किंग जार्ज मेडिकल कालेज के निर्माण हेतु दान दिया जिसका उल्लेख वहाँ के प्रशासनिक भवन में बैंक के पास शिलालेख पर अभी भी है। उन्होंने विशाल विष्णु मन्दिर का भी निर्माण गोरखपुर में कराया, जो आज भी शिलापट्ट पर अंकित है।

राजा कौशल किशोर मल्ल के बाद उनकी रानी श्याम सुन्दरी कुँवरि ने राज्य सम्भाला। वह लावल्द मरीं। अतः मझौली राज, राजा बोध मल्ल के तीसरे पुत्र आनन्द मल्ल के आठवें वंशज इन्द्रजीत बहादुर मल्ल को मिली। तत्पश्चात बलभद्र नारायण मल्ल राजा हुए। तदोपरान्त उनके पुत्र वर्तमान राजा अवधेश प्रताप मल्ल हैं। वह अपने क्षेत्र सलेमपुर का विधान सभा में प्रतिनिधित्व कर चुकें हैं। उनका अभी हाल में ही निधन हुआ है।

विसेन वंश की शाखाएं

विसेन वंश की शाखायें देवरिया के अतिरिक्त गोरखपुर जनपद व अन्य जनपदों में भी आबाद हुईं। उनमें मुख्य आजमगढ़, मऊ, गोण्डा, मझगांवा, बहराईच, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, फतेहपुर वगैरह हैं। इन रियासतों का वर्णन संक्षेप में दिया जा रहा है :

विसेन वंश की शाखायें 'आइना अवध' के अनुसार

राय होम मल्ल मौरिस आला राजा हनुमन्त सिंह ताल्लुकेदार कालाकांकर रामपुर जिला प्रतापगढ़ व राम प्रताप मल्ल सिंह मौरिसआला देवी बक्श सिंह आखिरी ताल्लुकेदार गोण्डा व भैया महन्थ शाह मौरिस भैया रतन सिंह ताल्लुकेदार मझगावां जिला-गोण्डा अपनी-अपनी बिरादरी लेकर बगरज अनायत (मदद) राजगान कन्तित के शरीक हुए। राजा कन्तित सिकन्दर लोदी से परास्त होकर 915 हिजरी तद्नुसार सन् 1507 ई० में भाग गये। तीनों लोग वहाँ से भागकर मझौली वापस आये। राजा मझौली के सम्बन्ध सिकन्दर लोदी से अच्छे थे। वह सुल्तान से बिना कारण शत्रुता मोल नहीं लेना चाहते थे। इस लिए उन्होंने राय दिया कि इस समय आप लोगों का इस रियासत में रहना इस राज के बर्बादी का कारण होगा। अतएव अच्छा होगा कि कुछ दिन कहीं रहकर अपना समय काटें।

कैफियत राय होम मल्ल

राय होम मल्ल पुत्र बाबू रूपमल्ल पुत्र राजारघुवंश मल्ल पहले मौजा-बड़गांव परगना-मानिक पुर में मुकीम हुआ। जब सुल्तान सिकन्दर लोदी को उनकी जमायत का हाल मालूम हुआ तो सीमान्त

की रक्षा हेतु उसने राय होम मल्ल को मुलाजिम करके आराजी मौजा देरू मे जो कि उस समय जंगल था, उनका डेरा नियुक्त किया और उनके चारों तरफ के 12 गांव उनके वेतन में लगाकर बतौर नानकारे के दिये। होम मल्ल ने प्रतापगढ़ के सीमान्त जंगलों को काटकर कुछ गांव बसाया और जैसे-जैसे रियासत सुलतान की बरबादी होती गयी इस कौम की उन्नति हुई।

राय होम मल्ल की चौथी पुश्त में राय रघु हुआ जो हाजिर बास कचहरी था। ताल्लुकेदार जब मालगुजारी न दे पाते थे तब राय रघु उनकी मालगुजारी जमा कर देते थे और उनके ऋणों को अदा कर देते थे। तब वे ताल्लुकेदार अपनी भूमि और इलाके से इस्तीफा दे देते थे। राय रघु बकिये की अदायगी करके उन मौजों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इस सेवा के कार्य के लिए हाकिम ने राय रघु को तमाम तहसील कुण्डा का चौधरी नियुक्त कर दिया। जब वह मरे तब उनके पुत्रगण रायकाशी, राय आसकरन, राय खेम करन, बँटवारा करके एक-एक ताल्लुका के मालिक हो गये। नवाब शुजाउद्दौला के बीमारी के बाद सुल्तानी खानदान की बरबादी हुई तब इन लोगों ने कुल तहसील में कब्जा कर अपनी जमीन्दारी कायम कर लिया। नवाब नासिरउद्दीन हैदर की हुकुमत के प्रारम्भिक दिनों में नवाबी राज मनिकपुर के ईर्द गिर्द कुछ देहात तक सीमित रह गया। शेष पर अधिकार इन विसेन कौम का हो गया। राय होम मल्ल का वंशवृक्ष पुस्तक के अन्तिम में दिया गया है। होम मल्ल का वास्तविक नाम होम मल्ल है। इनके नाम के पहले राय शब्द लगा हुआ है। ऐसा इसलिए हुआ कि होम मल्ल का ननिहाल कन्तित के राजा राय

गुरूदनदेव के यहाँ था। राय गुरदन देव की सन्तान न थी। उन्होंने अपने नाती (पुत्री के पुत्र) होम मल्ल को बहुत दिनों तक अपने यहाँ रखा। ननिहाल के लोगों के नाम के पहले राय कहा और लिखा जाता था। होम मल्ल को भी ननिहाल के लोग राय होम मल्ल ही कहते थे और इस प्रकार होम मल्ल का नाम सम्बोधन हेतु राय होम मल्ल कहा और लिखा जाने लगा। कई पुश्त तक राय शब्द लिखने और सम्बोधन के लिये प्रयोग होता रहा। कालान्तर में राय शब्द हट गया और मल्ल की भी जगह सिंह लिखा जाने लगा।

कैफियत ताल्लुकेदार धिगवस : राय काशी को बँटवारे में यह ताल्लुका मिला और उन्होंने उसको अपनी राजधानी बनाया। इनके पुत्र चैन सिंह हुए और चैन सिंह के दो पुत्र अवसान सिंह व आसान सिंह हुए।

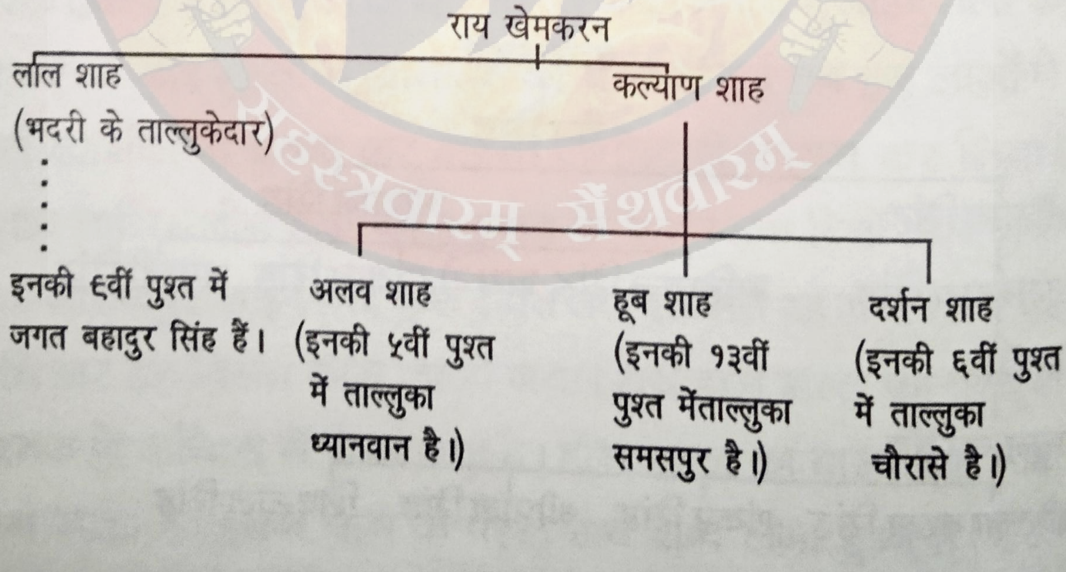
वंशावली राय काशी निम्नलिखित हैं :-

- राय काशी
  - चैन सिंह
    - औसान सिंह
      - जगन्नाथ सिंह
        - देव सिंह
          - रघुनाथ सिंह
            - शीतला बख्श सिंह
            - शंकर सिंह
            - श्रीपाल सिंह
            - शिवमाल सिंह
    - आसान सिंह
      - महिपाल सिंह
      - राय मेहरबान सिंह
      - भवानी सिंह

अवसान सिंह मालिक राजगद्दी हुआ जिसकी नस्ल मे अब मुस्मात् जानकी कंवर मालिक ताल्लुका हुई और अवसान सिंह बतौर गुजारे के ताल्लुका टंडवा पाकर अलग हो गया। महिपाल सिंह अन्तिम ताल्लुकेदार थे। इनके पुत्र न था। उनके बाद उनकी पत्नी मुस्मात् कैलाशी कुंवर मालिक हुई। वह 1873 ई० में मर गयीं। रघुनाथ सिंह का ताल्लुका उनकी मृत्यु के बाद उनके दो पुत्र शीतला बक्श सिंह व शंकर सिंह मे नौ आने और सात आने के हिस्से में बट गया।

राय खेम करन ने बँटवारे में मौजा-वीरा और कुछ मौजे पाया। उसके चार ताल्लुके थे भदरी, शमपुर, चौरास और ध्यानवान।

वंशवली राय खेमकरन



कैफियत ताल्लुका भदरी :- लाल साह ने भदरी अपनी राजगद्दी स्थापित किया इलाके की तरक्की के लिये दौड़ धूप आरम्भ किया और थोड़े दिनों में बारह गांव का ताल्लुकेदार हो गया। उसकी छठी पुश्त में रायजालीम सिंह हुआ वह बीस मौजों का मालिक हुआ। लाल साह के नवी पुश्त में जगत बहादुर सिंह ताल्लुकेदार भदरी हुए।

कैफियत ताल्लुका समसपुर :- यह इलाका तारीख अलहदगी से चार पुश्त तक असली हालत पर रहा। कुछ अवनति ताल्लुका देहात का नहीं हुआ। पांचवी पुश्त में अयोध्या बक्श सिंह उत्साही व्यक्ति हुए। उन्होंने तलवार के बल पर कई मौजे कब्जा किया। उसके बाद उनके पुत्र और उनके बाद उनकी बहू बैजनाथ कुंवर मालिक ताल्लुका हुई। फिर उसका देवर बाबू ईश्वरी बक्श सिंह मुद्दई ताल्लुका हुआ। बाबू ईश्वरी बक्श सिंह के ताल्लुके के चार नाम निम्नलिखित हैं: 1. ठकुराईन बैजनाथ कुंअर, 2. बाबू छत्रपाल सिंह पुत्र ईध्वरी बक्श सिंह, 3. चन्द्रपाल सिंह, 4. सूर जयमल्ल सिंह दावा दाखिल किये। कई वर्ष इस्तगासा अदालत पेश रहा। चन्द्र पाल सिंह और सूरज पाल सिंह इतने कर्जदार हो गये कि इनकी गद्दी की रक्षा की भी कोई आशा नहीं रही। अलबत्ता बाबू छत्रपाल सिंह का इलाका उनकी अक्ल और सामर्थ्य से अब तक मौजूद है।

कैफियत चौरास : यह ताल्लुका ता अमले शाही उसी हैसियत से रहा जैसे बटवारे में पाया गया था। अहले खानदान इसके धनवान हैं।

कैफियत ताल्लुका ध्यानवान :- यद्यपि यह ताल्लुका सब ताल्लुकादारों

में छोटा था परन्तु जिस कदर इस इलाके में मालिक हुए, उनकी तलवारें और ताल्लुकेदारी में प्रसिद्ध थीं, काविज सातवी पुश्त में हैं। इनके वंशज मौजा-इन्दुआ विक्रम में निवास करते हैं। होम मल्ल के वंशजों के अतिरिक्त और भी विसेन वंशी इस क्षेत्र में पहले से आबाद थे। उनका आगमन सुल्तान मोहम्मद शाह तुगलक के समय का है। ये कौम दो बार इस क्षेत्र में आयी। पहले जो आयी वो मौजा-कुनानवान खेनीपुर, राजापुर ध्यानवान, महीपुर, सक्स, पुरनीऊ जिला-गोण्डा तथा दूसरी बार जो आई, इलाहाबाद, फतेहपुर, जिलो में कई मौजो में आबाद हुई।

कौम विसेन जिला-गोण्डा :- रामप्रताप मल्ल सिंह कनिष्ठ पुत्र राजा नृपमल्ल मझौली और भईया महगंशाह खुरासों के ताल्लुकेदार के यहाँ नौकरी कर लिये धीरे-धीरे अपने पराक्रम से इन लोगों ने कुछ मौजे जंगल तराशी करके आबाद किये। रामप्रताप सिंह मौजा गोहानी और महंगशाह गौर वगैरह आबाद किये। राजा अजल सिंह वर्षा के कारण मकान के गिर जाने से हिजरी 961 तद्नुसार सन् 1554 ई० में मर गये। उनके मरने के बाद तमाम रियासत खुरासों पर इन दोनों का कब्जा हो गया।

कैफियत औलाद राम प्रताप मल्ल सिंह - जब उनके पुत्र शाह सिंह का ज्येष्ठ पुत्र सर्वजीत सिंह लावल्द मर गया तो उसका भाई कुसुम मल्ल सिंह इलाके की उन्नति के लिए दौड़ धूप करने लगा और तरीके राजगद्दी कायम करके अहलेकांट होगया। तब उसका पुत्र मानसिंह उसके स्थान पर आया। उसके पराक्रम से राज्य की बड़ी उन्नति हुई। उसको एक अत्यन्त सुन्दर और सुडौल हाथी किसी प्रकार हाथ लग

गयी। ग्यारहवें जुलूस में जबकि सम्राट जहाँगीर अजमेर में था, महचाननवीस ने हाथी की बड़ाई सम्राट के सामने इतना किया कि सम्राट को उस हाथी के लेने के लिए शौक पैदा हो गया। सम्राट ने खुरासों के जमीन्दार मिर्जा अली बेग को आज्ञा दिया कि वह जमीन्दार मानसिंह और उसके हाथी को लेकर अजमेर उपस्थित हों। जमीन्दार ने आज्ञा का पालन किया। सम्राट ने हाथी को दाखिल खानयें सुल्तानी (सम्राट की सेना हेतु) आदेश देकर मानसिंह को राजा की उपाधि दिया और ताल्लुका गोहानी की जमीन्दारी की सनद उसके नाम से मुन्तकिल कर दिया। जब वह सम्राट की अनायतों से माला माल होकर अपने घर आया तो विचार हुआ कि वह राजाओं की तरह राजधानी स्थापित करे। ताकि पूरा राजा गिना जाये। गोहानी और खुरासों मे राजधानी स्थापित करना उचित न समझा क्योंकि गोहानी में उसके मौरिस जागीरदार के रूप में थे और खुरासों में हाकिमों के निवास थे। अतएव उसने अपनी राजधानी गोदी में स्थापित किया। यही गोदी वर्तमान गोण्डा हैं।

गोण्डा नाम पड़ने का कारण :- कुछ लोगो का कहना है कि राजा रामचन्द्र के वंशजों की गायें, वहाँ रहा करतीं थीं और उक्त स्थान के भीतर बाँसों का एक हेड़ा (हाता) उन मवेशियों को रात मे रहने के लिए बनवाया गया था। इसी हाते में मवेशी ठहराये जाते थे। उस स्थान को जहाँ मवेशी रहते हैं, गोंथ कहते हैं। इसी कारण इस जंगल का नाम गोंथ पड़ा और कुछ लोग यह कहते हैं कि खुरासों के राजाओं की मवेशियों का यह गोंथ था। मालूम नहीं पहली कौल सही है या दूसरी। बहरहाल गोंथ होने में कुछ सन्देह नहीं। कसरते इस्तेमाल (प्रयोग की

बहुतायत) से ये गोंथ शब्द बदलकर गोण्डा हो गया।

राजा मान सिंह और उसके वंशज सदा राजकीय कृपा प्राप्त करते थे और अन्य ताल्लुकेदारो की अपेक्षा सम्राट के निकट मुअज्ज़िज और मुमताज थे। सन् 1857 ई० के विद्रोह में राजा देवी बक्श सिंह बागी हो गया। यही आखिरी ताल्लुकेदार थे। शिवालिक पहाड़ पर चट्टानो से टकराकर मर गया। तब उसका इलाका जब्त सरकार होकर महाराजा मानसिंह पुत्र राजा दर्शन सिंह नाजिम को सरकार का स्वामिभक्त होने के कारण दिया गया। इस ताल्लुकेदार के वंश में और छोटे-छोटे ताल्लुकेदार हुए जो जिले और जिले के बाहर आबाद हो गये।

'विसेन वंशागम' के लेखक कुंवर छत्रपत सिंह ने उक्त पुस्तक में लिखा है कि राजा रतन मल्ल के बाद राय मल्ल उनके बाद राजा नृप मल्ल मझौली के राजा हुए। इन्ही राजा नृप मल्ल के कनिष्ठ पुत्र राम प्रताप मल्ल थे। उन्होंने एक अलग विसेन वंश की नींव डाली जिसमें भिनगा और मनिकापुर के राजघराने निकले।

कैफियत वंशज भैया महंग शाह : महंग शाह के बाद दिलीप शाह ताल्लुका गोरा पर काविज था। महंग शाह के बाद उसने तमाम परगना महदेवा पर कब्जा कर लिया। उसके वंशजों की संख्या बहुत बढ़ी और उन्होंने कई मौजों को अपने अधिकार में कर लिया। उसकी अधिक संख्या और बहादुरी से शाही अफसरान भी परेशान रहे परन्तु इन लोगों ने सिवाय परगना महदेवा जिसे उनके पूर्वज दिलीप शाह ने प्राप्त किया था, अपनी तरफ से उन्नति नहीं किया बल्कि अहमद और वाजिद अली शाह के समय काल में अपने-अपने हिस्से

के मौजे पूरा या उनका अंश बेच डाला। भैया हरसतन सिंह बलरामपुर व तुलसीपुर जिला-गोण्डा के महाराजा दरगंज सिंह के यहाँ नौकरी कर लिया। गदर के जमाने में इन्होंने सरकार की खैरख्वाही किया। इस खैरख्वाही के सिलसिले में अवध के तत्कालीन चीफ कमिश्नर ने भैया रतन सिंह को ताल्लुका अध्यापार तहसील अतरौलिया जिला-गोण्डा की जमींदारी दिया। यद्यपि कि उनकी मौरूसी रियासत बहुत छोटी थी और हैसियत ताल्लुकेदारी की नहीं रखती थी परन्तु सरकार की अनायत से उन्हें इसकी ताल्लुकेदारी भी मझगांवा के साथ प्राप्त हुई।

मौरिसाने ताल्लुकेदारान जिला प्रतापगढ़ और गोण्डा की राज मझौली के अलहदगी की तारीखसे अब तक विरादाना आमोदरफ्त नही हुई थी। जब राजा हनुमन्त सिंह ताल्लुकोर रामपुर कालाकांकर जिला प्रतापगढ़ ने वाजिद अली शाह के समकालीन रेजिमेण्ट सलीम साहब से राजा की पदवी प्राप्त किया तो उन्होंने राजा मझौली के साथ भात खाने का सिलसिला जारी किया। मुद्दत तक तहरीक (पत्रव्यवहार) होती रही। तब सन् 1861 ई० में राजा हनुमन्त सिंह स्वयं मझौली गये और दस हजार रूपये बतौर पेशकश के राजा मझौली को नजर देकर उनके साथ भात खाये।

आईना अवध के लेखक के प्रश्न पर कि क्या वे ताल्लुकेदारान गोण्डा के साथ भात खा सकते हैं? राजा मझौली का ब्यान है :- कि ताल्लुकेदारान विसेन प्रतापगढ़ के साथ भात खा सकते हैं। लेकिन ताल्लुकेदारान गोण्डा को अपने साथ भात नहीं खिला सकते।

लेखक "आईना अवध" का मतः राजगाने गोण्डा बमुकाबिले राजगाने प्रतापगढ़ बड़े साहब अकदार गुजरे कि किसी ताल्लुकेदार

प्रतापगढ़ की उनके मुकालिबे में कोई हमसरी (बराबरी) न थी। अगर यह लोग भी सिलसिले जजमानी मिस्ल राजा हनुमन्त सिंह करते तो उनके साथ राजा मझौली को भात खाने में कोई उज्र न होता।

'विसेन वंश वाटिका' के पृष्ठ संख्या 81 पर अलहदगी और पुनः मिलन के सिलसिले में यह लिखा है सन् 1861 ई० के अगहन महीने में इन्होंने सकुटुम्ब अयोध्या की यात्रा की जहाँ कालाकांकर के राजा हनुमन्त सिंह भी अपने पौत्र रामपाल सिंह के साथ लेकर आये थे। इनके पूर्व पुरूष जबसे मझौली छोड़कर वहां गये थे, परस्पर खाने-पीने या आने-जाने का व्यवहार टूट गया था सो इन दोनों पुरूषों ने प्रीती पूर्वक मिलकर साथ भोजन किया और फिर एक हुए।

इस अवतरण मे इतिहासिकता नहीं है पर उक्त ''आईना अवध'' एक प्रमाणित इतिहास है।



द्वितीय अध्याय

मुगल काल में बाहर से आये हुए सैथवार सम्बोधित बहु वंशीय क्षत्रिय

सैथवार शब्द की उत्पत्ति

सैथवार राजपूत गौड़ राजपूतों की सन्ताने हैं। इनकी मूल राजधानी गोण्डा जिले में सिहत थी। सहतवार राजपूतों का जिक्र 'आईने अकबरी' भाग-2 के पृष्ठ संख्या 93, 151, 314 आदि पर मिलता है। इनका जिक्र 'टाड के राजस्थान' में भी है। टाडसाहब पृष्ठ संख्या 297 में लिखते हैं कि कौम सिहत जो खैरागढ़ से आयी है, कौम सुमाली में से है और इन लोगों का सम्बन्ध राजपूतों से है। लिहाजा यह कौम सिहत भी राजपूत हैं।

सिहत या गौड़ राजपूत सैथवार सहतवार सिन्दवाल इत्यादि नामों से सिहत से आने के कारण कहलाने लगे।

सहतवार राजपूत अत्यन्त बीर और पराक्रमी होते थे। सहतवार लोग द्वाबा विष जालन्धर पंजाब व कश्मीर के कई जिलों में सहतवार राजपूत नाम से प्रसिद्ध रहे।

सहतवार राजपूत अन्य स्थानो पर अब भी हैं। इलाहाबाद से रीवा के मार्ग में जैनवार स्टेशन के निकट अब भी ये लोग आबाद हैं। 'आईना अकबरी' में किसी स्थान पर गौड़ राजपूत लिखा पाया जाता है। उसी मुकाम पर दूसरी जिल्द में सहतवार पंजाब और कश्मीर के राजपूतों को चौधरी की पदवी और जागीरें बादशाह

जहांगीर ने इस सिलसिले में दिया कि इन राजपूतों ने खुसरो की गिरफ्तारी में सहायता दिया था। इसका उल्लेख 'तुजुक जहाँगीरी' में पृष्ठ संख्या 33 मे इस प्रकार दर्ज हैः

'जमीन्दार की दरी ने खितमत लवाजिम खैरख्वाही बजा आउर्दा बुलन्द खिताबे चौधरी व जमीन्दारी चेनाव व बहत फरमूदम् व बतरीके मद्द व मुआस हर एक मरहमत नमूदम्'

अर्थात चेनाव व बहत के तमाम जमीन्दारो को जिन्होंने गिरफ्तारी खुसरो में खैरख्वाही किया था, चौधरी की पदवी से विभूषित किया और प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार जमीन्दारी जीविका के लिए दिया।

सैथवार राजपूतों का मध्य युग में पंजाब और कश्मीर से गोरखपुर की तरफ आना

'तुजुक जहाँगीरी' के पृष्ठ संख्या 410 से 420 तक के देखने से पता चलता है कि महावत खाँ जहाँगीर बादशाह के उच्चाधिकारियों में से था लेकिन नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ को महावत खाँ के गौरव और प्रतिष्ठा से बहुत जलन रहती थी। अतः उसने महावत खाँ के विरूद्ध एक षडयन्त्र रचा और बादशाह जहाँगीर से इस मजमून की चुगुली किया कि जंगे टौस की फतहयावी में जितनी रकम प्राप्त हुई है, वह सब शाही अकबाल से प्राप्त हुई है। महावत खाँ को उन रकमों को स्वयं के मशरफ में नहीं प्रयोग करना चाहिए। बल्कि उसको शाही खजाने में जमा करना चाहिए। घोड़े हाथी जो भी फतहयाबी से हासिल हुए हैं उसे शाही हथिसार तथा घुडसाल में जमा कर देना चाहिए। सम्राट ने आसफ खाँ की बात मान लिया और महावत खाँ के दामाद से, जो उसे दहेज में महावत खाँ ने दिया

छिनवा लिया और कोड़े भी लगवाये तथा उसके साले को, जो कि पटियाले का खजान्ची था, कैद करा दिया। बादशाह उस समय कश्मीर में था। उसने हुकुम दिया कि महावत खाँ जंगेटौस की फतहयाबी में प्राप्त सब धन, हाथी, घोड़े इत्यादि सभी सामान अफसरेआला को जमा कर दें। जबतक हुकुम नहीं बजा लाते अपने को नजरबन्द समझें और सलाम मुजरे से महरूम रहें।

महावत खां अपनी इस बेइज्ज़ती को सहन न कर सका। उसने पंजाब और कश्मीर के पाँच हजार खूँखार राजपूतों की एक सेना लेकर बादशाह जहाँगीर को कश्मीर में (सन् 1625 ई० में) कैद कर लिया और बहुत से शाही सैनिकों को मरवा डाला। इस खतरनाक मौके को सम्भालने के लिए नूरजहाँ ने तोप और तीर की फौज का इस्तेमाल किया। तलवार से लड़ने वाले ये राजपूत तोप के सामने मजबूर हो गये और आठ-नौ सौ राजपूत मार डाले गये। बहुत से कैद कर लिये गये। इस भयानक स्थिति को सम्भालने में महावत खाँ को बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उसने विश्वास पात्र और बहादुर अफगान सरदारों के साथ इन राजपूतों को मय बच्चों सहित भिन्न-भिन्न प्रान्तों और स्थानों पर भेजवाया। जहाँ जहाँ ये राजपूत गये वहाँ वे अपनी राजपूती और प्रतिष्ठा को गुप्त रूप से निबाहने लगे। इनमे से कुछ आगरा के देहातो में, कुछ मेरठ, सहारनपुर, देहरादून की ओर चले गये, कुछ कालिन्जर की तरफ गये। बहुत से प्रतिष्ठित राजपूत राजा नत्थमल्ल, जो महावत खां के दाहिने हाथ थे और जंगे टौस की फतहयाबी के श्रेय के अधिकारी थे, के साथ बनारस और गोरखपुर की तरफ आये।

गोरखपुर जनपद में उस समय जंगल बहुतायत से थे और घने भी थे। यहाँ उनको खेती करने तथा छिपने दोनों की सुविधा हुई।

लेहाजा वे इसी क्षेत्र में आबाद हो गये। इस गोल में कई वंश के क्षत्रिय सम्मिलित थे। जैसे खड़गी, खागी, ठकुराई, सोहिल, कारकोट, उसुक, डोबी, सहत, पुष्कर, राजपल्ली, खुटहनिया, बरबास, वैश्य, सहजा, रावत, भक्खर, दर्वे, सेहतवार, गौड़, बसयार, सोहर, चूना, इकौना के जनवार इत्यादि।

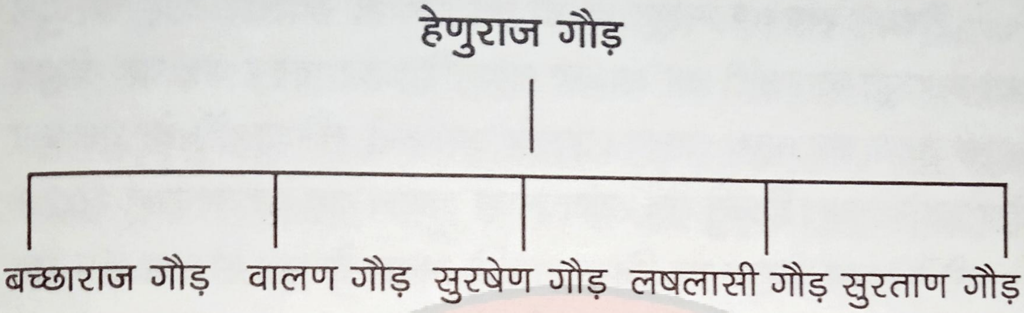
अब हम गौड़ राजपूतों की उत्पत्ति पर थोड़ा विचार करेंगे।

ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में क्षत्रियों का उत्तर कौशल से राज पूताना तथा अन्य पश्चिमी क्षेत्रों में जाना और सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में इधर आना।

भारत में पहले गौड़ नाम के दो प्रदेश थे। एक बंगाल और दूसरा कौशल थे। पहले उत्तर कौशल गौड़ देश कहलाता था। वहाँ से जो लोग जहाँ भी गये, गौड़ कहलाये जैसे गौड़ ब्राह्मण, गौड़ कायस्थ और गौड़ राजपूत।

ओझा जी के अनुसार गौड़ राजपूत उत्तर कौशल से अजमेर को गये थे। गौड़ों का राजस्थान में आना ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में माना जाता है। इनके पूर्वज हेणुराजगौड़ थे। इनके पांच पुत्र थे जिनमें से बालन गौड बंगाल रहा। एक पुत्र लषणसी ने लखनऊ के पास अधिकार किया। वच्छराज बावन और सूरसेण पुष्कर स्नान करने गये और वहीं बस गये। बक्छराज अजमेर के पास बावन परोठ और सुरषेण सरवार मे काविज हुए।

हेणुराज गौड़ का वंश वृक्ष नीचे दिया जा रहा है।



हेणुराज गौड़ के वंशजों में मोतीदास गौड़, गोपालदास गौड़, विट्ठलदास गौड़ आदि प्रसिद्ध वीर हुए। राजपूतों के एक ही स्थान पर सीमित हो जाने के सम्बन्ध में श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य का विचार है कि ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में राजपूतों ने अपने को उसी प्रदेश मे सीमित रखा जहाँ पर क्षत्रिय राजवंश एकत्रित थे और क्षत्रिय का पद उन्हीं तक सीमित रखा गया जो अपनी उत्पत्ति एक पीढ़ी की स्मृति में किसी राजवंश से सिद्ध कर सकते थे और जिन्हे शताब्दियों के बौद्ध और विदेशी शासन से आये चारण गाथाओं पर अवलम्बित होना नहीं पड़ता था। राजपूताना शब्द का एक विशेष महत्व हो गया और यहाँ छत्तीस राजवंशो की परिगणना हुई। इसमें पारस्परिक विवाह उचित माना जाता था। हमें इसमें आध्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है कि ये वंश मुख्यतः राजपूताना और उसके निकट के मध्य भारत के भागों तक सीमित थे जहाँ पर ह्वेन सांग के समय में भी हिन्दू धर्म प्रबल था और जनता पर बौद्ध धर्म का प्रभाव कम था। इस सीमा के बाहर के क्षत्रिय और राजपूत असंदिग्ध नहीं माने जाते थे। इससे केन्द्रीय प्रदेश राजपूताना के राजपूतों और दक्षिण तथा बंगाल के क्षत्रियों के बीच खाई उत्पन्न हो गयी।

सिहत के गौड़ राजपूतों पर मुसलमानो के अत्याचार

सैय्यद सालार मसूद गाजी जो सैय्यद सालार साहू का पुत्र तथा महमूद गजनवी का भान्जा तथा सिपहसालार था, वह जेहाद करता हुआ बहराइच आया। उसने काफिरों (हिन्दुओं) के वध का बीड़ा उठाया था। किन्तु वह स्वंय मारा गया। यह घटना सन् 1028 ई० की है। इस जेहाद का जिक्र आईने अवध के पृष्ठ संख्या 37 पर यों है:

जब हिन्दुओं को मालूम हुआ कि महमूद गजनवी लूट पाट करने के बाद असंख्य धन सोने चाँदी जवाहिरात और सोने की मूर्तियाँ तोड़कर या पूरी अपने साथ लेकर गजनी लौट गया और इस क्षेत्र में मुसलमानों को कोई सहायता गजनी से नहीं आयेगी। तब मुस्मीयान 1. तायट, 2. मायेट, 3. राय अर्जुन, 4. राय कक्कन , 5. राय मक्कन, 6. रायकरन, 7. राय कल्याण, 8. राय मर्दान, 9. राय नकरू, 10. राय सकरू, 11. राय धर्म मल्ल, 12. राय जैपाल, 13. राय मोहन लाल, 14. राय हर किशुन, 15. राय देव व, 20. राय साहबदेव और गोण्डा, बहराईच, बस्ती और गोरखपुर के राजे और ताल्लुकेदारान इकट्ठा होकर जेहादियों पर चढ़ आये। मसूद गाजी ने भी अपने सिपाहियों के साथ इन राजाओं और ताल्लुकेदारों का सामना किया। मुकाम सूरजकुण्ड जिला बहराईच पर एक घमासान युद्ध हुआ, जिसमें मसूद गाजी के साथ उनके सब सिपाहियों का कत्ल हुआ। चूंकि समूचे मुसलमानी फौज में से कोई जिन्दा बाकी न रहा। बाजार के घोसियों ने सैय्यद मसूद गाजी और मलिक रज्जब को एक कब्र में तथा एक बड़े गढ्ढे में सभी मृतकों को दफन कर दिया। इस घटना के बाद 163 वर्षों के भीतर भारत वर्ष पर मुसलमानों का आक्रमण नहीं हुआ। (घोसियों का अर्थ है मिट्टी खोदने वाली एक जाति)

तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज को हराकर हिन्दुस्तान में मुस्लिम राज्य की नीवं डाला। मुसलमान शासकों ने मसूदगाजी को शहीद करार दिया और उसके आदमियों को धर्मयुद्ध का सैनिक करार दिया। उनके लिये मकबरे और दरगाह बनवाये गये। सैय्यद मसूद गाजी के कब्र पर मनौती मानने वाले खिचड़ी चढ़ाते हैं। सैय्यद गाजी को राजा सुहिलदेव गौड़ ने कत्ल किया था। इसीलिए गौड़ राजपूतों पर मुसलमानों की कृपादृष्टि बहुत काल तक बनी रही। सिहत के किले को मुसलमानों ने हिन्दुओं के आपसी फूट का लाभ उठाकर गिरवा दिया और वे गौड़ वंशीय राजपूतों के साथ बहुत अत्याचार किये। गौड़ वंशीय राजपूतों को सिहत छोड़ना पड़ा। वे अन्य प्रान्तों में चले गये। उनकी अधिकतम संख्या राजपूताना तथा पंजाब की तरफ भाग गयी। ***जालन्धर में पहुँचकर उन्होंने अपनी पुरानी राजधानी के नाम से सिहत परगना स्थापित किया। मंजूमला और नामो के ये लोग सहतवार या सैथवार नाम से प्रसिद्ध हुए।***

अतएव यह बात स्पष्ट हुई और ऐतिहासिक कसौटी पर खरी निकली कि गौड़ राजपूत उत्तर कौशल जिसमें सिहत एक प्रसिद्ध स्थान जिला गोण्डा का है, अपने मूल स्थान को छोड़कर वे पंजाब, कश्मीर, राजपूताना आदि प्रान्तों को ग्यारहवीं शताब्दी को चले गये और वे वहीं बस गये। उन्होंने जागीरें भी प्राप्त की और ताल्लुके कायम किये।

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध अर्थात सन् 1626 ई० में जंगे कश्मीर के बाद बहुत से राजपूत जिसमें छत्तीस-सैतीस कुटुम्ब के लोग थे, राजा नत्थमल्ल के साथ गोरखपुर की ओर आये और जगह-जगह बस गये। इसका वर्णन पहले किया जा चुका है।

सैथवार क्षत्रियों का बाहर से इस क्षेत्र में आने के और भी इतिहासिक प्रमाण हैं।

श्रद्धेय पंडित हरिनन्दन पाण्डेय, सुपरिटेन्डेन्ट, आर्किलाजिकल डिपार्टमेन्ट आफ इण्डिया पावा के मल्लो के सम्बन्ध मे लिखते हैं:

"पावा नगरी कुशीनगर से बहुत निकट थी।×××××× इस सम्बन्ध में यह नोट करना मनोरंजक है कि इस क्षेत्र में रहने वालों का एक वर्ग अपने को मल्ल कहता है। हिन्दु समाज में इन्हें सैथवार कहा जाता है। इनकी समाज में स्थिति इनके आर्थिक स्त्रोतों और स्थानीय प्रभावों पर आधारित है। इनमें से कम से कम कुछ को तो क्षत्रियों के बिल्कुल समीप स्थान मिला है।××××××××

सैथवार क्षत्रिय पडरौना तहसील में लगभग 100 गाँव अपने कब्जे में किये हुए हैं। ये सामान्यतः साफ रंग (वर्ण) के हैं और आर्य पूर्वजों के वंशज माने जाते हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि ये सैथवार आजमगढ़ के परगना लखनौर से आये हैं, जहाँ इनके भाई बन्धु अब भी एक बड़ी संख्या में निवास करते हैं और मल्ल उपाधि धारण किये हुए हैं। किन्तु मझौली के शासक जिनके दरबार में ये सैथवार सैनिक रूप में हुमायूँ के शासनकाल में इलाहाबाद के निकट से आये हुए विश्वास किये जाते हैं स्वयं उन्हीं पूर्वजों से उत्पन्न हुए समझे जाते हैं। वे मल्ल उपाधि धारण किये हुए हैं और इस उपाधि को उच्च वर्ग के सैथवारों के साथ-साथ अब भी कायम रखे हैं। सैथवार क्षत्रिय होने का दावा करते हैं। ऊपर की बातों से स्पष्ट है कि पावा के मल्लों के सम्बन्ध में अन्वेषण करते समय जो अनुभव मैने किया था वस्तुतः सत्य निकला। ये अपनी उपाधि मल्ल रखे हैं। क्षत्रियों से उत्पत्ति का इनका दावा है। यह सब बाते आधुनिक मल्लो और प्राचीन प्रसिद्ध मल्लों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध के घोतक हैं।"

इस लेख तथा अन्य इतिहासिक लेखों से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि सैथवार कहे जाने वाले क्षत्रिय इस क्षेत्र में बाहर से आये। वे यहाँ के मूल निवासी नहीं हैं। दूसरी बात यह भी स्पष्ट है कि मझौली के राजा और उनके वंशज तथा ग्राम लखनौर मधुबन के मल्ल एक ही पूर्वज की सन्ताने हैं। (पुस्तक के अंत में वंशावली देखें)

'गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास' के लेखक पंडित डाक्टर राजबली पाण्डेय द्वारा अपनी कल्पना शक्ति से सैथवार क्षत्रियों को प्राचीन संस्थागारी अथवा बौद्धिक क्षत्रिय करार दिया है। लेखक और कवि की कल्पना शक्ति अद्वितीय होती है। वे शून्य और हवाई चीजों का ऐसा वर्णन कर सकते हैं जैसे वे हाड़ माँस की वास्तविक वस्तुयें हों वे उन्हें स्थानीय निवास दे देते हैं।

"They give to airy nothing but a local habitation and a name."

उपर्युक्त पुस्तक में लिखा हे कि सैथवार शब्द प्राचीन संस्थागार (गण जातियों का सभा भवन) के ऊपर रखे हए नाम संस्थागार का प्राकृत रूप है और उनके प्राचीन अथवा अरवा चीन शब्द का घोतक है।

भगवान बुद्ध की जन्म भूमि और लीला भूमि के ये क्षत्रिय बहुत दिनों तक बौद्ध बने रहे। उनके सजातीय बौद्धिक क्षत्रिय अपनी परम्परा के कारण उनको अपने से नीचा समझते थे। भारत वर्ष में बौद्ध धर्म के समाप्त होने पर तथा कुमारिल तथा शंकराचार्य द्वारा हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार के समय गोरखपुर जनपद के बौद्ध क्षत्रिय भी हिन्दू धर्म में वापस आये। किन्तु उनके ऊपर पुराने धार्मिक मतभेद का संस्कार था। उनके हिन्दू धर्म में प्रविष्ट होने पर भी उनके सजातीय वैदिक क्षत्रिय उन्हें अपने समान सामाजिक और धार्मिक

अधिकार देने को तैयार नहीं थे।

संस्थागारिक और बौद्धिक क्षत्रियों का वर्णन किसी मध्य कालीन इतिहास या अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है। यह शब्द लेखक की कल्पना का वास्तविक रुप है। और ये संस्थाये यदि रही भी हों तो इनसे सैथवार क्षत्रियों अथवा उस गोल के अन्य क्षत्रियों से, जिनका वैवाहिक सम्बन्ध मधुबन के विसेन क्षत्रियों से है, कोई सम्बन्ध या सरोकार नहीं है।

इसी प्रकार लेखक महोदय ने मल्ल उपाधिधारी विसेन क्षत्रियों को दो भागो में बाँट दिया है एक वैदिक मल्ल दूसरा बौद्धिक मल्ल उनका कहना है कि आज़मगढ़ वर्तमान मऊ जनपद के उत्तरी भाग अर्थात् नत्थूपुर परगना और मधुबन के मल्ल बौद्धिक मल्ल हैं। मधुबन के मल्ल राजा माधव मल्ल और राजा नत्थमल्ल के वंशज हैं। इसे लेखक महोदय भी स्वीकार करते हैं। जैसा कि उन्होंने अपने उक्त पुस्तक के पृष्ठ संख्या 232 पर लिखा है।

भगवान बुद्ध का निर्वाण 480 ईसा पूर्व हुआ था। राजा माधव मल्ल का समय काल सन् 1565 ई० था। वे राजा मझौली घोषित हुए थे (अकबर बादशाह द्वारा)। क्या राजा माधव मल्ल ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था? और यदि नहीं तो कैसे सम्भव है कि ऐसे प्रभावशाली और प्रसिद्ध राजाओं का विवाह उन क्षत्रियों में हुआ हो जिन्हें वैदिक क्षत्रिय अपने से नीचा समझते थे अर्थात जो बौद्धिक अथवा संस्थागारिक थे। जिन क्षत्रियों में राजा माधव मल्ल व राजा नत्थमल्ल तथा उनके वंशजों का विवाह सम्बन्ध है, वे शुद्ध प्रमाणित क्षत्रिय हैं। जिनमें सूर्य वंश, चन्द्रवंश, नागवंश, तथा अग्निवंश के क्षत्रिय सम्मिलित हैं। इनकी जातियां तथा उप जातियां गौड़, खागी, भाटी, गहरवार, खुटहनिया, भक्खर, आदि छत्तीस-सैतीस हैं। जिनका

वर्णन ऊपर हो चुका है।

इनका विवाह सम्बन्ध स्थानीय क्षत्रियों में नहीं होता, अथवा कम होता था यह सही है लेकिन इसका कारण भी है जो स्पष्ट है। यह पहले ही बताया जा चुका है कि इन क्षत्रियों का उद्‌गम स्थान केन्द्रीय प्रदेश पंजाब, राजस्थान, अथवा उसके इर्द गिर्द है। जहाँ वंश परम्परा प्रथा थी। वे अपना वैवाहिक सम्बन्ध केवल उन्हीं राजपूत वंशों मे करते थे, जिन्होंने यह प्रमाण दे दिया कि वे प्रमाणित क्षत्रिय राजवंश की सन्तान हैं। इस गोल के बाहर के क्षत्रियों से वैवाहिक सम्बन्ध केवल उन क्षत्रियों में किये और अब तक करते आ रहे हैं जो अन्य प्रान्तों से, जिनका जिक्र पहले किया गया है, यहाँ आये हैं। उन्हें डर था कि अन्यत्र वैवाहिक सम्बन्ध करने से वे क्षत्रित्तर (अक्षत्रिय) हो जायेंगे। इसी लिए उनका वैवाहिक सम्बन्ध स्थानीय क्षत्रियों में न होकर, केवल विसेनों की एक शाखा यानी राजा माधव मल्ल के वंशजो को छोड़कर, क्योंकि उनका साथ और कार्य क्षेत्र विशेषतः जंगे टौस और जंगे कश्मीर की घटनाओं के समय से अब तक रहा। अतएव क्षत्रियों के दो गोल बन गये बाहरी और स्थानीय।

इस खाई को एक वर्ग के मिथ्या अभिमान और संकीर्णता के दृष्टिकोण से उनके द्वारा लिखित अप्रमाणित साहित्य (विसेन वंश वाटिका) तथा प्रचार ने और गहरी कर दिया परन्तु सौभाग्य की बात है कि अपने में कुल भूषण भी तो बहुत हैं। जिन्होंने इस अलगाव को बड़े गम्भीरता से लिया और ऐतिहासिक खोज किया तथा कराया और अन्त में सत्यता को ढूंढ़ लिया। इस प्रकार का ऐतिहासिक निर्णय, क्षत्रिय समाज द्वारा श्रद्धेय राजा साहब कालाकांकर राजा अवधेश सिंह जी की अध्यक्षता में 9 मार्च सन् 1929 को लिया गया। यह विशाल क्षत्रिय सम्मेलन था।

अखिल भारतीय क्षत्रिय युवक संघ का महा अधिवेशन सन् 1929 ई०

सम्मेलन कार्यवाही :-

रेज्यूलुशन नम्बर ४ :- जो कमेटी तारीख 9 मार्च 1929 ई० को अखिल भारतीय क्षत्रिय संघ की ओर से इस बात का निश्चय करने के उद्देश्य से संगठित हुई थी कि तय करे कि पडरौना और उनके सम्बन्ध के सैथवार तथा मल्ल जाति क्षत्रिय हैं या नहीं ?

उस कमेटी के निर्णयानुसार यह कान्फ्रेंस यह घोषित करती है कि पडरौना ओर उनके सम्बन्ध की अन्य सहतवार जाति क्षत्रिय है।

क. *यह कान्फ्रेन्स यह भी घोषित करती है कि मल्ल जाति जिसमे पडरौना तथा उनके सम्बन्धी अन्य सहतवार जाति का विवाह सम्बन्ध है, विसेन क्षत्रिय हैं।* अतः यह कान्फ्रेन्स अखिल भारतीय क्षत्रिय समाज से अनुरोध करती है कि वह पडरौना और मल्ल तथा उनके सम्बन्धी अन्य सहतवार जाति से हर प्रकार का सामाजिक व्यवहार अर्थात रोटी बेटी का सम्बन्ध जो क्षत्रियों में परस्पर होते हैं, करें।

रिपोर्ट सब कमेटी :- मल्ल तथा उनके सम्बंधी सैथवार और रायान पडरौना को प्रमाणित क्षत्रिय घोषित करना।

अखिल भारतीय क्षत्रिय युवक संघ बमूजिव रेज्यूलुशन नम्बर-4

भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक पुस्तकों, पत्रों, लिखित घटनाओं से कमेटी सर्व सम्मति से इस निश्चय पर पहुँची है कि राजा नथमल्ल राजा माधव मल्ल के पुत्र थे। उनके वंशज मल्ल कहलाने वाले विसेन क्षत्रिय हैं। कमेटी ने यह भी तय किया कि सहतवार राजपूत प्रमाणित हैं। साथ ही मल्ल वंश वालों से सहतवारों का विवाह आदि सम्बन्ध भी है परन्तु कमेटी को इसका काफी प्रमाण अभी तक नहीं प्राप्त हो सका कि सहतवार कौन से राजपूत हैं। इसलिए यह कमेटी अखिल भारतीय क्षत्रिय युवक संघ से सिफारिश करती है कि सैथवार जाति को राजपूत तो घोषित कर

देवे किन्तु इस जाति के लोग कौन से राजपूत हैं? अर्थात गौड़ या गहरवार इसके लिए यह कमेटी जाति हितैषियों से निवेदन करती है कि वे काफी प्रमाण तीन मास के अन्दर सभापति के पास भेजें और फिर कमेटी उन प्रमाणों पर विचार करके अपना निश्चय देवे।

कार्यालय द्वारा प्रेषित

गोरखपुर जनपद में सरकारी कागजातों में क्षत्रिय लिखे जाने के सम्बन्ध में आवेदन एवं आदेश

उपरोक्त निर्णय का अच्छा प्रभाव क्षत्रिय समाज पर पड़ा। अब आपस की तनाव और पृथकता दूर हुई तथा एक दूसरे को नीचा समझने की मानसिकता जाती रही। विवाह आदि सम्बन्ध भी होने लगे, इस सफलता से प्रोत्साहित होकर सहतवार क्षत्रियों ने राजकीय कागजों में जाति के मामले में अर्थात इन स्तम्भों में उनके नाम क्षत्रिय लिखे जाने के लिए कलेक्टर गोरखपुर इ०डी०सी० मास कलेक्टर, आई०सी०यस० की कचहरी में आवेदन किये। इस वाद पर कलेक्टर महोदय ने दिनांक 12.11.42 को आदेश दिया कि शासन के आज्ञाओं के अनुसार कार्यवाही की जाये। जैसा आवेदित किया गया है, इन्द्राज किया जाये। पाठक गण की सुविधा के लिए वाद तथा आज्ञा की प्रतिलिपि संलग्न की जा रही है।

Copy of application।

In the court of collector Gorakhpur, District Gorakhpur.
Miscellaneous application of 1942
Correction of papers in matters of caste
Sir,

H'onably and respectfully the petitioners beg to bring the following few lines for your kind consideration and

favourable orders:-

(1). That Gorakhpur district besides the adjoining district is widely inhabited by people generally known as Sahatwars or Sainthwars. They are also written as such in caste column in Govemment papers.

(2). That the said Sahatwar Rajputs are the descendents of Grand Rajputs whose original capital was Sahat in Gonda district.The mention of Sahatwar Rajputs is to be found in Aine Akahari on pages 93, 151, 314,etc. The Sahat Rajputs have also been mentioned in Tod's Rajasthan.

(3). That among the people generally known as Sahatwars there are other sections of Rajputs who are incorrectly termed as such. They are Khagis, Thakurais, Mohits, Karkotaks, Dovis, Bishenmall, Gaharwars, Mohatas, Soharas, Mangras, Pushkars, Bellas, Bhathis, Uskas, Barhajas, Bais, Sahajas, Rawals, Kotharies, Rajpali, Khutahania, Barwas, Pundaris, Darwas,Bhakhars etc.who are Scattered over whole of the districts. Thus the word Sahatwar though really comprising a part is by misnomer used for various independent different sects of Rajputs mentioned above. The mention of these various sub caste ofRajasthan is to be found in Tod's Rajasthan and Aine Akabari as well.

(4) That the said Saithwars and other Rajputs mentioned above being Kshatriyas, it is also necessary and befitting to their position and status that they should be entered as Kshatriyas in caste column in Govt. papers for the want of which they have to suffer many difficulties.

(5) That the papers of the whole of Gorakhpur Tehsil has been corrected. On the above grounds in the matter of the caste by the order of SDO sadar dated 8/42 through which the caste of Saithwar has been substituted by Kshatriyas instead of Saithwar in the caste column. The copy of which is attached here with.

(6) That the petitioners have been authorised to move this application on behalf of the whole community in Gorakhpur District by a special resolution, the copy of which is attached here with. So, it is humbly prayed that your honour may be pleased to order the correction of papers in Khesaras and Khataunies in matter of caste so that in column of caste the word Kshatriya may be substituted in place of Saithwar, with the title of "Singh" in all the villages of the Gorakhpur district except Tehsil Gorakhpur for the correction of the latter has already been made by the order above referred.

Thakur Jainath Singh & Other Petitioners

Sig. Jainath Singh
Sig. Sarvan Singh
Sig. Ganga Bux Singh
Sig. Bansi Dhar Singh
Sig. Thakur Mahatam Singh

Seal

Court of Assistant Collector & Magistrate
Distt. Gorakhpur

True Copy
Sd. Inillegible
Head Copyst
Collectorate, Gorakhpur
Date 12.11.42

COPY OF ORDER

In the court of E.D.C. Moss Esquire I.C.S. Collector, District Gorakhpur.
Nature of Case : Miscellaneous application
Miscellaneous application of the Saithwars of Gorakhpur district except Sadar Tehsil for correction of Papers in matter of caste i.e. their names must be written as Kshatriyas.
Decided on 12.11.42.

COPY OF ORDER

Action should be taken in accordance with orders of Government. Entries to be made as applied for.

Sd. E. Dc. V. Moss
12/11/42

गोरखपुर जनपद में सरकारी कागजातों में सैथवार को क्षत्रिय लिखने के आवेदन की प्रति :-

जनपद गोरखपुर कलेक्टरी कचहरी में :-
विविध आवेदन 1942
जातिके मामले में कागजात की दुरुस्तगी हेतु :-

महोदय,

नम्रता पर्वक और आदर पूर्वक प्रार्थीगण निम्नलिखित पंक्तिया आपकी कृपा व विचार एवं उचित कार्यवाही हेतु प्रस्तुत करते हैं:

1. यहकि जनपद गोरखपुर में अपने समीपवर्ती जिलों के अतिरिक्त वे लोग निवास करते हैं, जो सामान्यतः सैथवार या

सहतवार जाने जाते हैं। सरकारी कागजातो में जाति के स्तम्भ में उन्हें ऐसा ही लिखा जाता है।

2. यहकि तथाकथित सहतवार राजपूत गौड़ राजपूतो के वंशज हैं। जिनकी मौलिक राजधानी गोण्डा जिले में सिहत थी। सहतवार राजपूतों का वर्णन आईना अकबरी के पृष्ठ संख्या 93, 151, 314 आदि में पाया जाता है। सहतवार राजपूतों का वर्णन टाड के राजस्थान में भी मिलता है।

3. यहकि उन लोगो में जो सामान्यतः सहतवार जाने जाते हैं, राजपूत जाति के विभिन्न वर्ग के हैं, जिन्हें गलत रूप से ऐसे लिखे और जाने जाते हैं। वे हैं खागी, ठकुराई, मोहिल, कारकोटक, डोवी, गहरवार, महत, सोहर, मगरास, पुष्कर, बेला, भाटी, उसक, बरहजा, वैस, सहजा, रावत, कोटहारी, नगहनिया, पुण्डरी, दर्वे, राजपल्ली, खुटहनिया, बरवास, भक्खर इत्यादि जो कि पूरे जनपदों में बिखरे हुए हैं। इस प्रकार सैंथवार शब्द यद्यपि वास्तव मे राजपूतों का एक भाग है, मिथ्या रूपसे राजपूतों के स्वतन्त्र विभिन्न वर्गों के लिए जिनका जिक्र ऊपर किया है, प्रयोग किया जाता है। राजपूतों की उपजातियों का वर्णन टाड के राजस्थान तथा आईना अकबरी में भी पाया जाता है।

4. यहकि ऊपर वर्णित तथाकथित सहतवार और दूसरे राजपूत चूंकि क्षत्रिय हैं, यह आवश्यक तथा उनकी स्थिति और मर्यादा के अनुकूल है कि सरकारी अभिलेखों में जाति के स्तम्भ में उन्हें क्षत्रिय लिखा जाये क्योंकि इसके अभाव में उन्हें बहुत सी अयोग्यताओं से पीड़ित होना पड़ता है।

5. यह कि सम्पूर्ण गोरखपुर के तहसील के पत्राजात में जाति के स्तम्भ में उपरोक्त आधारों पर एस0डी0ओ0 सदर के आदेश दिनांक

8.8.42 द्वारा संशोधित हो चुके हैं। जिसके द्वारा सहतवारों की जाति ठीक कर दी गयी है और जाति के स्तम्भ में सैथवार के स्थान पर क्षत्रिय शब्द प्रतिस्थापित कर दिया गया है। जिसकी प्रतिलिपि यहाँ सलग्न है।

6. यहकि गोरखपुर जनपद के इस जाति के सम्पूर्ण वर्ण की ओर से एक विशेष प्रस्ताव द्वारा इस प्रार्थना पत्र को प्रेषित करने का अधिकार प्रार्थीगण को प्राप्त हुआ है। जिसकी प्रति संलग्न की जाती है।

अतएव श्रीमान् से विनम्र पूर्वक प्रार्थना है कि खतौनी और खेसरा में जाति के स्तम्भ मे शुद्धि करने की आज्ञा प्रदान की जाये ताकि सैथवार अथवा सहतवार के स्थान पर क्षत्रिय शब्द सिंह पदवी के साथ गोरखपुर के कुल गाँव में केवल तहसील गोरखपुर के अतिरिक्त क्यों कि यहाँ के पत्राजात मे संशोधन पहले हो चुका है, जिसका सन्दर्भ ऊपर वर्णित है, प्रस्थापित हो जाये।

ठाकुर जैनाथ सिंह और दूसरे प्रार्थीगण

1. दः जैनाथ सिंह वाकलम खास
2. दः सरवन सिंह वाकलम खास
3. दः गंगा बक्श सिंह वाकलम खास
4. छः ठाकुर महत्तम सिंह वाकलम खास
5. दः बंशीधर सिंह वाकलम खास

जनपद गोरखपुर के असिस्टेन्ट कलेक्टर और मजिस्ट्रेट की कचहरी की मोहर

प्रतिलिपि

हस्ताक्षर अस्पष्ट

हेड आफिस कलेक्टर गोरखपुर

आज्ञा जिलाधीश महोदय

सरकारी आदेशानुसार कार्यवाही की जाये। सरकारी कागजात में संशोधन किया जाये जैसा कि आवेदित है।

हस्ताक्षर अस्पष्ट
ई. डी. सी. मास
दिनांक 12.11.42

जिलाधीश गोरखपुर ने उपरोक्त प्रार्थना पत्र पर स्पष्ट आदेश दिया कि सरकारी कागजात में संशोधन किया जाये जैसा कि आवेदित है।

तद्नुसार तमाम सरकारी कागजों में संशोधन हो गये और खेसरा और खतौनी में जाति के स्तम्भ में सैथवार शब्द के स्थान पर क्षत्रिय शब्द प्रतिस्थापित हो गया। स्कूलों कालेजों, विश्व विद्यालयों तथा इन्जीनियरिंग, मेडिकल आदि कालेजों में इस जाति के विद्यार्थियों के जाति के स्तम्भ में क्षत्रिय शब्द लिखा जाता है। जो लोग राजकीय तथा सहायता प्राप्त संस्थाओं आदि में इस जाति के कार्यरत हैं, उन सबकी सेवा पंजिकाओं (सर्विस बुकों) में जाति के स्तम्भ में उनको क्षत्रिय लिखा है। स्थानीय क्षत्रियों में शादी विवाह भी हो रहे हैं और इसमें प्रगति भी है। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा 68वां राष्ट्रीय महा अधिवेशन गोरखपुर दिनांक 11-12, एवं 13 दिसम्बर 1987 ई० को हुआ था जिसके संरक्षक महा मान्यवर हिन्दुआ सूर्य महाराणा महेन्द्र सिंह जी मेवाड़ तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष राजर्षि कुंवर श्री पाल सिंह जी थे। अधिवेशन के माध्यम से

अध्यक्ष महोदय ने सैथवार संज्ञाधारी क्षत्रियों को विशाल क्षत्रिय जाति में समाहितीकरण कार्य पूरा किया। अध्यक्ष महोदय ने स्पष्ट किया कि इस समाहितीकरण से न केवल इतिहास की एक भूल का परिमार्जन हुआ है अपितु हमारा परिवार और संख्या बल भी बढ़ा है। इन सब प्रयासों से क्षत्रियों की दोनो शाखाओं अर्थात स्थानीय और मध्य काल में पंजाब और कश्मीर तथा मध्य भारत की ओर से पूर्वांचल की ओर आये हुए क्षत्रिय जो यहाँ सहतवार या सैथवार जाति के नाम से जाने जाते हैं, के बीच की खाई पट गयी तथा आपस में विवाह आदि सम्बन्ध होने भी शुरू हो गये। यद्यपि धड़ल्ले से नहीं जैसा कि आशा की जाती है। इसका कारण लेखक के विचार से केवल यही है कि स्थानीय क्षत्रियों के बहुसंख्यक लोगों में अब तक यह मानसिकता बनी हुई है कि सहतवार क्षत्रिय प्राचीन संस्थागारिक अथवा बौद्धिक क्षत्रियों के वंशज हैं और इसी कारण वे उनसे नीच हैं। वहीं ये सहतवार क्षत्रिय समझने लगे हैं कि उनका उद्‌गम स्थान उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में है। जहाँ विभिन्न स्थानों से क्षत्रिय राजनितिक कारणों से खिसककर इकट्‌ठा हो गये थे। वैवाहिक सम्बन्ध ये क्षत्रिय अपने ही गोल में करते रहे। अन्यथा उनको डर था कि वे क्षत्रियेतर (अक्षत्रिय) कर दिये जायेंगे। वे अपने को स्थानीय क्षत्रियों से अलग समझते थे। यद्यपि श्रेयष्कर नहीं।

बड़े हर्ष और सौभाग्य की बात है कि अखिल भारतीय क्षत्रिय महा सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजर्षि कुवंर श्रीपाल सिंह जी राजा सिगरा मऊ जौनपुर के पद चिह्नों का अनुसरण करके क्षत्रिय वंश हितैषी इस भूल को समझने लगे हैं और अपनी लेखनी से प्रचलित मिथ्या मानसिकता को जो हम लोगो के पृथकीकरण का कारण हैं, समाप्त करने के शुभ कार्य में लगे हैं ।

अभी हाल में मुझे श्रद्धेय डाक्टर रघुनाथ चन्द प्राध्यापक प्राचीन इतिहास विभाग द्विग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर द्वारा एक संकलन प्राप्त हुआ है। जिसमें विद्वान प्राध्यापक एवं इतिहास के लगनशील विद्वान ने पूर्वांचल में बसने वाले प्राचीन एवं मध्य काल में बाहर से आकर यहाँ बसने वाले क्षत्रियों के नाम एवं गोत्र एवं रहने के स्थान दर्ज किया है। यह कार्य बहुत ही सराहनीय है क्योंकि इस संकलन के अवलोकन मात्र से ही हम क्षत्रियों के मध्य नीच ऊंच की भावना समाप्त होगी और हममे समानता तथा सहयोग की भावना बलवती होगी।

जब इस संकलन को मैं अपने द्वारा प्रस्तुत तालिका से मिलाता हूँ तो मुझे बड़ा ही सन्तोष मिलता है कि दोनो तालिकाओं में लगभग 20 वंशो का विवरण एक ही है।

पूर्वांचल के क्षत्रियों के मूल वंश एवं गोत्र

संकलन कर्ता डाक्टर रघुनाथ चन्द प्राध्यापक प्राचीन इतिहास विभाग दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महा विद्यालय गोरखपुर।

क्र0सं0	नाम क्षत्रिय	वंश	गोत्र	रहने का स्थान
1.	अमेठिया	गोर	भारद्वाज	गोरखपुर, देवरिया
2.	अशोजिहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, बस्ती, छपरा
3.	इनरापार	चन्द्रवंश	ठाकुर	गोरखपुर, बस्ती, देवरिया
4.	उसकहा	चन्द्रवंश	कश्यप	छपरा, बस्ती, देवरिया, चम्पारण
5.	उज्ञैन	सूर्यवंश	वशिष्ठ	चम्पारण, छपरा
6.	कछवाहा	सूर्यवंश	गौतम	गोरखपुर, देवरिया, स्ती
7.	कलहंस	सूर्यवंश	आंगिरस	गोण्डा, बहराईच, बस्ती
8.	कटहरिया	सूर्यवंश	वशिष्ठ	बस्ती,
9.	कारकोट	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती

10.	कोड़िया	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, छपरा
11.	कलचुरी	चन्द्रवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, बलिया, फैजाबाद
12.	कौशिक	चन्द्रवंश	कौशिक	गोरखपुर, देवरिया, बलिया, आजमगढ, छपरा, चम्पारण
13.	खुटहनिया	सूर्यवंश	भारद्वाज	गोरखपुर
14.	खागी	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर
15.	गहरवार	चन्द्रवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
16.	गहलौत	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, आजमगढ़
17.	गौतम	ऋषिवंश	. गौतम	गोरखपुर,बस्ती, आजमगढ़, फैजाबाद
18.	गहनहा	चन्द्रवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
19.	चन्देल	चन्द्रवंश	अत्रि	गोरखपुर, देवरिया, मऊ
20.	चौहान	सूर्यवंश	वत्स	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, आजमगढ़
21.	चौतिसहा	कौशिकवंश	कौशिक	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
22.	जनवार	सूर्यवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, बलरामपुर

23. ठकुराई	सूर्यवंश	मानस	देवरिया, बस्ती, चम्पारण
24. दीक्षित	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती गाजीपुर, आजमगढ़
25. दर्वे	सोमवंश	कश्यप	बस्ती, गोरखपुर, देवरिया
26. डोवी	सोमवंश	कश्यप	बस्ती, गोरखपुर, देवरिया
27. वनडरिहा	सूर्यवंश	कश्यप	देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, छपरा, चम्पारण
28. नकहनिया	नागवंश	कश्यप	बस्ती, गोरखपुर, देवरिया
29. नराइनपरहा	नागवंश	कश्यप	बस्ती, गोरखपुर, देवरिया
30. नेवसहा	नागवंश	कश्यप	बस्ती, गोरखपुर, देवरिया
31. प्रतिहार (पलवार)	सूर्यवंश	व्याध	गोरखपुर, आजमगढ़, फैजाबाद
32. परमार(पवार)	सूर्यवंश	वशिष्ठ	गोरखपुर, देवरिया, बलिया
33. पाल	सूर्यवंश	कश्यप	बस्ती
34. पुष्कर	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
35. पचरूखिया	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
36. बघेल	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बलिया
37. बरूआर	सूर्यवंश	कश्यप	बस्ती, आजमगढ़
38. बन्धमोती	सूर्यवंश	वत्स	सुल्तानपुर
39. बनाफर	यादव वंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बुन्देल खण्ड

40. विसेन	सूर्यवंश	वत्स	गोरखपुर, देवरिया, मऊ, आजमगढ़, प्रतापगढ़ गोण्डा, छपरा, इलाहाबाद, बहराईच
41. वरहजपरिहा	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, छपरा
42. बेलहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, छपरा
43. बनचरहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, छपरा
45. भदौरिया	सूर्यवंश	वत्स	देवरिया
46. भाटी	चन्द्रवंश	अमेष	राजस्थान
47. भीटी	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
48. बरवलिहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, छपरा
49. भक्खर	चन्द्रवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
50. भेडिहा	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
51. महुलियार	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, चम्पारण
52. महत	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, छपरा
53. मोतीपुरहा	सोमवंश	कश्यप	गोरखपुर, छपरा, देवरिया, बस्ती
54. मागरा	सूर्यवंश	वशिष्ठ	गोरखपुर, बस्ती, देवरिया
55. मड़रिहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
56. भटनरिहा	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
57. राठौर	चन्द्रवंश	अत्रि	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
58. रायकवार	सूर्यवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, बस्ती, बहराईच, बाराबंकी

59. राजकुमार	चौहान	वत्स	गोरखपुर, फैजाबाद, फतहपुर, रायबरेली
60. रघुवंशी	रघुवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
61. राजपलिहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया,
62. वैश्य	चन्द्रवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, जौनपुर
63. रजबलिहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
64. सोलंकी	सूर्यवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, देवरिया
65. सेंगर	ऋषिवंश	गौतम	गोरखपुर, फैजाबाद, गोण्डा, बलिया
66. सकरवार	चन्द्रवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, बस्ती
67. श्रीनेत	सूर्यवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, फैजाबाद
68. सूर्यवंशी	सूर्यवंश	भारद्वाज	गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, फैजाबाद
69. सोहर	यदुवंश	कश्यप	देवरिया
70. सहजा	सूर्यवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, बस्ती
71. सजनिया	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया
72. सोनडीहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, चम्पारण
73. हटहा	नागवंश	कश्यप	गोरखपुर, देवरिया, चम्पारण, आजमगढ़, छपरा

आइने अकबरी भाग दो पृष्ठ 93, 151, 314, 361, 363 इत्यादि में लिखित मुताबिक राजपूतों की किस्में जो कश्मीर, पंजाब तथा उसके निकटवर्ती प्रदेशों से मध्य युग में पूर्वांचल की ओर आये और इधर ही बस गये। सिहत राजपूत का जिक्र टोकलिस राजस्थान में भी है।

क्र. सं.	नाम क्षत्रिय	वंश	कहां से आये		गाँव जहाँ बसे	पृष्ठ सं०
			जिला	परगना		
1.	गौड़ सैथवार या सिहत	नाग वंशी	द्वाविस्त जालंधर	सिहत	दुघरा, पाली, अमोढ़ा, मलउर, नीरपुर, कोदरी, गायघाट, घघसरा, दानोपुर, गंगापार, दरुआ आदि	314
2.	भाटी, भीटी	सूर्य वंश	द्वाविस्त जालंधर	सेखपुर	भरोह, भीटी, देवरिया	314
3.	खुटहनियाँ	सूर्य वंश	द्वाविस्त जालंधर	कोटहर	मदरिया, गौर, छितौनी, खुटहन, अमीहया	314
4.	कारकोट	नाग वंश	द्वाविस्त जालंधर	सद्योग	पचउरी, पिपरा	314
5.	कोटरिया, परमार	सूर्य वंश	द्वाविस्त जालंधर	रहीमाबाद	भलुवनी, राउतपार, सिधुवा, बहोरवा	314
6.	चूना	सूर्य वंश	द्वाविस्त जालंधर	फतेहपुर	बहोरवा, सिधुवा	314
7.	महत	नाग वंश	अलवर	कोड डैना	डुमरी, रामपुर, डीहा, सिरसिया, सिधवा, मथुरा छापर	176
8.	भक्खर	चन्द्र वंश	कश्मीर	सदरा	भुसऊल, पिपरिया, चड़रांव, कराइल, केवल छपरा, विजोई, काफ पटखौली, बरपरवा	363
9.	मुइली राठौर	सूर्य वंश	आगरा	सहली	महुई, जमुनी बरवा, रामपुर, तिघरा, गोरसैरा	160
10.	उडेर	सूर्य वंश	कश्मीर	उलर	दनउर	361
11.	बरहज पलिया	सूर्य वंश	सारंगपुर	मुहम्मदपुर	रामपुरवा, बढ़नी, मेडनवा, पचरती, मुहम्मदपुर	361
12.	बेलहरिया	सूर्य वंश	पंजाब	लाहौर	पथसरा, उसका, सिरसिया, महदेइया	361
13.	सहज, सहजवात		भक्खर	अलवर	सहजनवाँ, गांगूपार, रामपुर, गोपालपुर	337
14.	खागी	नाग वंश	कश्मीर	दखिन-खारा	देवगाँव, नौतन, नैयापार, कोल्हुआ	364
15.	सोहर	सूर्य वंश	कश्मीर	सीर	टिकरिया, भड़सर, देवरिया मीर, उनवल, नटनी सरसोंपार, अरावें।	364
16.	ठकुराई	सूर्य वंश	कश्मीर	दखिन खारा	पिण्डरा, मुण्डेरा, भड़सही, बैरिया, धोबौली, देवकहिया।	364
17.	हरसोमन्त		लाहौर	दरी	सिरसिया, अरांवे।	318
18.	उसक	चन्द्र वंश	कश्मीर	बार	उसका, जमुई, खुँटवा, पड़री, झीलीपार	363
19.	भंगरा	सिसोदिया	आगरा	जलेसर	सिधुवा वांगर।	161
20.	डावी या डोवी	चन्दं वंश	कश्मीर	डेनू	सरदहा	364
21.	रावत	चन्द्र वंश	कश्मीर	डेनू	रावतपार, तेलिया, रघेन, नढ्ढा, परसौना, बिहार	363
22.	नटहनिया	नाग वंश	कश्मीर चन्देशरी	सधुरा	गौनर, सोमली, पेमली, जमुनी, बरवार, सिरसिया	190
23.	सुन्डीला	नाग वंश	बड़ौदा	कोरमरिया	गोरखपुर, देवरिया, चम्पारण	201
24.	बेलसड़िया	नाग वंश	चुनस	डंरी	कछार में सोनउरा, भौवापार, जगदीशपुर।	314
25.	पुष्करिया	सूर्य वंश	कश्मीर	पुष्कर नाग	रामपुर, महुअवा, कुंनुर, गौरा, छपिया, गम्भीरपुर दखिन खारा	364
26.	वुडवरिया	सोम वंश	हजारा	भुखला	सोनउरा, वडवारे।	338
27.	मेवती	सोम वंश	पंजाब	गोड़ना	मोतीपुरहा (राजा उदित नारायण राय की ननिहाल)	338
28.	दरवे	सोम वंश	कश्मीर		बस्ती, देवरिया, गोरखपुर, चम्पारण।	364

गहरवार, राजपलिहा, वैश्य, जनवार, बरूआर, बेलहा, आदि बहुत सी राजपूतों की शाखें पश्चिमोत्तर प्रान्तों से पूर्वान्चल की ओर आकर आबाद हो गये। उपरोक्त दिये गये गाँवों से क्षत्रिय वंश अन्य स्थानों को जीविको पार्जन अथवा अन्य कार्यों से निकल कर चले गये। और पूर्वांचल के विभिन्न जनपदों में आबाद हो गये। स्थानाभाव के कारण उनका विस्तृत वर्णन करना कठिन है। सम्बन्धित क्षत्रिय बन्धु उपरोक्त तालिका से अपनी उत्पत्ति का पता लगा सकते हैं।

इसी प्रकार सिन्ध प्रान्त में भक्खर राजपूत इस क्षेत्र की ओर आये। इसकी झाँखी आशीर्वादी लाल हेड आप दी डिपार्टमेन्ट हिन्दी आगरा कालेज आगरा द्वारा लिखित 'मध्य कालीन भारत' में मिलती है। प्रसिद्ध इतिहासकार अपनी उक्त पुस्तक के पृष्ठ संख्या 420 पर लिखते हैं कि अकबर का जन्म अमरकोट (सिन्ध) के थार और परकर जिले के राजा बीरसाल के महल में 15 अक्टूबर 1542 को हुआ था। उसके माता पिता हुमायूँ और हामिदाबानो बेगम ने यहाँ राजपूत राजा के यहाँ आकर शरण ली थी। राजा ने उदारता पूर्वक हुमायूँ को साज सज्ञा, द्वारा सहायता देकर यहाँ और भक्खर पर चढ़ाई करने में मदद दिया।

भक्खर के ये राजपूत ही भक्खर राजपूत हैं जो जंगे कश्मीर के बाद अन्य राजपूतों की गोल के साथ 1625 के बाद राजा नत्थमल्ल के नेतृत्व मे पूर्वांचल की तरफ आये और जंगल काट कर आबाद हो गये। इनका मुख्य गाँव भुसऊल है।

तृतीय अध्याय

पडरौना (गहरवार) क्षत्रिय

मुसलमान शासकों के शासन में पडरौना पगरना सिधुआ सरकार जौनपुर में एक गाँव था। इस क्षेत्र में पाण्डर एक तरह का जंगली पेड़ है, बहुतायत से पाये जाते थे। अब ये पेड़ कमतर दिखाई देते हैं। परन्तु जब यह मौजा आबाद हुआ था तब वह इन पेड़ों से घिरा था इसलिए गाँव का नाम बलिहाज दरख्ते मजकूर के पाण्डरान रखा गया, जो कसरते इस्तेमाल से पडरौना हो गया।

कुछ इतिहासकारों का ख्याल है कि वर्तमान पडरौना नगरी प्राचीन पावा पुरी है जहाँ प्रसिद्ध मल्ल गणराज्य था। कुशीनगर के मल्ल गणराज्य से इसका अधिक महत्व था। इन मल्लों की विशेष शासन निपुणता तथा विद्याशीलता उत्तर पूर्व के सभी भागों में विख्यात थी।

समय के परिवर्तन के साथ पावा की प्राचीन स्थिति जाती रही। मल्ल गणराज्य विशाल मौर्य साम्राज्य मे विलीन हो गया परन्तु प्रसन्नता की बात है कि अवसर पा कर कन्नौज के महाराजा जय चन्द के एक वंशज ने सोलहवीं शताब्दी के दूसरे भाग में पडरौना में फिर से एक राज्य की स्थापना किया जो आज अर्थात् जमीन्दारी उल्मूलन के पहले गोरखपुर कमिश्नरी के प्रमुख राज्यों में समृद्धि सम्मान एवं शालीनता में विशेष स्थान रखता है। ***यह तेजस्वी पुरूष भुवाल राय थे। यही वर्तमान पडरौना राज्य के संस्थापक एवं राजघराने के आदि पुरूष हैं।*** यह भुवाल राय महाराजा जयचन्द के भाई मानिक चन्द के वंशजों में से थे। जय चन्द

गहरवार राजपूत थे जो अत्यन्त प्राचीन प्रतिष्ठान के चन्द्र वंश की एक शाख हैं। राजवंश की श्रृंखला बीच में टूट गयी थी किन्तु इसी वंश के देवदास नाम के एक प्रभावशाली और महत्वाकांक्षी व्यक्ति ने वाराणसी के आस पास ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में एक छोटे से राज्य की स्थापना किया जो बढ़ते-बढ़ते वाराणसी और कन्नौज का विशाल साम्राज्य बन गया। ज्योतिष्ला के अनुसार देवदास पर दुष्ट ग्रह शनि का प्रकोप था। उन्होंने शनिश्चर के सभी कुप्रभावों का निवारण किया। इसलिए देवदास को ग्रहवार (ग्रह का निवारण करने वाला) कहते हैं। इनके वंशज ग्रहवार कहलाने लगे जो कसरते इस्तेमाल (प्रयोग के बहुतायत) से गहरवार हो गया।

Tribes and castes of North Western Provinces and Avadh Volume II Page 371-372 ट्राइब्स एण्ड कास्ट आफ नार्द वेस्टर्न प्राविन्सेज एण्ड अवध वालूमम टू पेज 371-72 और मिर्जापुर गजेटियर पृष्ठ 204 में ऐसा जिक्र मिलता है। गहरवार राजपूत चन्द्र वंश के थे।

चन्द्रवंश

मनु की पुत्री का नाम एला था। उसका विवाह हिमालय पर्वतीय चन्द्र के पुत्र बुद्ध के साथ हुआ। इस विवाह सम्बन्ध से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम पुरूरवा रखा गया। यही पुरूरवा प्रष्ठानपुर में जिसको अब झूसी कहते हैं जो गंगा नदी के तट पर इलाहाबाद के सामने है, चन्द्र वंशियों का प्रथम राजा हुआ। इसी पुरूरवा के 45वें पुश्त में महाराजा युधिष्ठिर पैदा हुए, जिन्होंने महाभारत युद्ध जो कुरू क्षेत्र के मैदान में हुआ था, अपने चचाजात भाई दुर्योधन को, जिसने अपने को हस्तिनापुर का सम्राट घोषित किया, मार डाला,

परन्तु स्वयं इन्द्रप्रस्थ अर्थात दिल्ली के राजसिंहासन पर न बैठा। बल्कि राज पाठ छोड़कर अपने भाईयों के साथ हिमालय पर्वतों में चला गया। राजा परिक्षित, जो पोता युधिष्ठिर के भाई अर्जुन का था, इन्द्रप्रस्थ के सिहांसन पर बैठा। राजा परिक्षित से लेकर २६ वीं पुश्त तक उसी वंश के राजा इन्द्रप्रस्थ में राज्य करते रहे। परन्तु २६ वीं पुश्त में कशीमक ऐसा गाफिल और अभागा रहा कि उसके मंत्री ने उसका कत्ल कर दिया और इन्द्रप्रस्थ का राजा बन बैठा। इसके बाद उसकी नस्ल ने चौदहवें पुश्त तक राज्य किया। वह राज्य जिस तरह आया था उसी तरह चला गया। 16वीं पुश्त में तीसरे खानदान के लोग इस मुल्क के मालिक हुए परन्तु जब इनकी भी नौवीं पुश्त में राजा अजय पाल ने घमण्ड और बुद्धिहीनता से प्रजा को तंग किया तब कुमाँयू के राजा सखनत ने सेना इकट्ठा कर राजा अजय पाल का वध किया और इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली को अपने अधिकार में कर लिया।

इसके पश्चात् उज्ज्ैन के शासक विक्रमादित्य ने उस पहाड़ी राजा को भी गद्दी से उतार कर सारे देश में अपना सिक्का जारी किया और कन्नौज तथा अवध को उज्ज्ैन के अन्तर्गत कर लिया। विक्रमादित्य के बाद राजा भोज राज्य का अधिकारी हुआ। वह राजा भोज बड़ा परिश्रमी राजा हुआ। उसके समय में स्त्री पुरूष सब साक्षर थे। उसने शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया विशेषकर स्त्री शिक्षा को बढ़ाया। पचास वर्ष के बाद उसकी नस्ल में राजा वासदेव सिंहासनारूढ हुआ। उसकी मृत्यु के बाद उसके दोनों पुत्रों में युद्ध हुआ और दोनों मृत्यु की गोद में सो गये। राजा रामदेव जो उसकी सेना का सिपहसालार था कन्नौज के सिंहासन पर बैठा। उसके छोटे भाई मानदेव को मानिकपुर की जागीर मिली। उसने नगर बसाकर

उसका नाम मानपुर रखा। जब राज का मानिक चन्द राजा हुआ। उसने उसके नाम को बढ़ाकर मानिकपुर रखा। मांडा के राजाओं के वर्णन से मालूम हुआ कि महाराजा जयचन्द और मानिक चन्द इसी राजा रामदेव के नस्ल से हैं। यह दोनों भाई एक बाप और दो माताओं से थे। जैसा कि उसके सिक्कों से पता चलता है। जिस समय पुस्तक आईना अवध लिखी गयी (सन् 1869-1880ई०) दो पैसे संयोग वंश मानिकपुर किले में मिले। एक पर शब्द जैचा सन् 12... हिन्दी शब्दों में साफ लिखा था और दूसरे पर केवल शब्द मानिक लिखा था और सन् मिटा हुआ और बहुत घिसा हुआ था। निश्चित ही ये दोनो पैसे जयचन्द और मानिक चन्द के समय के थे। कुछ आश्चर्य नहीं कि ये दोनों पैसे एक ही टकसाल के हों और इबारत जैचा से जयचन्द जो राजा मानिक चन्द का भाई था जो मानिक पुर में राज्य करता था। और सन् 12... को सम्वत् 1200 जानता चाहिए। (देखिये आइना अवध पृष्ठ 23)

सुल्तान सहाबुद्दीन गोरी और जयचन्द के बीच 591 हिजरी तद्नुसार 1194 ई० में घमासान युद्ध हुआ जिसमें राजा राठौर जय चन्द की आँख मे सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक का तीर घुस गया। राजा बेताब हो गया, हाथी से जमीन पर गिर गया। तमाम सेना उसके गिरने से ऐसी बदहवास हो गयी कि जिसका मुंह जिस तरफ था, उसी तरफ भागा और किसी को यह ज्ञान न हुआ कि राजा मारा गया अथवा जिन्दा किसी ओर भाग गया। 'तबका- तेनासिरी' में इस युद्ध का वर्णन है।

जीत के बाद जब मुसलमानों की सेना इन घायलों के बीच घुसी तो उस समय राजा की लाश घायलों के बीच में उसके कृत्रिम

दाँतों के चिह्न से जो कि सोने के तार से बंधे थे, जानी गयी। इस विजय से मुसलमानों का पूरा अधिकार कन्नौज और बनारस के जिलों पर हो गया। उनका राज पहाड़ के नीचे तक अर्थात् नेपाल की सीमा तक पहुंच गया। बंगाल देश का मार्ग खुल गया। (आइना अवध पृष्ठ संख्या 55)

राजा जय चन्द और मानिक चन्द के भागने का जिक्र

वंशावली राजा राठौर वर्तमान पुस्तकालय कुतुबखाँना मांडा से मालूम हुआ कि राजा जयचन्द और मानिक चन्द के भागने के हंगामे में जितना नगद जेवर, जवाहिरात, सोने, वे साथ ले जा सके, ले गये और बाकी को किले के भीतर एक लोहे के कड़ाहे में भरकर जमीन के अन्दर गाड़ दिये। जो माल अब तक यकीनन दुर्ग के भीतर मौजूद है। चुनान्चे बहुधा हाकिमों ने उसकी खोज में खुदाई कराया परन्तु किसी को कुछ नहीं मिला। जनवरी सन् 1870 ई० को मान्यवर डयूस साहब बहादुर चीफ कमिश्नर लखनऊ ने कई महीने तक आंगन को खोदवाया परन्तु केवल पुराने भवन के चिह्नों के और कोई वस्तु बरामद नहीं हुई। कुछ प्राचीन शंख मिले।

दोनों राजे मानिकपुर से बनारस गये। मुसलमानो ने वहाँ भी इनका पीछा न छोड़ा तब राजा जयचन्द जहर खाकर मर गया परन्तु मानिक चन्द अपने साथियों के साथ राज कन्तित के इलाके की ओर जाकर आबाद हुआ। यह इलाका कन्तित विन्ध्याचल पर्वत के नीचे इलाहाबाद के दक्षिण में है जिसकी सीमा राजरीवां से सटा हुआ है और अब जिला इलाहाबाद और मिर्जापुर में विभाजित हो

गया है। यहीं उन्होंने राज रियासत की नींव डाली और वनों को काटकर कालान्तर में एक उपजाऊ इलाका बना लिया। मानिक चन्द के चार पुत्र हुए ताल देव, अलदेव, लक्ष्मण देव और प्रेमजीत।

तालदेव को राजा जयचन्द ने अपना उत्तराधिकारी बना लिया था। वह ईटावा के निकट चन्दवार मुकाम पर सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा लड़ाई में पराजित हुआ। तब वह मारवाड़ बीकानेर की तरफ भाग गया और वहीं राज्य स्थापित कर लिया। उनके वंशज सदा स्वतन्त्र रहे। स्वतन्त्रता के पहले ब्रिटिश सरकार के दोस्त समझे जाते थे।

दूसरा अलदेव जिसकी नस्ल में राजगाने मांडा और ढडया इत्यादि मुतल्लिका खैरागढ़ जिला-इलाहाबाद है। दस रुपये सैकड़ा परगना खैराबाद से जिसका वार्षिक तीस हजार से कुछ अधिक है, ब्रिटिश सरकार से नानकारा पाते थे। इसके अतिरिक्त चालीस-पचास हजार रुपये के जमीन्दार मालगुजार थे। इन्ही अलदेव के कई पीढ़ी नीचे राजा गुरुदन्देव हुए जिन्होंने सन् 1401 ई० से पूर्व कन्तित राज्य की स्थापना किया। उनके वंश में राजा दादू राय हुए जो सन् 1564 ई० में अलीकुली खाँ और बहादुर खाँ द्वारा मारे गए। दादू राय के दो पुत्र सकत सिंह और भुआल राय हुए। सकत सिंह ने विजयपुर में तथा भुआल राय ने पडरौना में राज्य स्थापित किया।

तीसरा पुत्र लक्ष्मण देव जिसके वंश में राज सतीशगढ़ और बीजापुर जिला मिर्जापुर है। यह भी खैरागढ़ के राजाओं की तरह मालिक उस इलाके के हैं। और शासन से नानकारा पाते हैं।

चौथा प्रेमजीत सुल्तान अलाउद्दीन मोहम्मद साहब मुकाम गजनी जाकर मुसलमान हो गया। वहाँ से इलाका खैरामगरूर जिला बनारस बतौर तमगे के माफ पाया। बहुत दिनों तक यह रियासत इस खानदान में रही है और अन्त में औलाद के बढ़ोत्तरी के कारण वह राज्य विभाजित हुआ। यह लोग व्यक्तिगत रूप से जमीन्दार रह गये। इस समय इनके वंशज मुसलमान हैं। जब इलाके कन्तित में कोई उत्सव होता है तो ये लोग भी उसमें पट्टीदार के रूप में भाग लेते हैं।

कड़ा और मानिकपुर के दुर्गो को कुतुबुद्दीन ने मुहासिरा करके जीत लिया और अमीर कवीर सैय्यद कुतुबुद्दीन के मुलाजिमों को दे दिया।

ब हवाले अखवार मौरिखान व किवावजहूरे कितवी के यह है कि अमीर कबीर सैय्यद कुतुबुद्दीन मदनी के जेहाद के समय में राजा जयचन्द और राजा मानिक चन्द के सेना के बहुत सैनिक मारे गये और हजारों कैदी बनाये गये। औरतें और नौजवान गुलाम व लौड़ी बनायी गयीं। बहुत से इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिए। अतएव राजगाने कन्तित में हमेशा कुतविया परिवार से बदला लेने की भावना सुलगती रही। बहलोल लोदी की मृत्यु जुमा 17 रबीउलअव्वल 855 हिजरी तद्नुसार 19 अप्रैल सन् 1451 ई० को हुई। उसके मरने के बाद उसके पुत्रों में उत्तराधिकार के युद्ध हुए। अराकीने सल्तनत कमजोर और एक दूसरे के शत्रु निकले। ऐसी स्थिति में राजगाने कन्तित का उत्साह बढ़ा। वे विद्रोह किये। सादात कुतविया को सुल्तानी सहायता मिली परन्तु बलवाईयों की सेना जिसमें एक

लाख सवार और पचास हजार पैदल सिपाही थे, इनके सामने कुतविया फौज टिक न सकी। उनके सिपाही बेसुमार कत्ल हुए। जब शाहजादा शेर खां जो मुबारक खाँ का भाई था, मारा गया तब मुसलमानों का साहस समाप्त हो गया। कुतविया के लोग अपने-अपने घरों में कैद हो गये। मुबारक खाँ युद्ध स्थल से भागा। वह गंगा नदी के तट पर ठट्ट के राजा सहदेव द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और बारवक शाह जौनपुर में न ठहर सका। वह बहराईच की ओर काला पहाड़ की तरफ, भाग गया तब राजा मांडा ने नगर में प्रवेश किया और हुकुमत की बागडोर अपने हाथ में लिया इसके बाद सादात कुतविया के कत्लेआम का हुकुम सादिर हुआ। इस हंगामें के चौबीस दिन बाद सम्राट सिकन्दर लोदी एक बड़ी सेना लेकर कड़ा मानिकपुर प्रस्थान किया। राजा सहदेव डर कर कड़ा के हाकिम मुबारक खाँ को कैद से मुक्त कर दिया और मर्यादापूर्वक उसको सम्राट की सेना में भेज दिया। विद्रोही राजगान परास्त होकर भाग गये। बहुत बड़ी धनराशि सम्राट के सिपाहियों के हाथ लगी। बादशाह कड़ा मानिकपुर में मुबारक खाँ को और जौनपुर में वारवकशाह को स्थापित करके अवध की ओर आया। अवध से जौनपुर होता हुआ चुनारगढ़ आया और वहाँ से कन्तित राज्य की तरफ बढ़ा। फिर वहाँ के राजाओं को नष्ट भ्रष्ट करके बजिल्दवी खैरख्वाही ठट के राजा को जो अब राजरीवां है, जागीर में दे दिया। सम्राट (हिजरी 900 तद्नुसार सन् 1494 ई०) फिर कड़ा मानिकपुर गया। और वहाँ के जमीन्दारों और ताल्लुकेदारों को दण्ड देता हुआ ठट गया। राजा सहदेव सामना के लिए आया और अन्त मे परास्त होकर बमुकाम सरगूजा जा कर मर गया। 902 हिजरी सन् 1496 ई० में सम्राट ने ठट के वर्तमान राजा सालबाहन से उसकी पुत्री की

मांग किया। राजा ने इन्कार कर दिया। सम्राट बड़े क्रोध में राजा के ऊपर आक्रमण कर दिया और उसके राज को तबाह और र्बबाद कर दिया।

राजगान कन्तित में कौम सोमवंशी ताल्लुकेदारान जमीन्दारान परगना अइवर जिला प्रतापगढ़ अवसर पाकर सादातगरवेजी को नष्ट करने के ध्येय से मानिक पुर चले। यह सूचना पाकर सादातगरवेजी भी जो कि सम्पन्न (साहवेजाहव हशप) थे, सामना करने बमुकाम ढेरा परगना बिहार जाकर शयरेराह हुए। युद्ध होना निकट था कि तुरन्त सुल्तान सिकन्दर लोदी राजघराने कन्तित और अन्य विद्रोही जमीन्दारो को नष्ट व पूर्णतया बर्बाद करने के अभिप्राय से कड़ा में पहुँच गया तब ताल्लुकेदारान और जमीन्दारान कन्तित भयभीत होकर अपने अपने घरों मे छिप गये। जब सादात गरवेजियों को उन लोगों से भय पैदा हुआ तब बादशाह ने शरहदी की रक्षा हेतु विसेनों की एक विरादरी होम मल्ल पुत्र बाबू रूप मल्ल पुत्र राजा रघुवंश मल्ल को मौजा देरू में स्थापित किया और उनके ईर्द गिर्द 12 गावं की जमीन्दारी दिया। (होम मल्ल का जिक्र प्रथम अध्याय में है।)

सन् 1526 ई0 में लोदी वंश के अन्तिम सुल्तान इब्राहिम लोदी को पानीपत के मैदान में बाबर ने युद्ध में हराया और उसका वध कर डाला। कन्तित के राजे, ताल्लुकेदार और जमीन्दार इन मुसलमान शासकों के समय में बड़ी कठिनाईयों का जीवन व्यतीत किया। उन्हें हमेशा उनसे युद्ध ही करते बीता। इन मुसलमान शासकों ने इन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया। अकबर महान के सामन्त अली कुली खाँ और बहादुर खाँ ने मानिकपुर का राज्य 1564 ई0 में बरबाद कर

दिया तथा कन्तित के जमींदार दादू राय को मार डाला। 'तारीखे हिन्दुस्तान' जिल्द पांचवे के पृष्ठ संख्या 88 में मानिकपुर राज्य की बरबादी का वर्णन किया है। इन खाँ बन्धुओं ने अत्याचार और निर्दयता की कोई सीमा न छोड़ी। अतः इन राजपूतों को वहाँ से उजड़ कर दूसरी जगह शरण लेनी पड़ी। उन्हीं में से कुछ ने केरा मगरौर जो बनारस जिले में स्थित था किला बनाकर राज्य स्थापित किया। इनके वंशों में मुसलमान आतताइयों के अत्याचार की चर्चा अब तक चली आ रही है लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, लोग प्राचीन कष्टों को भूलते जाते हैं।



भूआल राय द्वारा पडरौना राज्य की स्थापना

कड़ा मानिकपुर का राज्य बहादुर खाँ और अलीकुली खाँ द्वारा बर्बाद होने के बाद गहरवार बंशी राजपूत भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर अपना निवास बना लिये। मनिक पुर के राजकुमार भुआलराय अपने नाबालिग अवस्था में मधुबन में अपने फूफा राजा माधव मल्ल के संरक्षण में रहने लगे। और बाद में मुगल पल्टन में नौकरी कर लिया। 'तुजुक जहाँगीरी' के पृष्ठ संख्या 329 में इनका जिक्र इस तौर पर है।

بھوال کہ از بندھائے قدیم بود اشرف توپخانہ وخطاب رائے امتیاز یافت

(भुआल कि अज बंध हाये कदीम बूद अशरफे तोपखाना व खिताबे राय इम्तियाज याफ़्त)

अर्थात् भुआल जोकि पुराने मुलाजिमों में से हैं तोपखाने के अफसर तथा राय के खिताब से विभूषित किये गये।

भुआल राय हौसलामन्द आदमी थे। उन्होंने अपने स्वभाव के आकर्षण में नौजवानों की एक जमात को अपना स्वामिभक्त और हम ख्याल बना लिया। इन नौजवानों की पचास की संख्या थी, जो उत्साह से पूरे भरे हुए थे। वे जीर्वीकोपार्जन के लिये पूरब की ओर चले। रास्ते में रियासत मझौली पड़ती थी जो उन दिनों जिला गोरखपुर में बड़ी रियासत समझी जाती थी। उस समय रियासत के मालिक राजा भीम मल्ल थे। उन्होंने इस जमात को अपने यहाँ नौकर रख लिया। इस गिरोह ने मझौली के राजा के शत्रुओं को मार भगाया। राजा मझौली ने इस कृतज्ञता को पूर्ण करने के लिए

भुआल राय जो इस गिरोह के अगुआ थे, को परगना सिधुआ में पांच गांव जमींदारी दिया। हौसलामन्दी की उन्नति करने का तथा ऊपर दर्जे पर पहुँचने की अन्त तक प्यास नहीं बुझती। अतएव भुआल राय आगे बढ़ते गये। उन दिनों परगना सिधुआ में मकवान राजपूतों की रियासत थी। इस वंश के राजे अर्से से राज्य करते आ रहे थे। ये राजे निम्नलिखित थे। बेनीमाधव सेन, विंध्यसेन, हरिनरायण सेन, मुकुन्द सेन और मदन सेन। पहला राजा बड़ाअत्याचारी था। उसने प्रजा को इस प्रकार सताया कि यह परगना दोबारा निर्जन हो गया। राजा मदन सेन लावल्द मर गया। उस खानदान की हुकुमत समाप्त हो गयी। फिर भिन्न-भिन्न वंशों के लोग छोटे-छोटे टुकड़ों पर अधिकार कर लिये। भुआल राय ने मकवानी राजा को परास्त करके बहुत से गाँवों को अपने अधिकार में करके एक छोटी सी रियासत स्थापित कर लिया। भुआल राय द्वारा राज स्थपित करने का उल्लेख रोबकार कचहरी बड़गावं सिकटा के जिल्द बन्दोबस्त 1933 ई० के पृष्ठ संख्या 3 पर इस तरह दिया है-

از تحقیقات زمینداری تو یسامندہ بھون رائے زمین دار واضح کہ بھوال راج

مورث اعلیٰ بود۔ زمینداری موضع ہٰذا و دیگر موضع از راجا می کند بزور شمشیر پیدا کرد۔

(अज़ तहक़ीकात जमीन्दारी खेसामिन्दा बहोरनराय जमींदारे वाजा की मुसम्मी भुआल राय मुरिसे आला बूद........ जमीन्दारी मौज़ा हाज़ा व दीगर मौज़े अज़ राजा मकवानी बज़ोर शमशीर पैदा करद)

अर्थात भुआल राय आदि पुरुष बहोरन राय ने जमीन्दारी मौजे हाजा व अन्य मौजों को तलवार के जरिये मकवानी राजा को शिकस्त देकर हासिल किया।

'विसेन वंश वाटिका' के रचयिता लालखड्ग बहादुर मल्ल ने भी अपनी पुस्तक के पृष्ठ संख्या 65 के नोट में इस वीरता से पडरौना के रायान के राज्य प्राप्त करने का उल्लेख किया है। इससे भी रायान पड्रौना के दावे का कि उनके पूर्वज भूआल राय ने मकवानी राजा को परास्त करके पडरौना राज्य की स्थापना किया है, समर्थन होता है।

वाटिका के लेखक का यह वाक्य भगवान जाने क्या बात सत्य है बड़े महत्व का है क्योकि लेखक को इस सन्देह की आवश्यकता न होती यदि वास्तव में राज पडरौना राजा मझौली द्वारा भुआल राय को दिया गया होता।

भुआल राय का मानिकपुर से आना वाटिका के लेखक तथा शजरे शादाब के लेखक मोहम्मद अब्दुल गफ्फार फारुकी तथा अन्य लेखक मानते हैं। ***यह भुआल राय किस वंश के थे ? उनका उल्लेख पहले हो चुका है कि ये राजा जय चन्द और मानिकचन्द राठौर या गहरवार थे। उनका मूल वंश चन्द्रवंश है, जैसा कि पहले दिखाया गया है कि चन्द्रबंश राजा मनु (इच्छाकु) की दोखतरी (कन्या) औलाद से निकली है। अतएव भुआल राय गहरवार वंशीय क्षत्रिय थे।***

भुआल राय के नाम के पहले पदक राय की हैं। जो गहरवार वंशीय राजाओं के नाम के पहले की पदवी हैं। स्वर्गीय लाल खड्ग बहादुर मल्ल ने लिखा है कि मानिकपुर में अपने नाना के राज्य पर अवस्थित होने से उनकी वंश परम्परा पदक राय को राय होम मल्ल ने धारण किया। महान आश्चर्य है कि स्वर्गीय लाल साहब ने यह

भी लिखा है कि भुआल राय गहरवार राजा के दास थे और डोला के साथ आये थे। यह कैसा हास्यास्पद प्रसंग है कि जिसके राजा की पदवी राय हो और दास की पदवी भी राय हो यह केवल लगों और मनगढन्त बात है।

विसेन वंश वाटिका के लेखक लाल खड्ग बहादुर मल्ल एक शिक्षित और उच्च विचार व्यक्ति थे। आश्चर्य है कि उन्होंने रियासत पडरौना के बारे में कैसे एक अमर्यादा पूर्ण कथानक (हिकारत अंगेज अफसाना) लिख दिया जो प्रत्येक दृष्टि से गैर मुन्सफाना (लेखक के मर्यादा के विरुद्ध) है, उसे कोई शिक्षित तथा इन्साफ पसन्द व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता है। वे विसेन वंश वाटिका में लिखते हैं कि राजा रूपमल्ल का विवाह कन्तित के गहरवार वंशी राय की एक कन्या से हुआ था। इस विवाह सम्बन्ध से होम मल्ल पैदा हुए जो कालाकांकर के वर्तमान राजा के प्रथम पुरुष (मूरिस-ए-आला) थे। राजा के साथ एक दास आया। राजा का पैर दबाते समय सेवक का सिर राजा के चरण पर पड़ गया चरण में चन्दन लगा था। जो सेवक के ललाट पर पड़ गया। राजा की नींद खुली। उन्होंने सेवक के ललाट पर चन्दन के दाग देखे और उसे चौदह कोस राज बक्श दिया। फारूकी साहब लेखक ''शजरे शादाब'' इस लेख पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि मेरे कयास मे हरचन्द यह रिवायत एक हैरत अंगेजी अफसाना है उसकी तरदीह की कोई जरूरत नही है मगर ववजह तहरीर भी दिलचस्प है। इसलिए मैं उसको तहरीर कर देता हूँ।

''अव्वलन वाद मुलाहिजा उस सनद के जिसको मैं वजमन हालात राय बनमाला राय के नकल करूँगा। यह वाक्या लायके

तसलीम है कि शाहजहाँ बादशाह के अहदे दौलत (कार्यकाल) में मौजा सिधुआ व बड़े गांव खुर्द राय किशोर राय को बतौर नानकारे अता हुये थे और नस्मनामे से जाहिर है कि भुआल राय मौरिस रायान पडरौना (वानी रियासत) उनके जद्दे चहारुम चौथी पुश्त ऊपर थे। क्योंकर विश्वास किया जा सकता है कि राजा रूपमल्ल जो शाहजहाँ बादशाह के अहद में थे इन बानी रियासत को कहीं से ढूंढ लाये हों और जब मुसन्निफ किताब मजकूरकी (लेखक विसेन वंश वाटिका) तहकीकात का यह हाल है तो फिर उनकी दूसरी तहकीकात पर क्या भरोसा हो सकता है?''

राय हरहर राय और राय किशोर राय को अता किये हुये नान करों की सनद की हूबहू नकल निम्नलिखित है। इसकी मूल प्रतियाँ राय पडरौना मे आज भी मौजूद हैं। सनदें पृष्ठ सं० 34,36 संलग्न हैं)



"لیکن اونکی معزولی کے بعد اونکے عطیا کی بحالی اور منسوخی حاکمان جدید کے اختیار مین ہوتی تہی۔ چنانچہ عامل گورکہپور نے حسب سند مندرجہ ذیل کیشو رائے پسر بن مالا رائے کو دوگانون نانکار مین عطا کیئے۔

اللہ اکبر

شاہجہان
مرید
محمد صفدر

حسب المسطور عمل نمایند

متصدیان مہمات و معاملات حال و استقبال پرگنہ سدہوہ سرکار جونپور بدانند۔ چون زبدۃ الاقران چودہری کیشو رائے مرد دولت خواہ سبراہ کارست بنابروین موضع سلہ موہ وبڈگانون خرداز پتہ بڑگانون معمولہ پرگنہ مذکور درجہ نانکار چودہری مزبور از ابتدائے فصل خریف تنکوزئیل در ربیع پچقان ئیل سنہ ۱۰۶۷ عملی مقرر و مسلم کردہ شد باید کہ دیہات مذکور بموجب شرح ضمن بہ مومی الیہ دا گذارند کہ حاصلات آنرا متصرف شدہ بہ جمعیت خطر دردولتخواہی دسربراہی کار قیام نماید درین باب قدغن عظیم لازم دانستہ حسب المسطور بہ عمل آورند۔

تحریر فیتاریخ ۱۵ ار شہر ربیع الاول سنہ ۱۰۶۹ ہجری

لب تک موضع سدہوہ وبڈگانون ریاست مین شامل ہین اور راجہ اودت نراین رائے"

"میں ریاست کو ترقی دی اہلکاران شاہی کی نظروں میں رسوخ پیدا کیا چنانچہ از روئے سند مندرجہ ذیل اڈنگو پتہ رام پور کی زمینداری اسد اللہ خان امیر با تدبیر عہد شاہ جہان بادشاہ غازی نے عطا فرمائی تھی۔

اللہ اکبر



حسب المسطور عمل آمد

مقرر شد کہ متصدیان مہمات حال و استقبال پرگنہ سدہو بدانند کہ چون پران نات بہر تعلقہ دار پتہ رامپور من اعمال پرگنہ مذکور در ادائے مال واجبی حرام زدگی و حیل میمود بنابر آن از تغیر او پتہ مذکورہ را من ابتدائے فصل خریف پارس ئیل ۱۰۵۸ سنہ بہ زبدۃ الاقران چودری ہر ہر لائے مرحمت و مقرر فرمودیم باید کہ اورا چودری مستقل پتہ مذکور دانستہ باز پرس بہ عہدہ اوشناسند سبیل موی الیہ آنکہ نوعی سلوک نماید کہ رعایائے و دسکنار آن پتہ را از خود راضی داشتہ انچہ مال واجبی و حقوق دیوانی بودہ باشد موافق معمول و بر بست پرگنہ سرکار جواب میگفتہ باشد و در تردو آبادانی و کثرت زراعت سعی نماید کہ آثار آبادانی و معموری روز افرذن گردد درین باب تاکید دانستہ تخلف و انحراف نہ ورزند و بہ موجب مسطور عمل آرند۔

تحریر فی التاریخ ۱۵ شعبان ۱۰۶۰ سنہ "

'अठारहवीं सदी के जमींदार' के लेखक सैय्यद नजमुल रज़ा रिज़वी के अनुसार भूपाल राय के वंशज बिनमाला राय ने अपने एक दूसरे पुत्र किशोर राय को कुछ मौजों की जमींदारी देकर मौजा लक्ष्मीपुर में अलग से बसा दिया था। किशोर राय ने भी स्वतन्त्र रुप से अपनी जमींदारी को अत्याधिक विस्तृत किया। एच. आर. नेविल, 'सप्लीमेन्ट्री नोट्स, गोरखपुर-1921 ई०' पृष्ठ 69 के अनुसार किशोर राय सम्राट शाहजहां के समय में तरफदार के पद पर था।

दूसरे यद्यपि रियासत मझौली राजगान गोरखपुर में ब्रह्म क्षत्रिय होने तथा जमीन्दारी और इलाके दारी के कारण सबमें सर्वश्रेष्ठ थी परन्तु मुसलमानों के राज काल में यह कोई बड़ी स्वतन्त्र और बड़ी रियासत नहीं थी। यदि ऐसी स्वतन्त्र रियासत होती तो मुसलमान शासकों से इनका कहीं न कहीं युद्ध हुआ होता। या तो यह अपनी स्वतन्त्रता और श्रेष्ठता को कायम रखने के लिए लड़ाई किये होते या मुसलमान शासक इनको दबाने के और इनपर कब्जा करने के लिए ही कुछ किये होते, परन्तु हम इस प्रकार का कभी युद्ध या लकरान का वर्णन किसी इतिहास की पुस्तक में नहीं पाते। इसलिए इस दर्जे के रईस के विषय में विश्वास कर लेना कि एक साधारण सेवा के उपलक्ष में एक दास को चौदह कोस का राज्य दे दिये होगें, असम्भव है। इसके अतिरिक्त इलाके जात जो पडरौना राज्य के संस्थापक को मझौली के राजा द्वारा दिया गया, लिखा गया है, मझौली राज्यान्तर्गत नहीं था। सम्राट अकबर के शासन काल में यह इलाका मकवानी राजा मदन सेन के कब्जे में था। अतः दूसरे के इलाके को मझौली के राजा कैसे किसी को दे सकते हैं ? स्वयं वाटिका के लेखक को सन्देह है कि राज पडरौना उसके संस्थापक को मझौली द्वारा दिया गया है अथवा वे लोग इसे बहादुरी से प्राप्त किये हैं। लेखक लिखते हैं भगवान जाने

अतीत काल की इतिहासिक घटनाओं की जानकारी प्रमाण सहित बहुधा बहुत कम उपलब्ध है अतएव बुद्धि और अनुमान (कयास और करीने अक्ल) से केवल यह बात समझ में आती है कि बहादुरी की कृतज्ञता के उपलक्ष में, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है कि पांच गांव राजा मझौली राजा भीम मल्ल ने रियासत पडरौना के प्रथम पुरूष और राज्य के संस्थापक भुआल राय को दिये। इसके बाद की उन्नतियाँ इस रियासत की हुई वे सब इस वंश के सामर्थ्यवान पुरूषों के पुरूषार्थ द्वारा हुई। जमीन्दारी उन्मूलन के पूर्व तक राज पडरौना का इलाका व शान शौकत मझौली राज से बढ़कर था।

तीसरे यह कि राजा बोध मल्ल व राजा रूप मल्ल के बीच केवल दो पुश्तें खानदान मझौली की बीती हैं और रियासत पडरौना के कार्यालय में सौभाग्य से अब तक एक चिट्ठी जो **राजा बोध मल्ल** ने **रायनाथ राय** को लिखा है कि "यह रियासत श्रीमान् की है। आप पांच सात हजार सवार व बरकन्दाज और तोपची सहायता के लिए साथ लायें और ऐसे सामान के साथ आयें जो कि आपकी मर्यादा और शान सौकत के अनुसार हो।" इस लेख से प्रकट होता है कि रायान पडरौना का वंश कितना ऊंचा और मर्यादित था। और मझौली के राजा उनपर कितना-कितना भरोसा रखते थे। ओर उन्हें कितना ऐश्वर्य शाली तथा बड़ा मानते थे। यदि इस खानदान के आदि पुरूष एक दास होते तो राजा बोध मल्ल जो साधारण पत्रों मे भी अपने बड़े-बड़े अलक़ाब (पदवियां) लिखते थे, हरगिज़ इस मजमून से सहायता की प्रार्थना उसी खानदान के सरदार से न करते।

राजा बोध मल्ल की चिट्ठी की प्रतिलिपि

मोहर

रियासत मझौली

राजा बोध मल्ल

स्वस्ति श्री सरूप नाराणेत्यादि विविध विरदावली विराजमान मनोन्नत श्री महाराज हिन्दूपति राज राजेश्वर श्री श्री श्री शुभसेन नरेन्द्र देवानां सदा समर विजयी नाँ श्री नाथराय और हुलास राय के कुशलाई पूर्वक पत्र मिदं आगे पत्र आईल इहां का समाचार नीक वांटे आगे इ जगह राऊर है ताही अर्थ कवनो सन्देह नैरवाट सभा समेत आऊ जैसे राऊर खुशहाली होइ तइसे करब रउवाँ भले अब पांच सात हजार असवार और बरकान्दार तोपची पांच सात सूधा अपने साथ लिहले आइसे करब, आगे अपना जागह का बदले कवनौ फिकीर न करेऊँ जैसे रऊरा अपना जगह पर जैसन से करब ताही बात क कवनो सोच न करिऊँ आगे अबही तो नीके बाटे तो सामील सके आईब कौनो बात जनि मानि सामी मैके आइब जस उन्हक भारपन और मरजाद रही से।इति।

सम्बत् 1745 साल माह बैसाख सुदी 10 रोज भौ, मकवानपुर।

डाक्टर हरिनन्दन पाण्डेय सुपरिटेन्डेन्ट..... (इतिहास के मर्मज्ञ आर्किलाजिकल डिपार्टमेण्ट आफ इण्डिया) तथा विसेन वंश वाटिका के रचयिता और शजरे शादाब के लेखक सभी भुआल राय को कड़े मानिकपुर से आना मानते हैं। लाल खड्ग बहादुर मल्ल ने बिना किसी प्रमाण या आधार के

उनको दास लिख दिया है। इन्हीं के पद चिह्नों पर मौलाना फारुकी साहब ने भी उन्हें वैश्य श्रेणी में रखकर गिरोह सैथवार में डाल दिया है।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि अतीत काल की घटनायें विशेषतः वे घटनायें जिनका सम्बन्ध मध्यवर्ती रईसों से थे, के बारे में तत्कालीन लेखकों ने बहुत कम प्रकाश डाला है। सम्भवतः इन लेखकों की जानकारी में ऐसा विस्तार नहीं था कि वे मध्यवर्ती रईसों की तजकिरों से अपनी पुस्तकों को भविष्य काल के लिए लायके कद्र बनातें। बहरहाल हम ऐसे राजाओं और रईसों के वंशों का, जिनको अपनी प्राचीनता पर गर्व है का पूरा विवरण किसी इतिहास के पन्नों में नही पाते। यदि लेखकों का यही हाल रहा और मध्यवर्ती रईसों और जनता के हालात का वर्णन अपनी पुस्तकों मे नहीं किये तो जो सर्माया (कोष) मालूमात का अब तक सुरक्षित है, वह भी मादूम (समाप्त) हो जायेगा।

परन्तु खुशी की बात है कि ऐतिहासिक अनुशंधान दिनो-दिन प्रगति पर है और जो धटनायें अभी तक दबी हुई थीं या धुंधली थीं प्रकाश मे आ रही हैं। और सत्य बातें सामने आ रही हैं। भूलों का सुधार भी हो रहा है।

Indian Princes, Chiefs and Nobles नामक पुस्तक में 1967ई० मे भुआल राय के वंश के बारे में निम्नलिखित जानकारी दी है:

The family of the Gaharwar Kshatriyas came into Prominence in the first half of the 17th century. In 1686 the then head of the family Rai Nath Rai received a nankari ground of 33 villages and 50 arms from Aurangzeb.

गहरवार क्षत्रियों का परिवार सत्रहवीं सताब्दी के प्रथम अर्द्धभाग में प्रमुखता में आयी । सन् 1686ई० में सम्राट औरंगजेब ने उस समय के इस परिवार के मुखिया पुरुष रायनाथ राय को 33 तैतीस गांव की नानकारी और पच्चास हथियारों की एनायत फरमायी थी (दिया था।) शहंशाह औरंगजेब द्वारा रायनाथ राय को दिये गये नानकारों और अनायतों के मूल प्रमाण पत्र पडरौना राज के कार्यालय में मौजूद हैं।उनकी शुद्ध प्रतिलिपियां यहाँ संलग्न है।



ہوالغنی

باسمہ سبحانہ

حسب المسطور بہ عمل آرند

عالم گیر بادشاہ غازی

محمد اورنگ زیب بہادر

الحق خان مرید محی الدین

مقرر شدکہ متصدیان مہمات حال واستقبال پرگنہ اورنگ آباد عرف سدہوہ بہ عنایت والتفات اُمیدواربودہ بدانند۔

کہ چون زبدہ الاقران چودھری ناتھ رائے عملہ پرگنہ مسطور موضع سمرا کٹکوئیان وغیرہ بجمیع مبلغ ہفت صدی ہشت روپیہ سیزدہ آنہ مع ما و مالہ در وجہ نانکار مقرر دار دوری بنولا کہ حقیقت دولتخواہی ونیکوخدمتی مشارٌالیہ بہ ظہور پیوست لہذا بہ شرط خدمت دولتخواہی مواضع مذکورمن ابتدائے فصل کریف یونت ئیل سنہ ۱۰۷۴ فصلی موافق حسب الضمن بدستورسابق مقرر و مسلم داشتہ شد باید کہ در وجہ نانکار او مقرر دانستہ بہ ہیچ وجہ مزاحمت نرسانند کہ حاصلات آنرا صرف مایحتاج خود نمودہ در دولتخواہی مقید سرگرم باشد درین باب قدغن دانستہ تخلف وانحراف نورزند۔

تحریرفی التاریخ ۲۲ ذیقعدہ ۱۰۷۷

ایک بڑا فائدہ بخش اعزاز رائے صاحب نے یہ حاصل جملہ تعلقہ داران پرگنہ سے اُنکو اوپر جمع مالگذاری کے دو روپیہ سیکڑا اندرازانہ لینے کا حق عطا کیا گیا۔ اسوقت کی جمع مالگذاری ہمکو معلوم نہیں ہے اور اس لئے تحریر نہیں کر سکتے بذریعہ اس تعلق جدید کے آمدنی ریاست مین کسقدر ترقی اور افزونی ہوئی لیکن اس کے باور کرنے مین تو شک نہیں ہے کہ سند مندرجہ ذیل نے ان عالیقدر رئیس کا وقار اپنے ہمچشمون مین بہت بڑھا دیا اور جابر طور پر اونکی حکومت کل پرگنہ مین پھیل گئی۔

هوالغنی

عالم گیر بادشاہ غازی
محمد اورنگ زیب بہادر
الحق خان مرید محی الدین

مقرر شد کہ ھصد یان مہات حال و استقبال پرگنہ اورنگ آباد عرف سدھو سرکار کہ چون زبدۃ الاماثل والاقران چودھری ناتھہ رائے مروے دولتخواہ و سربراہ کارست لہذا صدودی بر جمع مال پرگنہ مذبور من ابتدائے فصل خریف یونت ئیل ۱۰۷۴ھ فصلی حسب الضمن مقرر نمودہ شد باید کہ صدودی مسطور درجہ موی الیہ مقرر دانستہ از ہر تعلقہ داران موافق جمع مال فصل بہ فصل سال بہ سال دہانند کہ صرف مایحتاج خود نمودہ درکار دولتخواہی دینکو خدمتی مقید سرگرم باشند درین باب

قدغن لازم دانستہ تخلف وانحراف نورزند۔ تحریر فی التاریخ نوزدہم ذلقعد ۱۰ سنہ جلوس ہمایون

مطابق ۱۰۷۷ ہجری۔

اوس زمانہ مین عطائے نکار کی دو طریقے تھے ایک یہ کہ مقدار زرنقد معین کی جاتی تھی جسکو پابندہ نانکار جمع مال سے منہا کر کے باقی روپیہ داخل خزانہ کرتا تھا۔ اور دوسری صورت یہ تھی کہ مسلم موضع نانکار مین دیدیا جاتا تھا اور اس دوسری صورت مین کل جمع اوس موضع کی حق نانکار دار سمجھی جاتی تھی۔ کبھی ایسا ہوتا تھا کہ بطریقہ اول ایک رقم نانکار کی معین کی گئی اور بعد ازان نانکار دار کے حق مین رعایت مزید ہوئی اور بقیہ جمع بہی اوس کے لئے چھوڑ دی گئی یعنی مسلم موضع نانکار مین دیدیا گیا۔ واسطے تعبیر اسناد نانکار کے جن کا حوالہ آیندہ دیا جاے گا اس تفرقہ کا ملحوظ رکھنا ضروری ہے۔ اور اب ہم چند اسناد نانکار کو بجنسہ نقل کرتے ہین جو منجانب عاملان شاہی کے رائے ناتھہ رائے کو عطا ہوئی تھین۔

ہوالغنی

عالم گیر

شاہی

طاہر خاں

حسب المسطور عمل نمایے

ھصدیان مہمات حال واستقبال پرگنہ سدہوہ بدانند۔ کہ بموجب سند رفعت وفضائل

محمد

بادشاہ عالمگیر غازی

فدوی قاسم

متصدیان مہمات حال واستقبال پرگنہ سدھوہ سرکار جونپور مضاف صوبہ الہ آباد بدانند چون زمینداری پتہ داندوپور عملہ پرگنہ مذکور قدیم از آبائی واجدائی از ان ناتھ رائے است پیش ازین درمیان پانڈے موہن لعل سرکاری وناتھ رائے نقیض افتادہ پانڈے مشار الیہ قابو خود یافتہ زمینداری پتہ مرقوم بہ زوردلقدی گرفتہ قابض ومتصرف بودند درینولا حقیقت دولتخواہی ومالگذاری ناتھ رائے مسطور بہ ظہور گشتہ پتہ مزبورہ بدستور قدیم از ابتدائے فصل ربیع ۱۱۱۰ فصلی حوالہ او نمودہ شد باید کہ رجوع بودہ مال واجب سرکار والافصل سال بہ سال داخل می ساختہ باشد درین باب تاکید وابستہ حسب المسطور بہ عمل آرند۔

فی التاریخ یازدہم شہر ربیع الثانی ۴۶ جلوس میمنت مانوس

ناتھ رائے نے بذریعہ خریداری کے بہی جائداد کثیر حاصل کی تہی اون کے نام کے بیعنامجات دفتر یاست مین موجود ہین جنمین ہم دو بیعنامہ کو بجنسہ نقل کری دیتے ہین تاکہ اوسوقت کا طریقہ تحریر دستاویز ناظرین کو معلوم ہو اور یہ بہی اونپر واضح ہو کہ زمانہ

نقل کرتے ہین کہ اون سے ظاہر ہو کہ چند مرتبہ زمینداری ناتھہ رلے کی ضبط ہوا اور پھر واپس دی گئی اور یہ دونون واپسی درباری پیروی کے ذریعہ سے عمل مین آئی تہی۔

عالم گیر
شاہ
تربیت خانہ زاد باد
خان ۱۰۶۲

متصدیان مہمات حال واستقبال پرگنہ سدھوہ سرکار جونپور متعلقہ چکلہ معظم آباد عرف گورکہپور بدانند کہ چون زمینداری پرگنہ مذکور از قدیم الایام باسم زبدۃ الاقران ناتھہ رلے زمیندار مقرر بود چند روز بحسب تعرقات در عمل امارت وزارت پناہ فدائی خان اخراج گردیدہ عاقبت کارخان معز الیہ نظر بدولتخواہی وسربراہی مشار الیہ پروانہ زمینداری انجابہ موی الیہ وادہ بود درینولا کہ حقیقت دولتخواہی وسربراہ کاری مشار الیہ نیز بظہور پیوست بنابرآن زمینداری پرگنہ مرقومہ بدستور سابق بہ موی الیہ بحال ومسلّم واشتہ شد کہ شب و روز بچبوترہ رجوع بودہ درسربراہی ومالگذاری مقید باشد باید کہ موی الیہ را زمیندار آبجا مستقل دانستہ سرگرم کار سرکار والا گردانند و درھر کار ومعاملات آبجا متکفل ومستقل حال دانند درین بابت کید دانند۔

بتاریخ پنجم جمادی الاولیٰ ۳۳۶ھ جلوس والا قلمی شد

عالمگیر غازی

معتقد بادشاه

ابوالفتح

منصدیان مہمات حال واستقبال پرگنہ سدہوہ سرکار جونپور تابع چکلہ معظم آباد بدانند که چون درینولا حقیقت ناتھہ طرفدار پرگنہ مذکور بظہور پیوست که سید حسین گماشتہ علی قلی خان فوجدار سابق درسنہ یکہزار و یکصد فصلی باغوائے بعض عرض گویان پتہ بانسی وغیرہ حسب الضمن از تعلقہ ادبر آوردہ حوالہ مدہکر داسارنگ وتر بہون وکیشو طرفداران پرگنہ مردر نمودہ چنانچہ طرفداران مسطور از راہ تمردتن بادلائے مالواجب نمید ہندو کاشتکار نمینمایند بنابرآن تیجات مرقومہ بشرط آباد انکاری و مالگذاری از ابتدائے فصل خریف تنکوزئیل ۱۱۰۳ھ فصلی بدستور سابق بعہدہ ناتھ مسطور شد که دراز دیا آبادی کوشیدہ مالواجب سرکار والا را بر وقت داخل مینمودہ باشد باید که پتجات مرقومہ از تصرف نام بردہ ہابر آوردہ بتصرف مومی الیہ وگذارند درینباب که پتجات مرقومہ از تصرف نام بردہ ہابر آوردہ بتصرف مومی الیہ وگزارند درمیناباب قدغن دانند۔

تحریر فی التاریخ ۲۳ رشہر ربیع الاولیٰ ۳۹ھ جلوس والا

اقاضی خلیل الرحمان مبلغ چہار صد روپیہ از محصول دیہات مفصلہ ضمن درو جہ نانکار بر آئمہ قرار مت درنیوالانیز بہ شرط مالگذاری و آبادان کاری وحاضر بودن در برترہ داولئے مال واجب بوقت و برآمد زعہدہ سرانجام زراعت بہنگام وعدم برواز ابتدائے خریف ییلان ئیل سال ۱۰۸۵ فصلی بدستور بحال و مسلم داشتہ شد باید کہ مبلغ مذکور راز محصول دیہات مذکورہ مشروط بشرائط مرقوم الصدر درو جہ نانکار او بحال داشتہ بہ تصرف مشار الیہ وگذارند کہ متصرف بودہ در تقدیم مراتب دولتخواہی و سربراہی و مالگذاری ساعی وسرگرم باشد۔

۲۵ رشوال ۲۱ سنہ جلوس والا

تفصیل مواضعات ظہری سند

للعمارہ

پڈرونان	پکڑی کرد	پکڑی بزرگ	سرپا و چک رگھناتھ
مہ موضع لہ ۱۲ار	مہ موضع ے	مہ موضع لعہ ۴ار	مواضعان
			اصلی۔ داعلی
			ماللعہ

چھپرہ مانک	کٹیا	بانسی خاص	بھٹولیا
مہ موضع لعہ ۸ار	مہ موضع	مہ موضع	مہ موضع للعہ ۸ار
	سدھوہ	پانڈے بزرگ	
	دو موضع للعہ	مہ موضع ے	

'अठारहवीं सदी के जमींदार' नामक शोध ग्रन्थ में सैय्यद नज़मुल रज़ा रिज़वी लिखते हैं कि मुगल सम्राट औरंगज़ेब के समय में यहां (पडरौना) के जमींदार नाथ राय को सन् 1681 ई० में सरबराहकार अथवा राजस्व प्रशासक नियुक्त किया गया और उनकी सेवाओं से प्रसन्न हो कर मुगल सम्राट ने 5500 रु० वार्षिक राजस्व वाले 33 मौजे माफी के रुप में प्रदान किये।

औरंगजेब आलमगीर बादशाह ने अपनी तलवार 'तेगे आलमगीर' रायान पडरौना को दिया था, जो रियासत में सुरक्षित है। जबकि 'बादशाह नामा आलमगीरी' 'सफा 411' में औरंगजेब बादशाह का हुकुमनामा दर्ज है। बादशाह ने हुक्म दिया था कि हजूर तथा तमाम सूबेजात में सिवाय राजपूत के कोई हिन्दू हथियार न बांधे, फील, पालकी और अरबी, एराकी घोड़े की सवारी नहीं कर सकता है। ***इससे स्पष्ट है कि रायान पडरौना राजपूत हैं क्योंकि बादशाह ने स्वयं अपनी तलवार (तेगे आलमगीर) रायान पडरौना को दिया था।***

राय भूप नारायण राय

राय नाथ राय ने परिश्रम द्वारा जायदाद को बहुत बढ़ाया था। उनके नाम के कई वैनामें रियासत पडरौना के कार्यालय में मौजूद हैं। राय नाथ राय की मृत्यु के बाद हुलास राय रईस खानदान हुये, परन्तु थोड़े ही दिनों में उनका स्वर्गवास हो गया। इनके पुत्र कम आयु के थे। इस लिए रायभूप नारायण राय रईस खानदान स्वीकार किये गये थे। उनमें अपने पिता के सब गुण मौजूद थे और कुछ उनमें विशेष गुण थे। रायनाथ राय केवल सिपाहियों का आदर करते थे परन्तु भूपनारायण राय प्रत्येक हुनर मन्द के कद्रदान थे। नाथ राय एक बहादुर सिपाही

थे। भूपनारायण राय वास्तव में एक वीर रईस पुरुष थे। जनता के कल्याणार्थ और विकास कार्यों की ओर ध्यान देने का अवसर नाथ राय को नहीं मिला। भूपनारायण राय ने इस ओर वास्तविक रूप से ध्यान दिया। उनका समय आज से ढाई सौ वर्ष से अधिक समय बीत चुका परन्तु उनकी उदारशीलता के प्रमाण और अंश अब तक मौजूद हैं। जिनका वर्णन आगे किया जायेगा।

इस रईस के समय में मुगल साम्राज्य का दीपक झिलमिला रहा था। दिवाने आम और दिवानेखास जिसमे आलिमों और दानिशमन्दो की भीड़ रहती थी, अब वहाँ महमूद शाह राजसिंहासन पर बैठे शराब के नशे में झूम रहे थे और उनके ईर्द गिर्द मसखरों और नशाखोरों की जमघट थी इसलिए शासन कार्य अस्त व्यस्त हो गया था।

चकला गोरखपुर में बंजारो का आतंक था। यह जंगली कौम लुटेरा थी। भूपनारायण राय ने इनकी भी सेना को अपने अधिकार में किया। बंजारो और मुसहरों की मिली जुली सेना मुगल शासन को भी चुनौती देती थी और इस झिलमिलाते हुए चिराग के लिए हमेशा सिर दर्द थी। नेपाल की तराई के राजे इन बंजारो और लुटेरों के आतंक से सुरक्षित रहने के लिए भूपनारायण राय को नजराने में धन और इलाके दिये थे।

राजा मझौली ने सरकारी आज्ञाओं का उल्लघंन किया। इसके कारण उनको दण्ड देने की नियत से फौजदार तैनात किये गये। राजा साहब ने उस सम्बन्ध से जैसा मझौली और रायान पडरौना में था, रायभूपनरायण राय से सहायता की प्रार्थना किया। राय साहब ने अपने भतीजे रामदत्त राय को, जो बड़े वीर और योद्धा थे, तीरन्दाजों

और दो सौ बरकन्दाजियों के साथ राजा साहब मझौली की सहायता के लिए भेजा।

रामदत्त राय ने शाही लश्कर को परास्त कर दिया परन्तु स्वयं शत्रुओं के गोले से घायल हो गये। विजय के आनन्द के साथ इस विजेता को यह राय कायम करनी पड़ी कि उनके जीवन का चिराग अब बुझने ही वाला है।। मातृभूमि विचित्र प्यारी होती है। मरने वालों की भी यह इच्छा होती है कि वे अपना दम उस जमीन पर तोड़ें जहाँ उनके जीवन का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था। अतएव उन्होंने इच्छा प्रकट किया कि युद्ध स्थल से पडरौना पहुँचाया जाये। उनकी इच्छा के अनुसार उन्हे पालकी से पडरौना लाया गया परन्तु पालकी अभी पडरौना तक नहीं पहुँच पायी थी कि आत्मा की पंक्षी दैहिक पिजड़े से उड़ गयी। (तायरे रूह कफ्से अन्सरी से परवाज कर गयी) और घर के देखने का आनन्द उस वीर नौजवान के साथ चली गयी।

भूप नारायण राय को अपने भतीजे के मरने का, जिसकी अवस्था मृत्यु के समय केवल चौबीस वर्ष की थी, बड़ा आघात पहुँचा परन्तु उनको तसल्ली केवल इस ख्याल से थी कि उनका भतीजा युद्ध क्षेत्र में अपने कुल की ख्याति को प्रकाशित किया। इस सहायता की कृतज्ञता से राजा मझौली ने रियासत पडरौनाको 12 गांव दिये। जो बहुत समय तक रियासत पडरौना के अधिकार में रही।

भूपनारायण राय के दूसरे भतीजे बानसिंह राय थे। उनके मिजाज में शोखी बल्कि एक प्रकार का पागलपन था। उन्होंने एक दिन यह बहस पेश किया कि रियासत उनके पिता हुलास राय की थी, इसलिए रियासत का मालिक उन्हीं को होना चाहिए। इरादा साफ था दोनो तरफ से गोलियां चलीं अन्त में भतीजे को वहाँ से

हटना पड़ा। वे राजा रघुपति शाही, रियासत बेतिया के पास गये। जैसा कि रईसों का दस्तूर है कि राजा साहब ने इनकी बहुत खातिर किया और मौजा मठिया वगैरह उनको नानकारे में दिये। परन्तु भूपनारायण राय इसे अपनी मर्यादा के विरूद्ध समझते थे।

उन्होंने सोचा मेरा भतीजा नानकारी पर रहे, यह ठीक नहीं। अपने यहाँ बुला लिया। लेकिन उनकी दीवाना हरकतों से हमेशा सावधान रहा करते थे। साड़ी के तप्पे पर रायनाथ राय बैयनामादार की हैसियत से काविज रहे। राय भूपनारायण राय के समय में उसकी बावत मुकदमा खड़ा हो गयो। मीरखुदा यार खाँ फौजदार ने राय साहब के पक्ष मे उसका फैसला करके निम्नलिखित प्रमाण दिया।



سنہ ۱۱۴۲

محمد شاہ بادشاہ غازی

سنہ ۱۲ امیر خدا یار خان

فدوی

متصدیان مہمات و معاملات حال و استقبال پرگنہ سدہوہ سرکار معظم آباد عرف گورکھپور صدیہ اودھ

بدانند بوضوح پیوست کہ زمینداری پتہ ساںڈی عملہ پرگنہ مذکور از اباءً عن جدٍ بہوب مزین است

در نیولا بہولی و مدن موہن وغیرہ دنموہ نمود چون تحقیق شد کہ دعویدار باطل و زمین داری بند مذکور

خرید اباءً و عن جدٍ بہوب نرزئین است لہذا زمینداری پتہ مسطور بنام روہ از ابتدائی سنہ ۱۱۴۳ فصلی

بحال و برقرار داشتہ شد باید کہ مشار الیہ را زمیندار اجنا مستقل دانستہ از سخن صلاح از وسا برود کہ

سرکار بنا بر پتہ مذکور کہ بقدلیت مسار الیہ داخلست معرفت او دیگرفت باشد درین باب تاکید اکید

دانستہ حسب لمسطور بہ عمل آرند۔

بتاریخ یزدہم شہر رجب سنہ ۱۸ جلوس والا مطابق سنہ ۱۱۴۸ھ

कुछ वर्षों तक भूपनरायण राय भी तप्पा साड़ी पर काविज रहे और नाधे का पोखरा और छोटे-छोटे अन्य कई पोखरे खोदवाये और बाग लगवाये परन्तु धोखल राय जो जमींदार साबिक थे, ने एक जदीद चकलेदार को जिसका नाम गैडा राय था, अपना तरफदार बनाया। उसने जोर डाला और लोग भी बीच में पड़े। बहरहाल तप्पा साड़ी की जमीन रियासत से निकल गयी। लेकिन राजा उदित नारायण राय बहादुर ने इस तप्पे के कुछ गाँव को खरीद लिया। उदित नारायण राय इस वंश मे आगे की पीढ़ी मे पैदा हुए। उन्हें राजा की पदवी मिली थी। इसका वर्णन आगे किया जायेगा।

रामकोला के राजपूत फिरका टिटिया के लोग भी परगना सिधुआ के जबरदस्त ताल्लुकेदार समझे जाते थे। किसी समय भूपनारायण राय की जमायत थोड़ी थी। रामकोला के क्षत्रियों ने विजय पा लिया। राय साहब के लस्कर का नक्शा छीन लिया गया। लेकिन राय साहब ने पूरी शक्ति से दूसरा आक्रमण किया। रामकोला वालों को शिकस्त दिया। गांव लूटे गये और जमीन्दारों के घरो के दरवाजे उखड़वाकर विजय चिह्न के लिए पडरौना लायेगये।

भूपनारायण राय उदार हृदय वाले थे और चुंकि इनकी सन्तान न थी, इसलिए अपने नाम के लिए पोखरे खुदवाये और बागान लगवाये। ग्राम गोरवलिया में एक बहुत बड़ा पोखरा जो भूपसागर नाम से मौजूद है, इन्ही रईस का खुदवाया हुआ है। एक बाग जिसका नाम लखराँव है, जिसमें एक लाख आम के दरख्त थे, आपने लगवाया था। आज भी, ढाई सौ वर्ष के बाद भी, इसमें दस हजार से अधिक पेड़ मौजूद हैं। जागीर अता करने में भी यह रईस बड़े हृदय वाले थे। ग्राम हरकुआ कत्थकों को और ग्राम गनेशी

पट्टी लोहारों को, ग्राम परशुरामपुर व जोगी छपरा व टोलवरवा पट्टी और पचपेड़वा रघुनन्दन ओझा के वारिसों को साकिन मौजा-मगोरपट्टी जिला दरभंगा को इस उदार हृदय वाले रईस ने दिया था। आराजियों के टुकड़े तो बहुत से लोगों को सहायता में दिये थे।

एक सही घटना :-

फजले अली खाँ के हालात

फजले अली खाँ शेख मुहम्मद कासिम के पुत्र अब्दुल्लाह खाँ का पुत्र था। वह गाजीपुर का अमीर था वह बहादुर तो बहुत था परन्तु उसके अत्याचार बहुत बड़े थे। एक नकल उसके अत्याचार की यह है कि एक बार गंगा नदी में बहुत बाढ़ आयी हुई थी। इस अत्याचारी ने आदमियों से भरी हुई नाव को केवल इसलिए डुबा दिया कि इसकी बुद्धिहीन पत्नी आदमियों के डूबने का दृश्य देख मजा ले। आखिरकार अपने अत्याचार के नतीजों को स्वयं भांपकर फजले अली खाँ गाजीपुर से भागा। उसके परिवार के लोग भी इस भय से इधर-उधर भागे ताकि अत्याचार के भुक्त भोगी अपना क्रोध उन पर न उतारें। शेख अब्दुल्लाह उत्तम कुल फारूखी से थे, परन्तु फजले अली खाँ की माँ मल्लाह जाति की थी। वह भागकर सरयू नदी के इस पार उतर आयी और भूपनरायण राय के रियासत की शोहरत सुनकर पडरौना पहुँची। राय साहब ने उसकी सहायता किया। बहुत दिनों तक वह इत्मीनान के साथ पडरौना में रही। राय साहब ने उसके साथ नेकी का वर्ताव किया। संयोग को देखिये कुछ दिनों के बाद फजले अली खाँ गोरखपुर का आमिल नियुक्त हो गया। फिर क्या था बड़े आदर के साथ उसकी माँ को गोरखपुर

पहुँचाया गया परन्तु फजले अली खाँ ने इस निः स्वार्थ कृतज्ञता का बदला बुराई के साथ दिया।

इस इजमाल की तफसील यह है कि फजले अली खाँ अपने फिजुलखर्ची और विलासिता के कारण फाकामस्त हो गया। उसकी माँ बहुत दिनो तक पडरौना रही। वह भूपनारायण राय को पुत्र कहा करती थी। अपने नेत्रों से राय साहब के शान शौकत को देखती थी। उसने इस रियासत के समृद्धि का वर्णन अपने बेटे से किया और उसने बेटे को आशा दिलायी कि इस रईस से पर्याप्त सोना, जिसकी आवश्यकता है, वसूल हो सकता है। फजले अली खाँ ने भूपनारायण राय को एक मधुर पत्र लिखा। राय साहब प्रसन्न चित्त होकर इस आशा से गोरखपुर पहुँचे कि माता के प्रेम प्रसाद और भाई साहब के उदार भाव से लाभान्वित होंगें। परन्तु गोरखपुर पहुँचकर उन्हें मालूम हुआ कि यह सब ख्यालात गलत थे। वास्तव में उनके साथ छल किया गया।

घनहू राय, जो हुलास राय के पोते थे, को भी फजले अली खाँ के माता के प्रेम पर भरोसा था। वह भी इस ख्याल से गोरखपुर पहुँचे कि पितामह (दादा) के साथ अपना नाम भी बतौर शरीक रियासत मिस्ल बन्दोबस्त में दाखिल करा लें। फजले अली खाँ ने इन दोनो सरदारों पर पहरा नियुक्त करा दिया और पर्याप्त सोने की मांग किया, जिसका प्रबन्ध करना इन लोगों के शक्ति के बाहर था। बहुत कहने सुनने के बाद यह निर्णय हुआ कि इन दो सरदारों में से एक इलाके पर जा कर मांगी हुई रकम (धनराशि) सोना का प्रबन्ध करें, और एक बतौर जमानत हिरासत में रहें, जब तक धनराशि जमा न करें।

भूप नारायण राय ने अपनेपोते को समझाया कि अब मैं बुढ़ाहो गया हूँ। वह संसार से और संसार उनसे आसूदा हो चुका है। तुम नौजवान हो और तुमसे खानदान को बड़ी आशायें हैं। जितनी धनराशि मांगी जा रही है, उसका इकट्ठा करना बहुत कठिन है परन्तु तुम सोना एकत्र करने के हीले से यहाँ से निकल जाओ और मैं अपना प्रबन्ध कर लूंगा। किसी तरह धनहू राय को पडरौना आने की इजाजत मिल गयी। पडरौना आकर उन्होंने पूरी कोशिश की, फिर भी मकदार मतालिवा (मांगी गयी धनराशि) का प्रबन्ध न हो सका। उन दिनों हरिचन्द देहात अपनी पैदावार से खुशहाल था परन्तु रूपया कम था। ताल्लुकेदारों के कोष सर्वदा खाली रहा करते थे। इधर फजले अली खाँ सोने के मोतालिबे के लिए जिद्द कर रहा था। और इन रईसों को लगातार धमकियाँ दे रहा था। मर्यादा वाले इस रईस को धमकियां सहन न हो सकी। अन्त में उन्होंने हीरे की कन्नी चाटकर अपनी जान दे दिया।

چوں آہنگ مزتن کند جانپاک چہ بہ حکمت سر چند برادے خاک۔

(चुँ आहंग मुज़तन कुनद जांपाक च ब हिकमत सर चंद ब्रां दिये ख़ाक)

भूपनारायण राय यदि धोखे से न बुलाये जाते तो फजले अली खाँ में वह शक्ति न थी कि राय साहब को वह अपनी फौजी ताकत के जरिये किसी प्रकार गिरफ्तार कर पाते। अतएव भूपनारायण राय के मृत्यु के बाद इस अत्याचारी ने बहुत सिर पटका परन्तु धनहू राय उसके हाथ न आ सके और न उसको एक टका मिल सका।

राय धनहू राय

राय भूपनारायणकी मृत्यु के बाद राय धनहूराय रियासत के मालिक हुए। उनमें अपने पूर्वजो के गुण ओर हौसला मन्दी तथा वीरता थी परन्तु उनका कार्यकाल अत्यन्त उलझनों और पेचदगी के वातावरण में शुरू हुआ जो उनके जीवन के अन्त तक रहा। परन्तु उन्होंने बड़े साहस और बुद्धिमत्ता से रियासत को सम्भाले रखा और जिन लोगों ने रियासत के हकों के विरूद्ध हाथ बढ़ाया, उन्हे बुरी तरह परास्त कर दिया।

फजले अली खाँ ने अपने जोशे गजब से कुछ ताल्लुकेदारों से मौजे बड़गांव सिकटा और अहिरौलीका कबुलियतनामा लिखवा लिया। परन्तु जब फजले अली खाँ स्वयं माजूल होकर गोरखपुर से निकाला गया तब राय साहब ने इन इलाकेदारों को ऐसा दण्ड दिया कि वे नकद हयात को भी खोकर जमीन्दारी की कश्मकस (तनाव) से स्वतन्त्र हो गये। और तबसे फिर किसी जमीन्दारमें यह हौसला बाकी न रहा कि वह रियासत के इलाके पर बकबूल जायजाद दस्तन्दाजी करने का साहस कर सके।

भगोछिया भूमिहारों की राजधानी होसपुर जिला शाहवाद सूबा बिहार में थी और परगना सिधुआ जोवना, चकला गोरखपुर में भी इस रियासत के बहुत से गाँव उसके अधिकार में थे। शाहवाद का जिला सन् 1765ई0 मे सरकार अंग्रेजी की अमलदारी में आ गया परन्तु गोरखपुर के चकले पर अवध के नवाबों का शासन था। उस समय फतेह शाही होशपुर के राजा थे। सरकार अंग्रेजी और नवाब अवध दोनों से उनका सम्बन्ध था। किसी कारण आमिल

गोरखपुर ने उनको परगना जोवना के इलाकों से बेदखल कर दिया। राय साहब और फतेह शाही में बड़ी मित्रता थी। राय साहब ने बहिमायत राजा साहब को अपनी ओर से उनके इलाकों की कबूलियत आमिल गोरखपुर को लिख दिया। जब तक फतेह शाही का मामला तय नहीं हुआ तब तक वे इलाके की पैदावार से मालगुजारी जमा करने के बाद जो रकम बचती थी उसे राजा फतेह शाही के पास भेजवा देते थे। इस मित्रता के कारण राय साहब को बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

इतिहास के पाठक जानते हैं कि 16 अगस्त सन् 1765 ई० को दिल्लीश्वर शाह आलम ने इलाहाबाद की सन्धि के अनुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी तथा कर वसूलने का अधिकार दे दिया। जिसके बदले में उन्हें 26 लाख रुपया वार्षिक देना स्वीकार किया। इस दीवानी अधिकार को पाकर कम्पनी बंगाल, बिहार, उड़ीसा की शासक हो गयी। उस समय सचमुच दिल्ली को इस प्रान्त से कुछ कर नहीं मिलता था।

सभी राजे और नवाब स्वतन्त्र से थे। होसपुर राज्य इसका अपवाद नहीं था। वह यहाँ का स्वतन्त्र राज्य था परन्तु कम्पनी ने अब सभी से कर वसूलना आरम्भ किया। मांग प्रस्तुत करने पर राजा फतेहशाही ने कर देने से इन्कार किया। इसका फल यह हुआ कि उन्हें सन् 1765 ई० से सन् 1785 ई० तक कम्पनी से युद्ध करना पड़ा। राजा फतेह शाही आजीवन स्वतन्त्र रहे और स्वतन्त्र ही वीरगति का लाभ उठाये।

राजा फतेह शाही की रिश्तेदारी बनारस के राजा चेत सिंह के परिवार में थी। लार्ड वारनरिड्गंज के समय में कुछ घटनायें ऐसी घट

चुकीं थी कि राजा चेत सिंह ने कम्पनी के विरुद्ध झंडा ऊंचा किया। उन्होने पत्र द्वारा फतेह शाही को भी विद्रोह करने के लिए उत्साहित किया। फलस्वरूप फतेह शाही ने शाहाबाद मे विद्रोह का झंडा फहराया परन्तु अंग्रेजी सेना तुरन्त घटना स्थल पर पहुँच गयी और राजा फतेहशाही का हौसला पस्तकर दिया। फतेहशाही बाल-बच्चों सहित भागकर परगना जोवना में शरण लिये। धनहूराय के सम्बन्ध मे यह प्रसिद्ध था कि यह फतेहशाही के मित्र और सहायक हैं और इस फसाद में सम्मिलित हैं। इसलिए मिस्टरलाली एक सेना के साथ गोरखपुर आया। उनको आदेश था कि दोनो सरदारों को गिरफ्तार कर लें। चुनान्चे यह दोनों सरदार भागकर जंगल में शरण लिये और नाना प्रकार के कष्ट झेलते हुए परेशान रहें। किसी प्रकार गिरफ्तारी से बच गये। फतेहशाही की रियासत जो जिला शाहाबाद में थी जब्त कर ली गयी और उन्हीं के परिवार की एक शाख को सौंप दी गयी। जिनके वंश में हथुआ के राजा हैं।

गोरखपुर का इलाका चूंकि नवाब अवध के अधिकार क्षेत्र में था। इस लिए जब्ती से सुरक्षित बच गया। इन्ही इलाकों के राजा फतेहशाही ने वांके जोगिन में एक नयी राजधानी बनायी जो इस समय तमकुही के नाम से प्रसिद्ध है। राय धनहू राय कई कष्ट झेले और परेशानियों में फँसे रहे। उनकी बहुत ही सोने तथा धन की बर्बादी हुई। चूँकि उस समय तक रियासत का कोई भाग अंग्रेजी अमलदारी मे नहीं था, उनकी जायदाद जब्ती से साफ बच गयी।

राय धनहूराय और कप्तान मिर्जा बेग के बीच युद्ध

यह जमाना नवाब अली का था। उसने दिल्लीश्वर के अमीरों

का परित्याग कर दिया। एक स्वतन्त्र शासन अवध में स्थापित किया। चूंकि स्वयं इस शासन के स्वामित्व करने वाले की नियत खाम थी और इसकी नींव स्वार्थपर अवलम्बित थी तो उसके अलहकारों से ईमानदारी और प्रजा के प्रति सहानुभूति और स्वामिभक्ति की आशा करना व्यर्थ है। चुनान्चे इस नवाब का एक फौजी अफसर कप्तान अहमद अली बेग था। जिसके वंशज आज भी कप्तान गंज के इलाकों के मालिक हैं। अहमद अली बेग खां ने राय धनहूराय से उन्हें मौजे नेबुआ और नौरंगिया सौंप देनेका आग्रह किया। राय साहबने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इधर से इन्कार और उधर से इसरार बढ़ती गयी। अन्तमें अहमद अली बेग ने कोई बहाना ढूंढकर राय धनहू राय की रियासत पर चढ़ाई कर दिया। एक युद्ध खास पडरौना में हुआ। जिसमें मिर्जा साहब का दामाद, जो उनकी सेना का अफसर था, कोट के दरवाजे के सामने मारा गया।

दूसरा युद्ध बांसी घाट के निकट हुआ। इसमें भी मिर्जा साहब की हार हुई। उनकी सेना जहाँ से आयी थी वापस चली गयी। राय धनहू राय इन युद्धों के कारण आमीलों की नजर पर चढ़ गये। राय भूपनारायण राय की गिरफ्तारी का दृश्य स्वयं अपनी आंखों से उन्होंने देखा था। इसलिए फिर कभी किसी आमिल के यहाँ स्वयं धनहू राय नही गये और रियासत के मामलों को वकीलों द्वारा तय करते रहे। मोहम्मद सैय्यद साहब खाँ एक आमिल कचहरी था। मुतालबा मालगुजारी के लिए अपने वहाँ बुलाया। राय साहब को उनके वकील शिव नाथ ओझा ने राय दिया कि आमिल मजकूर के यहाँ उनका जाना खतरे से खाली नहीं है। आमिल को राय साहब के स्वयं उनकी उपस्थिति पर जिद्द बढ़ती गयी और राय साहब का इन्कार भी बदस्तूर रहा। अन्त में लड़ाई की नौबत पहुँची। अपने में

आमिल की सेना का सामना करने की शक्ति न देखकर रायसाहब अपने बाल बच्चों तथा बहुमूल्य वस्तुओं और आभूषणों को लेकर चम्पारण की तरफ भाग गये। इधर अत्याचारी आमिल तथा उनके रक्त के प्यासे सैनिकों ने अपना क्रोध प्रजा पर निकाला। आमिल मजकूर ने एक आदमी के सिर का मूल्य पांच रूपये घोषित कर दिया। इस लालच में सैनिकों ने बहुत से निर्दोष मनुष्यों का सिर काट डाला। इस घटना के पूर्व यह क्षेत्र खूब आबाद था, परन्तु घटना के बाद वीरान सा हो गया। फिर अपनी असली हालत पर नहीं हो सका। इस हंगामे की समाप्ति के बाद राय धनहूराय घर आ गये। वे इलाके की बरबादी देखकर दिन-रात दुःखित रहने लगे। अन्त में 1205 फसली को पूरे इलाके को राय रामनारायण रायको सौंप दिया। केवल कुछ गांवअपने निजी खर्चे के लिए रख लिया लेकिन इस प्रबन्ध के कुछ दिन बाद वे बैकुण्ठवासी हो गये।

राय रामनारायन राय

राय रामनारायन राय रियासत पडरौना के मालिक 1205 फसली को हुये और 1231 फसली को परलोक सिधारे। इनके समय में रियासत पर कष्टों की बिजलियां कड़कड़ाने लगीं और प्रत्येक दिशा में दुर्भाग्यों की आंधी, इस बल से उमड़ी कि लोगों ने यह राय कायम कर लिया कि रियासत की वह मजबूत इमारत जो सैकडों वर्षों से लोगों के पराक्रम से खड़ी हुई थी, गिरकर मिट्टी के ढेर रह जायेगी परन्तु सौभाग्य से राय ईश्वरी प्रसाद राय ने, जो इनके पोता थें, जन्म लिया। उन्होंने तूफान का सामना किया और हरचन्द कोशिश किया पर रियासत का कुछ भाग हाथ से निकल गया। आगे उसका वर्णन किया जायेगा। उन्होंने अपने हौसिलामन्दी

और दिलेरी से रियासत के बड़े भाग को बचा लिया और धीरे-धीरे रियासत की खोई हुई शक्ति और मर्यादा को वापस कर लिया। रामनारायण राय ने पुराने अहलकारों का मर्यादा घटा दिया और नेक चापलूस अहलकारों से घिर गये। बहादुर राय और बस्ती राय उनके सगे भतीजे थे। परन्तु उनसे सन्तुष्ठ नहीं थे। वह रंजिश खुली शत्रुता में बदल गयी। इस समय रियासत के दीवान कायस्थ थे वे दूरदर्शी नहीं थे, उनमें बुद्धि और व्यक्तित्व नहींथा कि इन रईसों को नेक राय देकर पारस्परिक शत्रुता को मिटा दें जैसा कि इस परिवारका नियम था कि रियासत का एक न्याय संगत भाग मेहरबान राय को दे दें तथा प्रारम्भ में ही इस मामले को दबा दें।

बहरहाल उधर से लापरवाही हुई यानी मेहरबान राय के पुत्रोंको रियासत का माकूल टुकड़ा नहीं दिया गया। इधर से गुरुदयाल सिंह मुख्तार ने दूसरे फरीक को यह आशा दिलाया कि वह अपने तरकीबों से बहादुर राय को कुल रियासत का मालिक बना देंगे। फलस्वरूप ऐसा ही कुछ किया। आमिल के दरबार में ऐसा जोड़ तोड़ लगाया कि रियासत का पूरा भाग बहादुर राय के नाम हो गया। यह सुनकर राय रामनारायनराय घबड़ा गये और उनकी समझ में आया कि पुराने अहलकारों के साथ जो सलूक और बेकदरदानी उन्होंने किया था उसका क्या परिणाम निकला। उन्होंने एक काम समझ का किया कि अपने पुत्र भवानी बक्श राय को रियासत का कुल कार्यभार सौंप दिया और नाम मात्र के मालिक रहे।

भवानी बक्श राय, बहादुर राय एवं बस्ती राय

भवानी बक्श राय अपने पिता से बढ़-चढ़ कर सूझ-

बूझ वाले और दूरदर्शी थे। परन्तु जो बात बिगड़ जाती है उसे बनाना बहुत कठिन हो जाता है। और कभी-कभी असम्भव भी हो जाता है। मेहरबान राय के पुत्र अपनी तदबीरों में सफल हो गये। उनकी महत्वाकाक्षायें ऊपर उठ रही थीं। उनसे अब यह आशा नही की जा सकती थी कि वे अपने चाचा और अपने चचेरे भाईयों के साथ सहनुभूति रखेंगें। वे उन्हें कष्ट देने पर उतारू हो गये। अतएव भवानी बक्श राय अपने मय बाल-बच्चों तथा कुछ स्वामी भक्त अहलकारों को और सिपाहियों को साथ लेकर चम्पारण क्षेत्र में चले गये। बहादुर राय और बस्ती राय मस्ती का जीवन व्यतीत करने लगे। इन लोगों को गाफिल पाकर एक दिन भवानी बक्श राय अपने कुछ सिपाहियों को लेकर झरही कोट, जिसे उनके पूर्वज राय नाथ राय ने बनवाया था, चढ़ आये। झरही कोट की सुरक्षा की व्यवस्था माकूल नहीं थी। भवानी बक्श राय ने बड़ी सरलता से कोट पर अपना अधिकार कर लिया। जब इसकी सूचना बहादुर राय व बस्ती राय को मिली तो वे लोग भी अपनी सेना लेकर झरही कोट पर चढ़ आये। दोनों तरफ से लड़ाई शुरू हो गयी। संयोग से उन दिनों मूलचन्द चकलेदार और जहाँगीर खां ज़मीन्दार ग्राम विसुनपुरा में खेमा जन थे। भवानी बक्श राय ने उन दोनों को अपने पक्ष में मिलाया और उनके सामने अपने हकों को प्रकट किया। चकलेदार ने रियासत का बन्दोबस्त रामनारायण राय के नाम कर दिया और बहादुर राय तथा बस्ती राय को ज़मीन्दार की सहायता से हटा दिया गया। अब ये लोग इस फिक्र मे पड़ गये कि इस विवाद का निवारण तलवार के जरिये किया जायेगा।

गोरखपुर की भूमि प्रत्येक दिन के रक्तपात और संघर्ष से घबड़ा गयी थी। ईश्वर ने इस दशा पर दया किया। ईश्वरकी यह

मन्शा हुई कि इस सर जमीन पर शान्ति की हवा चले। तलवारें म्यान में कर ली जायें। झगड़ों और फसादों को मुकदमे से तय किया जाये। ईश्वर के इरादों को कौन टाल सकता है ? यह समय लार्ड डलहौजी का था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी और नवाब वजीर अली खाँ के बीच एक समझौता हुआ था जिसके अनुसार चकला गोरखपुर तथा उसके साथ कुछ और इलाके अंग्रेजी अमलदारी में आ गये थे। सिधुवा जोवना का बन्दोबस्त मालगुजारी अंग्रेजी हुकुमत के अन्दर प्रारम्भ हुई। कलक्टर गोरखपुर ने कुल रियासत की मालगुजारी 13 हजार रुपये निश्चित किया। भवानी बक्शराय पडरौना वापसआ रहे थे कि रास्ते में बस्ती राय मिले। उन्होंने उनको समझाया कि मालगुजारी हल्की निश्चित हुई है, चलिए, घर लौट चलें। वहाँ पहुँचकर रियासत का आधा-आधा भाग कर लेंगें। बस्ती राय ने उनकी बातों पर भरोसा नही किया। कलक्टर के सामने उपस्थित होकर 13 हजार रूपये जमा कर अपने नाम से करवा लिया। इस तरह दोनो फरीकों की हिस्सेदारी मालगुजारी कार्यालय में लिख गयी। गर्वन्मेन्ट की कुछ अकवाली बजाय तेरह हजार रूपयों के पडरौना रियासत की मालगुजारी 26 हजार रू० हो गयी।

अब किश्त पर मुतालबा मालगुजारी जमा करना आवश्यक हो गया था। गुरेज (हीला हवाली) औरसरकशी का अवसर बाकी नहीं था। अमलदारी नई थी, जाब्ता नया था। मालगुजारी के भुगतान में जमीन्दारों को इतनी स्वतन्त्रता नहीं थी। इसके अतिरिकत रईसों का पारिवारिक और व्यकिगत खर्च, सिपाहियों का वेतन आदि का भार अलग था। इन सब घटनाओं से मिल जुल कर यह परिणाम उत्पन्न हुआ था कि कुल रियासत पडरौना 26हजार या 35 हजार रू० वार्षिक राजस्व भुगतान नही कर पाती थी। अतएव रईसों को

महाजनों से कड़े ब्याज पर ऋण लेना पड़ता था। कुछ वर्षो तक तो भवानी बक्श राय ने दिल खोलकर ऋण लिये परन्तु जब ऋण का भार बहुत बढ़ गया और भुगतान के वास्ते महाजनों के तकाजे कड़े पड़ने लगे तो ये लोग घबड़ा गये। आगे ऋण भी मिलना कठिन हो गया। इसके अतिरिक्त महाजनों ने वसूली के लिए नोटिस जारी कर दिया। परिणाम यह हुआ कि सन् 1206 फसली में केवल 8000 रू0 मुतालबा मालगुजारी में कुल रियासत पडरौना नीलाम हो गयी। और बेतिया के राजा ने उसे अपने मुलाजिम गुमानी लाल के नाम नीलामी खरीद लिया। यह नाम फर्जी था। जब कलेक्टर गोरखपुर को इनकी जानकारी हुई, उन्होंने गर्वन्मेन्ट को रिपोर्ट कर दिया। वहाँ से यह आदेश आया कि ता फैसला दिवानी कुल रियासत पडरौना का प्रबन्ध कलेक्टर गोरखपुर करे। नीलामी की धनराशि वापस कर दी जाये।

गुमानी लाल ने नीलामी की बहाली के लिए अदालत दीवानी में मुकदमा दायर किया। उन दिनों दीवानी कचहरी नगर बनारस में थी। कलक्टर गोरखपुर ने रियासत के प्रबन्धक (कोर्ट आफ वार्डस) की हैसियत से जवाबदेही दाखिल किया। जिस पर बाद दावा डिसमिस हुआ। आदालत ने आदेश किया यदि मालिकान साबित मालगुजारी का बकाया जो 8000 रू0 है, सरकारी कोष में जमा कर दें तो उन्हें जायदाद मजकूर पर दखल दिया जाये। इधर रूपये कहाँ थे। बहरहाल राय साहब ने दस्तावेज बयान लिख कर रूपये इकट्ठा किये और उसे सरकारी कोष में जमा कर रियासत पर काविज हुए।

उन्हीं दिनों एक और कष्ट आ उपस्थित हुआ। बस्ती लाल महाजन साकिन गोरखपुर ने अपने ऋण की डिग्री प्राप्त कर ली।

उसने भुगतान पाने के लिए रामनरायन राय की कुल जायदाद दीवानी अदालत के माध्यम से कुर्क करा लिया। भवानी बक्श राय ने अपने रिश्तेदारों की सहायता से ऋण का भुगतान कर दिया और जायदाद नीलामी से बच गयी।

भवानी बक्श राय धार्मिक विचार के व्यक्ति थे। अचरज पाण्डेय ने, जो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी माने जाते थे, उनको बतला दिया कि आपके ऊपर एक महान कष्ट आने वाला है। उससे बचने का यह उपाय है कि वे इलाहाबाद जाकर स्नान करें। चुनान्चे फसली 1226 में राय साहब 20सों आदमियों को साथ लेकर इलाहाबाद गंगा स्नान के लिए पहुँचे। लौटते समय इस समूह में हैजे की बीमारी फैल गयी। बहुत से लोग हैजे से मर गये। राय साहब भी बीमारी में फंसकर घर लौटे। जिस दिन घर पडरौना पहुँचे उसी दिन 6 अगस्त को उनका स्वर्गवास हो गया। ज्योतिषी ने कष्ट की सूचना तो सही दिया किन्तु वह समझ नहीं सके कि जो उपाय वह इस कष्ट के निवारण के लिए राय साहब के लिए बतलाया उसी के परदे में यह कष्ट प्रगट होगा और राय साहब बैकुण्ठवासी होंगे।

भवानी बक्श राय ने अपने मृत्यु के समय जो ऋण छोड़ा था उसकी सीमा चालीस पचास हजार रूपये के बीच थी। इनके ऊपर यह बिपत्ति आयी कि कलकत्ता की अपील से गुमानीलाल सफल हो गया। और नीलाम बहाल हो गया। फिर तो इन रईसों के हौसले पश्त हो गये। ऐसा प्रतीत होता था कि पडरौना रियासत अब समाप्त हो जायेगी। नीलामदार ने अपनी डिग्री जारी करा कर कुल रियासत पडरौना पर अधिकार कर लिया और इस खानदान के लिये जिनके अधिकार में कई सौ गांव था, जीवन निर्वाह के लिए कोई जरिया

बाकी नही रहा। भवानी बक्श राय के मृत्यु के बाद हरकुमार राय, बड़े भाई ईश्वरी प्रताप राय के, अपने पिता के उत्तराधिकारी हुए। इन दोनो भाईयों ने जायदाद को बचाने के लिए बड़ी दौड धूप की परन्तु सफलता की कोई आशा नहीं दिखलाई दिया।

कायदे की बात है कि डूबता हुआ आदमी, तिनके का सहारा ढूढंता है। हरकुमार राय और ईश्वरी प्रताप राय दोनो भाई कलकत्ता पहुँचे। दोनों भाई अनुभव विहीन थे। वहाँ उनको कोई मित्र ओर सहायक नहीं मिला। नाव से उत्तर कर नदी के तट पर बेसहारा खड़े थे कि शिवदर्शन लाल एक व्यक्ति स्नान के लिए आये। राय साहबों ने उनकी भेंट को अपना सौभाग्य ही समझा। यह शिवदर्शन लाल जाति के कायस्थ थे और जनपद गोरखपुर के तलवली ग्राम के निवासी थे। उन्होंने कलकत्ता में मुख्तारी का पेशा अख्तियार कर लिया था। अपनी जानकारी के आधार पर कुछ उपायें राय साहब को बतलाया। परन्तु उन उपायों को कार्यरूप में पिरिणित करने के लिये रूपयों की आवश्यकता थी। और यहाँ जेब खाली थी लेहाजा राय साहब इस ध्येय से पडरौना वापस आये कि कहीं से रूपयों का प्रबन्ध करके फिर कलकत्ता आयेंगें। परन्तु अभी पडरौना पहुँच ही नहीं पाये थे कि रास्ते मे यह सूचना मिली कि बस्ती राय ने सरकारी आज्ञाओं के विरूद्ध कार्य किया, जिसके कारण दो सौ सवार और तीन सौ पैदल सिपाहियों की सेना की दौड़ पडरौना आई और पडरौना के रायों का घर दोषी और निर्दोष का विचार किये बिना लूट लिया गया। बस्ती राय राजा हथुआ के पास भाग गये और रामनारायण राय ग्राम लखनौर में अपने सम्बन्धियों के यहाँ शरण लिया।

जमीन्दारी तो पहले निकल ही चुकी थी। अब घर भी लूट

गया। अब ये दोनो भाई इतने घबड़ाये कि इनका होश हवाश गायब हो गया परन्तु ईश्वरी प्रताप राय ने साहस धारण किया। अन्त में यह निश्चय हुआ कि बेतिया चल कर वहाँ के राजा से सहायता के लिए प्रार्थना किया जाये। तबाही की दशा में ये रईस बेतिया पहुँचे और बेतिया के राजा से सहायता की प्रार्थना किया। राजा ने इस रईसों की पैरवी में सहायता के लिए इनकी जायदाद का चतुर्थ भाग मुआवजा में लेने की इच्छा प्रकट किया। इन रईसों ने अपने रियासत में उनकी साझेदारी को स्वीकार नहीं किया और वहाँ से निराश और दुखित वापस चले आये।

कुछ लोगों ने इन रईसों को यह राय दिया कि कचहरी बनारस मे नालिश नम्बरी दाखिल किया जाये। चुनान्चे ये लोग बनारस आये और नालिस नम्बरी भी दाखिल कर दिया कि कब्ल इसके जो फैसले हुए थे उनमें यह फरीक नहीं थे। बनारस में रुकने का यह लाभ हुआ कि ईश्वरी प्रताप राय ने बस्ती राय की सफाई उस अपराध से करा दिया जिसके कारण इन लोगों के घर लूटे गये थे। और ये लोग बेघर कर दिये गये थे।

जब हर तरफ से निराशायें छायी हुई थी, ईश्वर की कृपा उन्हें प्राप्त हुई और ईश्वर की यह मर्जी हुई कि इस वीरान घर को फिर से सवारें। वह जमाना ऐसा था कि बहुत से ताल्लुकेदारों के इलाके नीलामी पर थे। बंगाल में यह बीमारी बहुत थी। अंग्रेजी सरकार ने इन ताल्लुकेदारों की रक्षा हेतु ऐसे कानून बनाये कि महाजनों के ऋणों का उचित भुगतान भी हो गया और इन रईसों के इलाके भी नीलामी से बच गये। इस सम्बन्ध में कानून 1821,1823, 1835 महत्वपूर्ण है। इन कानूनों के अनुसार मुकदमों का फैसला करने के

लिए कमीशन नियुक्त किये गये। जिला कानपुर, इलाहाबाद, गोरखपुर के मुकदमों के लिए कमीशन की बैठक कानपुर में शुरू हुई। ईश्वरी प्रताप राय ने फसली 1229 का भादों के महीने के अन्तिम सप्ताह में कानपुर के लिए प्रस्थान किया। वे कानपुर तक कुशल पहुँचे परन्तु जब वे नगर कानपुर में प्रवेश किये उनका घोड़ा एक हाथी को देखकर चौंका और पास के एक गढ्ढ़े में, जो गहरा था और पानी से भरा था, कूद पड़ा। घोड़ा मय सवार के पानी में डूबा। ईश्वरी प्रताप राय ने लगाम न छोड़ी। घोड़ा बड़े जोरों से उछला और पानी के तल पर आ गया। फिर तैर कर तट पर निकल आया। कानपुर पहुँचकर राय साहब मोहल्ला नवाबगंज में एक ठाकुर द्वारे में ठहरे। अब दरयाफ्त से मालूम हुआ कि कानपुर जिले के मुकदमों का फैसला करने के बाद कमीशन की बैठक इलाहाबाद में होगी। इसके बाद गोरखपुर की बारी आयेगी। उस समय की यात्रायें सरल न थीं कि कानपुर से घर वापस आयें। लेहाजा राय साहब वहीं रूक गये। कानपुर में रूकने का इरादा इसलिए भी हुआ कि वहाँ रूककर अधिकारियों से जान पहचान होगी। वे मुकदमे के दावं पेच से परिचित हो जायेंगे। कानपुर में लगभग पन्द्रह महीने गुजरा था कि राय रामनारायण राय की मृत्यु की सूचना उन्हें मिली।

राय हरकुमार राय

ऊपर वर्णन हो चुका है कि अपने पिता भवानी बक्श राय की मृत्यु के बाद हरकुमार राय उनके उत्तराधिकारी हुए। परन्तु वे रामनारायण राय के जीवन तक केवल कारपरदाज के रूप में कार्य करते रहे। उनके दादा के मृत्यु के बाद भवानी बक्श राय के तीन पुत्र एक के बाद दूसरे रियासत मालिक नियुक्त हुए परन्तु हरकुमार

राय रईस खानदानके समझे जाते थे। जमीन्दारी के कारोबार उन्हीं के अन्तर्गत हुआ करते थे। इन सब भाईयों में मेल-जोल था। उसका कारण प्रथम तो उनके स्वभाव में सहूलियत थी और दूसरे बहुत दिनों तक कष्टों में एक दूसरे के सम्मिलित रहे थे। इसी लिये प्रेम की अति उन्नति हुई। राय हरकुमार राय के एक पुत्र नन्द किशोर राय थे, जिनकी मृत्यु अपने पिता के बाद किन्तु ईश्वरी प्रताप राय के पहले 1264 फसली को हो गयी। वे लावल्द मर गये।

राय हरकुमार राय कुछ दिन बीमार रहकर क्वार 1246 फसली में स्वर्गवासी हो गये। पूरे खानदान को इस हादसे से अति सदमा पहुँचा। उनके जीवन काल में उपायों को सोचने, कठिनाईयों को हल करने वाले वास्तव में ईश्वरी प्रताप राय थे।

बाबू इमिरित मल्ल का वर्णन

हरकुमार रायकी एक पुत्री थी, जिसका विवाह ग्राम लखनौर जिला वर्तमान मऊ में हुआ था। बाबू इमिरित मल्ल उनके एकलौते पुत्र थे। इनका कद नाटा और शरीर पुष्ट था। उनके आचरण और व्यवहार में बड़ा गुण मौजूद था जो इतने बड़े रईस के नवासे में होना चाहिए। उनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी और मानसिक शक्ति इतनी बलवती थी कि जो काम उन्हें सौपा जाता था उसे बड़ी कुशलता के साथ पूरा करते थे। उनके उत्तरदायित्व मे भिन्न-भिन्न सेवायें थी। परन्तु वे भवन निर्माण कार्य के अफसर आला थे। उनके ऊपर राजा उदित नारायण राय बहादुर की विशेष कृपा रहती थी। उनकी साया में मातहत खुशहाली और दौलतमन्दी का जीवन व्यतीत करते थे। वे राजा साहब की सेवाओं तथा स्वामीभक्ति में हृदय से लीन रहते थे।

राय ईश्वरी प्रताप राय

इनके कार्यकलापों का प्रारम्भ रामनारायण राय के समय में हुआ। और रामनारायण राय की मृत्यु के बाद भी उन्हें कानपुर में रुक जाना पड़ा। वे हुजुम आफते गम से घबड़ा गये थे। निराशा के बादल उनके सिर पर हमेशा मँडरा रहे थे। ऐसी दशामें उन्होंने शान्ति के लिए भक्ति मार्ग अपनाया जो इन्सानी तबीयत का तकाजा है। कानपुर में एक ठाकुर द्वारे में ठहरे हुए थे। जहाँ कृष्ण भक्त लोग अधिक थे। राय साहब पर उनके सोहबत का अच्छा प्रभाव पड़ा। उनमें धार्मिक जोश पैदा हुआ कार्तिक 1231 फसली को वे चित्रकूट गये और स्वामी बिहारी दास के शिष्य बन गये। कन्ठी बांध ली, जो कृष्ण जी के उपासकों का चिह्न है। वे कृष्ण जी के उपासक अपनेजीवन के अन्त तक रहे। यह सामान्य बात है कि भक्ति के जोश से इन्सान को कविता की ओर झुकाव होता है चुनान्चे राय साहब में भी शायराना जोश बलबला उठा। उन्होंने भजन और कविता लिखना प्रारम्भ किया। थोड़े दिनों में हिन्दी के एक अच्छे कवि हो गये। उनकी रचनाओं भगत कल्प द्रुम और रहस्य काल सानिकार मर्यादा की दृष्टि से देखी जाती है। उनके बाद उनके वंशज भी कृष्ण जी के उपासक रहे और यह सब कृष्ण भक्तियां जो रायान पडरौना में पायी जाती है, वास्तव में लाई हुई इन्हीं राय साहब की है।

कानपुर में मुकदमे का फैसला करने के बाद कमीशन इलाहाबाद पहुँचा। राय साहब भी साथ आये परन्तु इलाहाबाद पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि गोरखपुर के मुकदमे, जिसमें पडरौना रियासत नीलामी का मुकदमा भी शामिल था, उस अदालत को सौंपी गयी जो बमुकाम अजीमाबाद बिहार में स्थित था। अजीमाबाद में राजा

बेतिया का प्रभाव अधिक था इसलिए राय साहब और उनके शुभचिन्तक घबड़ागये और उनपर निराशा के बादल छा गये। बीमार चाहे मरने के निकट हो दवा अवश्य करता और कराता है। लेहाजा राय साहब ने भी आशा बांधी और अजीमाबाद पहुँचे। वहाँ जाने पर उन्हे मालूम हुआ कि हुक्काम कमीश्नर मिस्टर इलीयट साहब बड़े न्याय प्रिय हैं और न्यायिक मामले में किसी के प्रभाव में नहीं आते। राय साहब के पास इतना रूपया कहाँ था कि वे आमिलों को खुश कर सकते। उन्होंने अपने नेक सोहबत से केवल 30 रू० में अपने मुकदमे को इलियट साहब के फिहरसिस्त पर चढ़वा दिया। जब बेतिया के राजा के मुख्तारों को इसकी जानकारी हुई तो उन्होंने बहुतेरा सिर पटका और हाथ पैर मारे। रूपयों की थैलिया आमिलों को पेश की परन्तु राय साहब ने ऐसा शोर गुल मचाया कि उनके शत्रुओं के हथकंडे बेकार हो गये। अन्त में वह रात्रि आयी जिसके प्रातः में इनके मुकदमे का फैसला होना था। वह रात कयामत की रात थी और सुबह कयामत का सुबह था राय साहब रात भर भजन गाते रहे और जोर-जोर से चिल्लाते हुए रात काटी। सुबह हुई। सूरज निकला कचहरी का समय आया। कचहरी में वकीलों और मुख्तारों की भीड़ लग गयी। वहाँ राय साहब कोने में बेसहारा व बगैर मददगार के चिन्तित हाल खड़े थे। इलियट साहब की मुख की ओर सैकड़ों लोगों की टकटकी लगी हुई थी। न्यायमूर्ति ने संक्रान्ति के दूसरे दिन माघ 1231 में यह हुकुम दिया कि नीलाम मन्सूख हो। वादियों के पक्ष में डिग्री सादिर हो। उस समय जो खुशी राय साहब को हुई उसका अनुभव वही कर सकता है जो मरने के बाद जीवित हो जाये। इस डिग्री के बाद राजा बेतिया ने अपील किया। दखल में झगड़ा किया परन्तु अब तो आसमान का दूसरा दौर शूरू हो गया

और अकबाल की चिड़िया जो कुछ दिनों के लिए उड़ गयी थी फिर रियासत पडरौना के महल पर आ बैठी थी। प्रत्येक अवसर पर रियासत पडरौना विजयी और राजबेतिया की पराजय हुई। इस तरह जो दाग रियासत पडरौना के सफेद दामन पर लगे थे, राय ईश्वरी प्रताप राय ने धो डाला।

अब एक ताजी मुसीबत यह आयी कि सन् 1822 ई० के सप्तम कानून के अनुसार बन्दोबश्त प्रारम्भ हुआ। हर दावेदारों की लश्कर रियासत पडरौना के सामने खड़ी हो गयी। राय साहब को बीते अनुभवों ने मुकदमे लड़ने की तदबीरों को खूब सीखा दिया था। कानूनी दाव पेंच और तदबीरों के जोड़ तोड़ से वे खूब परिचित हो गये थे। अतएव इन सभी विवादों में वे विजयी हुये। सभी दावेदारों ने पराजय पायी और रियासत पडरौना के सामने सिर झुकाया। इस बन्दोबस्त के बाद रियासत का कार्यालय भी संगठित हो गया। हर इन्तजाम में खूबी ओर खुशहाली पैदा हो गयी।

बावजूद इन परेशनियों के, जिनको राय साहब प्रारम्भ से ही झेलते आ रहे थे, उनका मौरूसी साहस कम न हुआ। वे थकावट का अनुभव कभी किये ही नहीं। जीवन की अन्तिभ घड़ी तक रियासत की उन्नति में लीन रहे। 1247 फसली में परशादपुर और मिल्की आदि गाँव आठ हजार रूपये में क्रय किया। 1248 फसली में आठ आना हिस्सा खास मौजा-पडरौना का जो दूसरे करसाददारों का था, नीलाम खरीद लिया। 1248 फसली में ही जंगल पडरौना जो क्षेत्रफल में 28 हजार एकड़ था, एक लाख पन्द्रह हजार रूपये में खरीद लिया। इस जंगल में एक बढ़िया कोठी थी और एक नील का गोदाम था। ये सब जायदाद मौजे शाहपुर में थे। इस खरीद से

रियासत की हैसियत बहुत बढ़ गयी थी। उन दिनों शाहपुर के जंगल का ठीकेदार एक अंग्रेज था। उसने जंगल साफ करने के लिए एक बड़ी जमात घागड़ों की इकट्‌ठा कर लिया था। शाहपुर की जलवायु जंगलों की बहुतायत के कारण बहुत खराब थी। इसलिए धागड़ बड़ी संख्या में मरने लगे। अजारा के भाई ने जो एक नौजवान अंग्रेज था मजदूरों से यह चर्चा करते हुए सुना कि बुढवन सईद की कब्र है। इसी कारण लोग मर रहे हैं। इस तंग मिजाजी ने इन जाहिलों के इस बहस को दूर करने के अभिप्राय से स्वयं भी जाहिलाना या पाश्विक कार्य उक्त अंग्रेज ने किया। अर्थात कब्र पर जाकर कब्र में सोयी हुई आत्मा को गालियां दी और कब्र पर पेशाब भी कर दिया लेकिन वापसी के समय रास्ते में उसपर बुखार चढ़ा और कोठी तक पहुँचने भी न पाये थे कि सरेशाम की कैफियत तारी हो गयी। तुरन्त पालकी की सवारी से गोरखपुर के लिए रवाना किये गये परन्तु कप्तानगंज पहुँच कर मर गये। सामान्य जनता का विश्वास उस कब्र पर बढ़ गया। चढावे चढ़ाये जाने लगे, जगह साफ की गयी और अगहन के महीने में बड़े धूम धाम से मेला लगने लगा। अब तक पडरौना के लोग बुढवन सईद के नाम की झूठी शपथ कठिनाई से खाते हैं। जिन लोगों को आत्मा के शक्ति पर विश्वास न हो वे भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि इस नौजवान अंग्रेज की यह हरकत अंग्रेजी सभ्यता के भी विरुद्ध थी।

राजा उदित नारायण राय, ने जो धार्मिक हिन्दू रईस थे, का लोगों की श्रद्धा की तरफ ध्यान गया। उन्होंने उस चढ़ावे से जो कुछ कब्र पर चढ़ाये जाते थे, उस कब्र पर एक पोख्ता मकबरा बनवा दिया और ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि उस चढ़ावे की आमदनी से ही उस मकबरे की मरम्मत होती रहती है।

ईश्वरी प्रताप राय के छोटे भाई जयप्रकाश राय ने यद्यपि मुकदमे में पैरवी नहीं किया अथवा कम किया किन्तु जमीन्दारी के कुल काम वसूल तहसील और आमदनी बढ़ाने के कुल काम उन्हीं के जिम्मे था, जिसे वे बड़ी खूबी से अन्जाम देते थे। उन्होंने मु०व० ३०,००० (तीस हजार रू०) में बृन्दाबन में एक मन्दिर बनवाया। भवन निर्माण के बाद उसमे मूर्ति स्थापना हेतु गये। मूर्ति स्थापना कार्य समाप्त करने के बाद उनका देहान्त 1260 फसली मे वहीं हो गया।

नन्द कुमार राय

जय प्रकाश राय की मृत्यु के बाद नन्द कुमार राय कारोबार जमीन्दारी को सम्भाले। वह भी तीर्थ के लिये बृन्दावन गये परन्तु वह भी 1264 फसली मे वही जाकर मर गये।

राय बल्लभ प्रताप राय

फिर राय मदन गोपाल राय जिनका जिक्र आगे चलकर आवेगा तीर्थयात्रा करने बृन्दावन गये। उनके वापसी के लिए राय ईश्वरी प्रताप राय ने अपने छोटे पुत्र राय बल्लभ प्रताप राय को वृन्दावन भेजा। संयोग तो देखिए आश्चर्य होता है कि ये भी वन्दावन पहुँच कर मृत्यु के मुँह मे समा गये।

इन लगातार घटनाओं ने अन्धविश्वास को तरक्की दिया और सब रायान पडरौना वृन्दावन की यात्रा को स्वर्ग की यात्रा समझने लगे। परन्तु राय उदित नारायण राय, भतीजा राय ईश्वरी प्रताप राय इस तरह की कमजोर तबीयत नही रखते थे। उन्होंने वृन्दावन की यात्रा किया और सकुशल घर लौटे। इसीलिये कहा जाता है कि मन्दिर तो जय प्रकाश राय ने बनवाया परन्तु उसका रास्ता उदित

नारायण राय ने खोला।

ईश्वरी प्रताप राय ने भव्य मन्दिर, जिसको राम धाम, कहते हैं पडरौना में निर्माण किया। इस मन्दिर के नीचे वाणी नदी बहती है। इसके बीच एक पोखरा भी बहुत रौनक बनवाया गया है। यह दोनों भवन जिला गोरखपुर की मुमताज भवनों में गिने जाते हैं। सवा लाख रुपये इनके निर्माण में व्यय हुए हैं। इन रुपयों की कीमत 1200 फसली मुतावित 1797 ई0 के आज के रुपयों की कीमत के कई गुने थे।

संसार में ऐसे बहुत से कम लोग भाग्यशाली हैं, जिनकी सब इच्छायें पूरी हो गयी हों। चुनान्चे ईश्वरी प्रताप राय भी यद्यपि उन्होने पर्याप्त भौतिक सफलतायें प्राप्त की, संतान के मामले में भाग्यवान नहीं थे। उनके दो पुत्र उनके जीवन में ही परलोक सिधारे। केवल बड़े पुत्र मदन गोपाल राय रह गये। इनके कई विवाह हुए किन्तु उनकी सब रानियां निःसन्तान मर गयीं। केवल एक से एक पुत्री पैदा हुई वह भी थोड़े दिन जी कर मर गयी। मदन गोपाल राय ने शादी करने से इन्कार कर दिया। ईश्वरी प्रताप राय ने उन्हे शादी करने के लिए बहुत कोशिश किया। जीवन के हर उतार चढ़ाव को बताया। परन्तु मदन गोपाल राय शादी करने के लिए सहमत नहीं हुए। ईश्वरी प्रताप राय को चिन्ता हुई कि रामनारायण राय का वंश अब समाप्त हो जायेगा, इसलिये उन्हेंने सोचा कि मदन गोपाल राय के जीवन काल में ही वे अपना उत्तराधिकारी का चुनाव कर लें।

हरकुमार राय की पत्नी ने बाबू इमिरित मल्ल का नाम उनके उत्तराधिकारी के लिए प्रस्ताव किया। तो ईश्वरी प्रताप राय की पत्नी अपने भतीजे के पक्ष में प्रस्ताव किया। ईश्वरी प्रताप राय ने सोचा

इस तरह तो पडरौना रियासत राय खानदान से दूसरे खानदान में चली जायेगी। और भुआल राय तथा उसके उत्तराधिकारियों का नाम मिट जायेगा। अतएव उन्होंने अपने खानदान के ही राय रघुपति राय के पुत्र उदित नारायण राय को चुना। इनके इस इन्तखाब का कारण दूसरा था। ईश्वरी प्रताप राय धार्मिक व्यक्ति थे। उनकी आयु अधिक हो चुकी थी। जीवन का सूर्य ढ़लने वाला था। उन्हे इस जन्म के बाद वाले लोक में यहाँ के अच्छे तथा बुरे दोनों कार्यों के लिए उचित पारितोषिक तथा दण्ड मिलेगा। उन्होंने बहुत नेक कार्य किये थे, परन्तु सफलताओं के गर्व में उनकी ओर से कुछ गलतियां भी हो गयीं थीं। इसके लिए उनकी आत्मा उन्हें कोसती रहती थी। रघुपति राय की नागहानी मृत्यु और उनकी दोनों विधवाओं के दुर्दिन के लिए पूरे उत्तरदायी नहीं थे, तो भी वे इसके लिए पूरे निर्दोष भी नहीं थे। इन्ही के इशारे पर रघुपति राय को आजीवन कारावास का दण्ड मिला था। उनकी जायदाद जब्त हो गयी थी। अतएव वे लोक और परलोक के समक्ष अपने अपराध के प्रायश्चित करना चाहते थे, जिसके लिए उनके ख्याल में यही जरिया था कि वे रघुपति राय के पुत्र, अपने भतीजे को ही अपना उत्तराधिकारी बनावें।

ईश्वरी प्रताप राय जीवन के उतार चढ़ाव देखे थे। उनको मालूम था कि मदन गोपाल राय सीधे साधे आदमी हैं। जमाने के पेचदिगियों को समझने तथा सुलझाने की क्षमता उनमें नही है इसलिए उनके मार्ग दर्शन के लिए एक पुस्तक 'गुलशने तमीज' नाम की लिखी। मदन गोपाल राय में अनुकरण करने की सलाहीयत थी। वे अपने पिता की आज्ञाओं को ईश्वरीय सन्देश समझते थे। अतएव इसी पुस्तक में दर्ज हिदायतों पर चल कर रियासत को सम्भाले रखा। उनके समय में रियासत की कोई खास गिरावट नहीं हुयी।

सन् 1857 ई० के विद्रोह में ईश्वरी प्रताप राय ब्रिटिश सरकार के खैरख्वाह ओर स्वामिभक्त रहे। दस वर्षों तक आनरेरी मजिस्ट्रेटी करने के पश्चात् उनका देहान्त 1275 फसली में हो गया। उनका जन्म 1209 फसली में हुआ था।

राय मदन गोपाल राय

मदन गोपाल राय ईश्वरी प्रताप राय के बड़े पुत्र थे। उनका जन्म आसाढ़ 1232 फसली को हुआ था। संस्कृत भाषा कुछ सीख लिये थे। फारसी का ज्ञान मध्यम दर्जे का था। गान विद्या में प्रवीण थे। धार्मिक विचारों में डूबे रहते थे। वे कृष्ण जी के भक्त थे। जब वे कभी किसी यात्रा पर जाते थे तो कृष्ण जी की मूर्ति वाली पालकी हमेशा आगे चलती थी और उसके पीछे राय साहब की पालकी चलती थी। ब्रज में रहने वालों की विशेष इज्ज़त करते थे। ब्राह्मणों और निर्धनों को खैरात बाटते थे। वृन्दावन में बरसाना हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है, उसमें राधिका का मन्दिर है, 300 सीढ़ियों पर चढ़कर तीर्थ यात्री मन्दिर के द्वार पर पहुँचते थे। बहुत पुराने होने के कारण सीढ़ियों के मरम्मत की जरूरत थी। राय साहब ने सीढ़ियों का जीर्णोद्धार किया और फर्श को संगमरमर पत्थरों से सजाया। मूर्ति को भी सोने जवाहिरातों से सजाया गया।

पहाड़ पर पानी का कोई स्रोत नहीं था। पत्थरों को काटकर एक विशाल कुआं बनवाया और जानवरों के लिए एक पोख्ता तालाब खुदवाया। एक बाग लगवाया जिसका क्षेत्रफल 14 बीघा पक्के था, उसके भीतर एक सुन्दर भवन निर्माण करवाया गया तथा उसकी देख रेख के लिए एक कर्मचारी नियुक्त किया। जिसका वेतन 25 रू० मासिक था जो जमीन्दारी के उन्मूलन के समय तक रियासत

पडरौना दिया करती थी। पडरौना के रामधाम मन्दिर के उत्तरी तरफ दो मंजिला एक इमारत बनवायी, जिसमें कृष्ण जी की मूर्ति का स्थापना किया। वरसाना के निर्माण कार्य में लगभग 70 हजार रूपये और पडरौना के मन्दिर में लगभग 15000 रू0 खर्च हुए थे। इसके अतिरिक्त गोरखपुर के हनुमान मन्दिर के मरम्मत के लिए 4000 रू0 दिये। राय साहब को वृक्ष लगवाने, कुएं खुदवाने तथा पोखरे खुदवाने का बड़ा शौक था। वृक्ष के फलों तथा साये और पोखरों के जल से आदमी और पशु सभी लाभान्वित होते थे। इसलिए थोड़े दिनों के जीवन काल में जहाँ तक सम्भव हो सके इस तरह के काम आम जनता के हित के लिए सभी सामर्थ्यशाली व्यक्तियों को करना चाहिए। यही धन की शोभा तथा सद् उपयोगिता है।

राय भूपनारायण राय की तरह इन्हे लाख पेड़ लगाने का अवसर तो नहीं मिला परन्तु पडरौना से कुबेर स्थान लगभग 6 मील और पडरौना से बांसीघाट लगभग 4 मील तथा पडरौना से रामकोला लगभग 8 मील सरकारी सड़क के दोनो किनारों पर इन्ही राय साहब द्वारा वृक्ष लगवाये गये थे। इसके अतिरिक्त और भी बाग लगवाये तथा कुएं खुदवाये। कुल वृक्षों, कुओं तथा पोखरों की गणना करना तो कठिन है लेकिन कुल वृक्षों की अनुमानित संख्या 40 हजार और कुओं की संख्या एक हजार से कम न होगी।

27 अप्रैल सन् 1887 में राय साहब ने 18 मौजे जो खानदान की दूसरी शाखकी मिल्कियत थी और विद्रोह के अपराध में जब्त होकर सैय्यद मोहम्मद तकी तहसीलदार को दी गयी थी, इन गांवों को 21 हजार 61 रू0 5 आने में खरीद लिया था। राय साहब स्वभाव से साधु प्रकृति के थे इन्होंने अपने पिता से तीर्थ जाने का

इरादा जाहिर किया। ईश्वरी प्रताप राय समझ गये कि बेटे का इरादा संसार छोड़ने का हो गया है। उन्होंने उन्हे बहुतेरा समझाया और तीर्थ जाने से मना किया। परन्तु राय साहब अपने इरादे पर कायम रहे। अन्त में मजबूर होकर उन्होंने उनके हमराह स्वामिभक्त और मातवरअहलकार मुंशी जयनारायण सिंह और भगवान दत्त शुक्ल को कर दिया कि तीर्थ संस्कार को पूरा करने के बाद ये लोग राय साहब को वापस लायेंगे। तीर्थ के संस्कार को पूरा करने के बाद राय साहब पडरौना लौटने से इन्कार कर दिये। इन लोगों ने उन्हें बहुतेरा समझाया। जीवन के उतार चढ़ाव बतलाये परन्तु इनके समझाने का उनके ऊपर कोई प्रभाव न पड़ा। इसलिए ईश्वरी प्रताप राय ने उन्हें बुलाने के लिए अपने दूसरे पुत्र बलभद्र प्रताप राय को भेजा। इस नौजवान की बृन्दावन में मृत्यु हो गयी। मदन गोपाल राय ने अपना इरादा इतना पक्का कर लिया था कि वे किसी मूल्य पर वृन्दावन से अपने घर वापस जाने पर सहमत नही होते। परन्तु भाई की मृत्यु से नदामत हुई और माता पिता के शोक का ऐसा ख्याल हुआ कि वे घर वापस आने पर बाध्य हो गये। अपने पिता की मृत्यु के बाद तथा उदित नारायण की उत्तराधिकार करण (जानसीन) के बाद उन्होंने साधु होने का इरादा जाहिर किया, परन्तु राजा उदित नारायण ने बड़ी दूरदर्शिता से उनको कुछ दिन के लिये अपना इरादा स्थगित करने पर बाध्य किया।

सन् 1878 ई० के अकाल में मुसीबत फैली। लखरांव तथा दूसरे बागानों में खूब फल लगे थे। राय साहब ने फलों को भूखों के लिये वक्फ कर दिया। पोखरे खोदवाने शुरू किये जिसमें कई सौ आदमी रोजाना काम करते थे और मजदूरी पाते थे। गल्ले के भण्डारों को भूखों के लिये खोल दिया और हृदय खोलकर गरीबों में खैरात

बांटे। आखिरकार अकाल समाप्त हुआ। इस फैयाजी (विशाल हृदय) की कदरदानी में सरकार की ओर से इलाहाबाद के दरबार में राय साहब को पांच परचा का खिलियत मरहमत हुआ था। एक्ट एक 1876 के अनुसार उन्हें बिना लाइसेन्स हथियार रखने की अनुमति दी गयी। 'गर्वन्मेन्ट आफॅ इण्डिया' नामक पुस्तक में लेखक सर आर०सी०आई०ई० ने राय साहब और इनके पिता जी का जिक्र किया है। जिसमें लेखक ने उनकी हुकूमत के प्रति खैरख्वाही, स्वामिभक्ति का जिक्र किया है। राय साहब की मृत्यु 20 अगहन 1297 फसली में हो गयी।

राय रघुपति राय व दुबरी राय

पहले वर्णन किया गया है कि राय धनहूराय के मृत्यु के बाद इस खानदान की दो शाखायें हो गयी। एक शाख में मेहरबान राय के पुत्रगण बहादुरराय, बस्तीराय थे और दूसरी में रायनारायण राय के पुत्र भवानी बक्श राय। बहादुर राय नेक मिजाज आदमी थे। बहुत ही सीधे-साधे स्वभाव के थे, परन्तु बस्तीराय के मिजाज में स्वार्थ और शोखी थी। इस विरोधी मानसिकता का फल यह हुआ कि दोनो भाईयों ने अपना-अपना हिस्सा अलग-अलग कर लिया। अतः इस शाख की इकट्ठा शक्ति टूट गयी।

इस अलहदगी के बाद डिग्री जो पहले हो चुकी थी, अदालत दीवानी की आज्ञा से जारी हुई और कुल आठआना हिस्सा पडरौना खास का उसके मुतालबे में कुर्क हो गया। डिग्री का मुतालबा इतना अधिक नहीं था कि उसका प्रबन्ध नही हो सकता था। जायदाद बचाई न जा सकती थी, परन्तु बस्ती राय ने मुतालवे का हिस्सा देने

में आना-कानी किया। उनकी मंशा थी कि मुतालवे का भुगतान न होनेपर यह जायदाद नीलाम होगी और वह इसे किसी अपने रिश्तेदार के नाम से खरीद लेंगें। बहादुर राय को अपने भाई की इस तरह की बदगुमानी और खुदगर्जी की उम्मीद नहीं थी। ईश्वरी प्रताप राय ने इन भाईयों के बीच की कटुता को बढ़ाने के नियत से बहादुर राय से यह कहा कि वे इन दोनो भाईयों के हिस्से को नीलाम खरीद लेंगें और उनका हिस्सा वापस कर देंगे। बहादुर राय उनकी बातों में आ गये, परन्तु जब ईश्वरी प्रताप राय ने इसे नीलाम पर खरीद लिया तो वे बहादुर राय को उनके हिस्से को वापस करने से इन्कार कर दिया।

रामनारायण राय के समय का जिक्र करते समय यह वर्णन किया गया है कि नवाब वजीर अली खाँ के अन्तिम अमलदारी में खानदान की दोनो शाखों ने युद्ध स्थल में जोर आजमाइश की थी और फिर अंग्रेजी अमलदारी की शुरूआत में बस्ती राय और बहादुर राय की करतूतों से सरकारी मालगुजारी तेरह हजार से छब्बीस हजार वार्षिक हो गयी। जिसका परिणाम यह हुआ कि कुल रियासत पडरौना का नीलाम अमल में आया और रायान पडरौना की हालत खतरनाक हो गयी। यह भाग्य ही था कि इन लोगों की नाव तूफान से बचकर तट पर पहुँची।

इस घटनाओं के बाद मौजा-पडरौना के नीलामी ने और राय ईश्वरी प्रताप राय की वादा खिलाफी (वचन को तोड़ने) ने इस खानदान की दोनों शाखों में इतनी कटुता पैदा कर दिया कि एक घर का प्रत्येक सदस्य दूसरे घर के सदस्य के रक्त का प्यासा बन गया। इलाकों, तथा घरों पर आये दिन झगड़े ओर फसाद के मामले इकट्ठा होते

रहते थे। अदालतों में पडरौना रियासत के मुकदमें बड़े जोर शोर से चल रहे थे।

रघुपति राय का जन्म 1214 फसली में हुआ था। ये मेहरबान राय की नस्ल में सबसे योग्य समझे जाते थे। उसी बीच रियासत पडरौना के दोनो शाखों के बीच शत्रुता की आग भड़की हुई थी। सन् 1857 ई० के स्वतन्त्रता संग्राम के समय उन दिनों फाजिल इलाही बक्श रईस गोरखपुर, पडरौना तहसील में तहसीलदार थे। उन्होंने स्वयं अपनी राय से अथवा कलेक्टर साहब के आदेश से ईश्वरी प्रताप राय से यह निवेदन किया कि वे सरकारी कोषागार को रक्षा की दृष्टि से अपनी सुपुर्दगी मे ले लें। यह खबर रघुपति राय को मिली तो उन्होने यह बहश पेश किया कि बतौर रईस पडरौना उन्हें भी सरकारी कोष के रक्षा करने में भाग मिलना चाहिए, परन्तु ईश्वरी प्रताप राय ने इस मामले में उनकी शिरकत (साझेदारी) करने से इन्कार कर दिया। अभी यह बहस चल ही रहा था कि खजाना किसको सुपुर्द किया जाये, उसी समय स्वतन्त्रता सेनानी पहुँच गये और खजाने को अपने अधिकार में कर लिया।

संयोग की बात तो देखिये, उसी समय मिस्टर वर्ड साहब कलक्टर गोरखपुर अपनी नेपाल यात्रा के सिलसिले में पडरौना आये। ईश्वरी प्रताप राय ने यद्यपि प्रकट रूप से साफ नहीं कहा परन्तु कुछ ऐसी पेचीदा तकरीर साहब कलक्टर से किया कि साहब को रघुपति राय और दुबरी राय दोनों से बदगुमानी पैदा हो गयी। साहब बड़े धुन के पक्के थे। वे रात के समय कपड़े बदल कर कोर्ट के दरवाजे पर हालात की जांच के लिये पहुंचे। उन दिनों ताल्लुकदारों ने अपनी रक्षा के लिए नये नौकरों की नियुक्ति कर लिया था। यह

नौकर बड़े खुद गर्ज होते थे। उनको अपने मालिकों के हित की चिन्ता नहीं रहती थी। वे खूब लूट खसोट करते और प्रजा पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे। मुतालबे की वसूली में रूपयों के बकायादारों पर जुल्म ढाहते थे। चुनान्चे एक बार रघुपति राय के सिपाही कुछ बकायेदारों को पकड़ लाये और उन पर अत्याचार ढाहने लगे। क्लक्टर महोदय ने स्वयं अपने नेत्रों से इन वारदातों को, सिपाहियों के सख्तियों को देखा और यह राय कायम कर लिया कि रघुपति राय और दुबरी राय दोनों इलाके के मालदारों को पकड़वा लाते हैं और जबरिया उनसे माल वसूल करते तथा उनपर अत्याचार करते हैं। ईश्वर को इन दोनो रईसों को बिगाड़ना था। अतएव देखी हुई तथा सुनी हुई घटनाओं के आधार पर उक्त साहब मारूप (कलेक्टर) ने यह राय कायम कर लिया कि ये लोग स्वामिभक्त जमीन्दार नहीं हैं। प्रजा की शान्ति और सुख में हस्तक्षेप करते हैं। अतएव इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समाप्त होने पर जब व्यवस्था सुधर गयी तो इन दोनों रईसों को आजन्म कारावास का दण्ड मिला और उनकी जायदाद जब्त हो गयी। कुछ जायदाद मुहम्मद तक्की तहसीलदार आजमगढ़ और कुछ अहमद शाही शाह रईस गोरखपुर को पुरस्कार मिला, जो अंग्रेजी अमलदारी के खैरख्वाह (स्वामिभक्त) समझे जाते थे।

रघुपति राय और दुबरी राय ने अमानत खजाना में अपनी सिरकत इसलिये चाही थी कि वे लोग भी उत्तरदायी और विश्वास पात्र रईस पडरौना समझें जायें और रायान की दृष्टि से सुरखुरू हों। उन लोगों ने विद्रोह के दिनों में इलाके के अन्दर शान्ति स्थापित रखा। जब शासन को सहायता के लिये गोरखपुर में सेना उनके इलाके से गुजरी तो स्वामिभक्ति के साथ सेना के सिपाहियों को खाद्य सामग्री दिया। परन्तु उन दिनों सरकारी जांच के बाद दण्ड की

[illegible] तथा घटनाओं की सही [illegible] इसके अतिरिक्त स्वयं जिला के उच्च अधिकारी [illegible] इन रईसों के विरुद्ध हो चुका था, [illegible] अपने दुर्भाग्य से इन रईसों को बरबाद [illegible] दुर्भाग्य काल में रघुपति राय की खुशनसीबी [illegible] अधिक दिनों तक झेलना नहीं पड़ा और [illegible] तीर्थ तथा पवित्र स्थान है पहुँचकर उनकी [illegible] पिंजड़े से उड़ गयी।

[illegible] प्रारम्भिक जीवन कोमल था। आखिर वे [illegible] यह मुसीबत थी कि उनकी कुल [illegible] कारागार का दण्ड मिला। दो [illegible] छोड़ना पड़ा। जो [illegible] शासन करते थे और [illegible] मुहैया रहता था, परन्तु [illegible] और अफसोस के साथ [illegible]

[illegible]

[illegible]

सबको संतान की इच्छा होती है। राय साहब तो एक अच्छे रईस थे उनको अपने निःसन्तान होने का बड़ा दुःख रहता था। उनको हितैषियों ने दूसरा विवाह करने को कहा। चुनान्चे द्वितीय पत्नी के जीवन काल में ही उन्होंने तीसरा विवाह ग्राम पड़री मेहदिया में किया। तीसरी पत्नी से कई पुत्र तथा पुत्रियां पैदा हुई परन्तु सबका स्वर्गवास शिशु अवस्था में हो गया। इसलिए राय साहब को संतान की ओर से निराशा हो गयी। वे हमेशा चिन्तित रहा करते थे। सन्तान के लिए पूजा पाठ, दान-पुण्य, खैरात आदि सब कुछ बड़ी श्रद्धा से करते थे। अन्त में तीसरी पत्नी को गर्भ रहा परन्तु इससे किसी को कोई खास खुशी नहीं हुई क्योंकि इसके पहले इस पत्नी के गर्भ से 11 पुत्र और पुत्रियां पैदा हुए और सब के सब शिशु अवस्था में ही मर गये। इसी समय एक बुढ़िया जिसकी आयु 100 वर्षों से अधिक हो गयी थी, घर में आयी। वह फकीराना लिबास में थी। उसने तीसरी बीबी से कहा कि तुम्हारे पेट में एक भाग्यशाली लड़का है परन्तु आवश्यक है कि उसे माता का दूध न पिलाया जाये और नौ वर्ष की आयु तक माता पिता से दूर क्रयकर्त्ता के यहाँ पाला पोषा जाय।

हिन्दुस्तान के आदमी विशेषतः स्त्रियां जईफुल अक्रतदार होती हैं अर्थात बुढ़ापे में उनकी बातें विश्वसनीय और भरोसेवाली होतीं है, परन्तु सच्ची बात यह है कि तूफान में डूबता हुआ, तिनके का सहारा ढूँढ़ता है। एक शफीक (प्रेमी) माता के लिये यह एक कड़ी शर्त थी लेकिन यह भी एक मादरी शफकत (मातृ प्रेम)थी। उन्होंने अपने कलेजे पर पत्थर रखकर बुढ़िया की राय को स्वीकार कर लिया। 14 अगहन 1260 फसली दिन मंगलवार को ग्यारह बजे रात्रि समृद्ध और ऐश्वर्य का सितारा, जो एक दिन रायान वंश का गर्व होने वाला था, रघुपति राय के घर में जन्म लिया अर्थात उदित

नारायण राय पैदा हुये।

राजा उदित नारायण राय

ऐतिहासिक पुस्तकों के अवलोकन से प्रकट होता है कि जो सफलता के शिखर पर पहुँचे हैं और ऐश्वर्य प्राप्त किया है, इसमें अधिकांश की बाल्यावस्था कष्टों मे बीती है। इसी खानदान में रायनाथ राय बड़े नामवर हुये हैं। उनका भी बाल्यकाल जैसा कि उनके हालात में ऊपर वर्णन किया गया है, बड़े कष्टों में बीता, परन्तु राय उदित नारायण राय के कष्ट उनके कष्ट से अधिक थे। सम्भवतः इसी कारण उनकी एकबालमंदी और समृद्धि राय नाथराय की समृद्धियों से अधिक थी। उनको माता के दूध का एक बूंद भी नहीं दिया गया। 6 दिन तक इन्हे एक दाई के दूध पर रखा गया। इसके बाद उन्हे मौजा मेहदिया, जो उनके सौतेली माता का मैका था, ले जाया गया और उनकी नानी को गल्ले पर विक्रय कर दिया गया। उनका नाम फेकुआ रखा गया। चूंकि दूध की पहले कोई व्यवस्था नहीं थी, उन्हे भूखा रहना पड़ा। नवजात शिशु भूख से चिल्लाना शुरू किया। ईश्वर को यह मन्जूर नहीं था कि यह एकबाल मंद शिशु जो एक दिन पडरौना राज्य का राजा होने वाला है, भूख से मरे, बल्कि यह पडरौना का राजा होकर सैकड़ों भूखों को भूख से मरने से बचाये। उनकी नानी को एक लड़की पैदा हुई थी जो एक वर्ष पहले मर चुकी थी। उन्होने केवल उनको बहलाने के लिये बच्चे को अपने स्तन से लगा दिया। ईश्वर की महिमा को देखिये। उस सूखे हुए स्तनों से दूध की धारा निकली और बच्चे ने दूध पिया। इसी कुदरतीशीर (प्राकृतिक दया) से उनकी परवरिस हुई। जब इनकी आयु साढ़े चार वर्ष की हुई तो एक और विपत्ति आई। रघुपति राय की सारी जायदाद विद्रोह के अपराध

में जब्त हो गयी और उन्हे आजन्म कारावास का दण्ड मिला। वे दो विधवाओं को घर पर और बिना किसी जीविका के साधन के छोड़ गये। उनके जीवन का सहारा केवल रिश्तेदारों की उदारता पर निर्भर था। वे कोठी के एक कमरे में जो संयोग से जब्ती से बच गया था, रहती थीं।

राजा साहब का पालन पोषण मामूली लड़कों की तरह होता था। उनके मिजाज में ताजगी और बुद्धि में और तरह का प्रकाश था। 6-7 वर्ष की आयु में वे समझने लगे कि उनकी दशा उनके मामूजात भाई बहनों से भी बदतर है। उनका तथा उनकी माता की रोजी का जरिया केवल रिश्तेदारों की कृपा पर निर्भर है। इस सदमे ने बच्चे के कोमल दिमाग को ठेस पहुँचाई, परन्तु चारा ही क्या था ?

उन दिनो मौजा में जो मेहदिया से चार किलोमीटर की दूरी पर है। एक साधु रहते थे जिनका नाम मानिकदास था और उनके चेले का नाम एकरामदास था। इन साधुओं के चमत्कारी कार्यों की शोहरत दूर-दूर तक फैल रही थी। राय फेंकूजी साहब की बुलन्दख्याल को देखिये, इतनी कम आयु में अपने साथियों के साथ इन साधुओं की कुटी पर जाते थे, और उनकी सेवायें करते थे। इनकी सेवायें और लोगों की सेवाओं से श्रेष्ठकर होती थी। मानिक दास जी बालक की नेक चलन, अकीदतमन्दी से बहुत प्रभावित हुए। अपनी तरफ से इनका नाम उदित नारायण राय रख दिया और उनके विषय में भविष्य वाणी किया कि यह बालक बड़ा भाग्यशाली होगा। इसको इतनी ख्याति प्राप्त होगी कि रायान पडरौना को महान गर्व होगा। नौ वर्ष तक राजा साहब फेकुआ या उदित नारायण राय ग्राम मेहदिया मे रहे। वे अपने मामूजात भाईयों के साथ कृषि कार्य में नाना की

सहायता करते थे। कभी कभी उनको ऐसी राय देते थे कि अनुभवी नाना जी बड़े आश्चर्य में पड़ जाते थे। छोटे-बड़े हर तरह के आदमियों के साथ कार्य करने तथा उनके बीच रहकर उन्होंने बहुत अधिक प्रयोगिक ज्ञान और तजर्बे हासिल किये। इन्हीं तजर्बों ने उन्हे ऐसा योग्य बना दिया कि इतनी बड़ी रियासत के कार्य भार में उन्हें कोई चकमा नहीं दे सका। अन्त मे नौ वर्ष के दिन समाप्त हुए। उनकी मातायें खास और सौतेली दोनों उन्हें अपने बीच लाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होने नन्दलाल राय से हाथी मांगा, जिस पर चढ़कर राजा साहब मेहदिया से पडरौना आये।

अर्से तक राजा साहब अपनी माताओं के साथ वेशाल (बिना कार्य के रहे)। इन लोगों की जीविका का कोई साधन नहीं था। ईश्वरी प्रताप राय और नन्दलाल राय समय-समय पर नकदी सहायता कर देते थे परन्तु यह नहीं आशा की जा सकती थी कि वे उन्हे कुछ मालिकाना हक दे देंगे। अधिक से अधिक यह उम्मीद की जा सकती थी कि वे अब उन्हें कुछ गांव ठेके पर परवरिस पर देंगे या कुछ आराजी रियायतीदर पर कृषि के लिए दे देंगे। अभी इस तरह का कुछ इरादा नहीं किया गया था कि माता को बेटे के विवाह का ख्याल पैदा हो गया। परन्तु ऐसे लड़के के साथ जिसके पास दो चार बीघे जमीन भी न हो, कोई व्यक्ति अपनी बेटी का विवाह नही कर सकता था। सौभाग्य तो देखिये ग्राम लखनौर जो इस विरादरी का मर्यादापूर्ण गांव है, में बाबू सहदेव मल्ल को एक लड़के की आवश्यक्ता थी, जिसके साथ वह अपनी बेटी का विवाह करते। उन्हें अभी तक कोई योग्य लड़का नहीं मिला था। अतएव ज्योंही शादी का पैगाम (सूचना) पहुँचा, बाबू सहदेव मल्ल अपनी पुत्री की शादी इस नौजवान के साथ करने पर सहमत हो गये। सहदेव मल्ल खुशहाल

आदमी थे। उनके पट्टीदारों और परिवार वालों ने हठ किया कि वे ऐसे बेसाया, बेसहारा व्यक्ति को अपना दामाद न बनायें, परन्तु कुछ तो न मिलने योग्य लड़के के और कुछ इस लड़के की कुलीनता के कारण बाबू सहदेव मल्ल ने इस पैगाम को स्वीकार किया और रिश्तेदारों की सहायता से तारीख आषाढ़ सुदी 5, 1274 फसली को शादी हो गयी।

गाँव और पड़ोस के लोग अफसोस करते थे कि लड़की ऐसे व्यक्ति से व्याही गयी कि जिसके पास दो-चार बीघे भी जमीन नहीं है कि वह अपनी जिविका का निर्वहन कर सके। परन्तु ये लोग कुदरत के इन्तजाम को नहीं जानते थे। उनको क्या मालूम था कि यह लड़की एक दिन पडरौना राज की रानी होगी।

विवाह के केवल एक सप्ताह बाद राय ईश्वरी प्रताप राय ने, बनारसी उपाध्याय को, जो ज्योतिष विद्या में पारगंत समझे जाते थे, जिनकी अवस्था 80 वर्ष से ऊपर हो गयी थी, बुलाया और कहा कि आप मेरी ओर से उदित नारायण राय की माता की ड्योढी पर जायें और उनसे कहें कि मदन गोपाल राय की कोई सन्तान नहीं है। वे अब विवाह करने पर कत्तई तैयार नहीं हैं। मैं उदित नारायण राय को अपने मौजूदगी में उनका जानसीन बनाना चाहता हूँ। अभी से उदित नारायण राय बतौर मेरे पुत्र के रहे। उनकी शिक्षा-दीक्षा उचित ढंग से कराई जायेगी। वह बूढ़े ब्राह्मण ड्योढ़ी पर उपस्थित हुए और ईश्वरी प्रताप राय के संदेश को पहुँचा दिया। वहां रघुपति राय की पत्नी थीं। समय के परिवर्तन ने उन्हें कष्टो के ढ़ेर में डाल दिया था। अर्से तक अमीरी के ऊंचे शिखर पर रहकर, निर्धनता के दिन देखने पड़ रहे थे। परन्तु रईसों का गर्व कभी नहीं जाता। उन्होंने उत्तर

दिया कि राय साहब की शत्रुता से हमारा घर लूटा गया और इन्ही के कारण हम लोग इस दुर्दशा को झेल रहे हैं। हमारे जीवन का सहारा और बाप की स्मृति केवल एक लड़का रह गया है। मै उसको किस विश्वास पर उसके पिता के शत्रु को सुपुर्द कर सकती हूँ ? यह उत्तर बड़ा कठोर था। साधारण आदमी इसे सुनकर क्रोध में आ जाता परन्तु ईश्वरी प्रतापराय एक हलीम (सन्तुलित मिजाज) और शान्ति स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने राजा उदित नारायण राय के माता के खेद के कारण को समझा और पुनः विचार करने के पश्चात् उसी पंडित को पुनः भेजा और कहला भेजा कि भाईयों में कभी प्रेम और कभी शत्रुता संसार की घटनाओं में से है, जो बात भाग्य में थी हो गयी, उसका तजकीरा अलाभकर है। उदित नारायण राय, मेरा भतीजा, मेरे पुत्र के रूप में रहेगा। और उसे मैं अपनी पूरी जायदाद का स्वामी बनाना चाहता हूँ। ऐसे प्यार के लिए मेरी तरफ से कोई बदगुमानी नही होगी। पंडित जी पुनः ड्योढ़ी पर गये और राजा (उदित नारायण राय) जी की माता को राय साहब के इस सन्देश को पहुँचाया और अपनी ओर से उन्हें जीवन के उतार-चढ़ाव को भी समझाया। बात न्याय संगत व वाजिब थी। राजा साहब की माता जी ने पंडित जी की राय को स्वीकार कर लिया और इन्हीं पंडित से शुभ साईत पूछ कर सावन सूदी पंचमी 1275 फसली को लड़के को राय साहब ईश्वरी प्रताप राय के घर पहुँचा दिया।

राजा साहब को ईश्वरी प्रताप राय के घर आने के एक वर्ष बाद ईश्वरी प्रताप राय का देहान्त हो गया। उनके समय में राजा साहब को रियासत के कारोबार में कोई दखल नहीं था परन्तु मदरसे में बैठे-बैठे वे रियासत के अहलकारों की गतिविधियों को बड़े ध्यान से देखते थे। उन्होंने माकूल ढंग से स्वामिभक्त तथा अस्वामिभक्त एवं

स्वार्थी अहलकारों के बीच अन्तर करना रियासत के कारोबार सम्भालने के पूर्व कर लिया था। विद्यार्थी जीवन में ही वे कारिन्दो और काश्तकारों से बात चीत करके उन चीजों की मालूमात कर ली, जिनका सीधा सम्बन्ध रियासत से था। बहुधा रात के समय भेष बदल कर कचहरी तथा गांव का गश्त लगाते थे। हालात से वाकिफ होते थे। जब उनकी मालूमात (जानकारी) पर्याप्त हो गया तो वे राय साहब को महत्वपूर्ण मामलों में राय देने लगे। प्रारम्भ में तो राय साहब ने इनके रायों पर ध्यान नही दिया। परन्तु जब काफी प्रमाणों के बाद उन्हें मालूम हो गया कि इस नौजवान की बातें ठीक उतर रही हैं ओर उनपर अमल करने से रियासत की उन्नति हो सकती है। तो वे प्रत्येक अहम कामों के सम्बन्ध में राय लेते और उनको अमल करने में लाते थे। राय साहब को सांसारिक कामों से तो स्वभावतः अरूचि ही थी। जब उन्होंने देखा कि उनका उत्तराधिकारी उनसे योग्यतर ढंग पर रियासत का प्रबन्ध कर लेगा तो उन्होंने राजा साहब को पाठ्शाले से बुला लिया और प्रत्येक तरह के रियासत के कारोबार उन्हें सौप दिया और अपनी तई केवल ठाकुर द्वारा का प्रबन्ध रख लिया जो उनके स्वभाव के अनुकूल था।

राजा साहब ने रियासत का कार्य भार ग्रहण करने के प्रथम दिन से ही हरीफ अहलकारों और कारिन्दो के अख्त्यारातों को घटाना शुरू कर दिया। चुनान्चे जब भगवन्त शुक्ल का रंग फीका पड़ने लगा। वे दरबार में आना बन्द कर दिये। इस मूर्खतापूर्ण विचार को अपने मस्तिष्क में शुक्ल जी बैठा लिये कि अनुभवहीन नौजवान को प्रबन्ध में अबतरी (गिरावट) आयेगी और रियासत के कारोबार को सम्भालने के लिए उन्हें इसरार के साथ बुलाया जायेगा। छः महीने अपने घर बैठकर रियासत की प्रबन्धता की अवतरी

(अवन्नति) की प्रतीक्षा करने लगे। इधर दिन प्रतिदिन रियासत के प्रबन्ध में उत्तमता आने लगी। उलझे हुए मामले सुलझने लगे। अतएव बिना बुलाये प्रायश्चित कर और लज्जित होकर शुक्ल जी सिर झुकाये दरबार में उपस्थित हुए। कुछ दिन नौकरी किये और फिर नौकरी छोड़ दिये या नौकरी ने उनका साथ छोड़ दिया। मुंशी जयनारायण सिंह ने अपने उत्तरदायित्व को और अच्छे ढंग से निबाहा। ये सिंह साहब अपने मालिकों के बड़े स्वामीभक्त थे।

जब पडरौना रियासत के नीलामी के मुकदमे चल रहे थे, उन्होंने जाफेसानी (हार्दिक) सहायता की थी और तीन वर्ष बराबर आगरा में रहे तथा गदर के कष्ट झेले। परन्तु जब सफलता के बाद वापस आये तो ईश्वरी प्रताप राय ने बजाय 30 रूपये के उनका वेतन चालीस रूपये माहवार कर दिया था और बीस बीघे उत्तम आराजी मौजा-सोहरबना में उनके सेवा कार्य के उपलक्ष में दिया। राजा साहब ने भी अपने समय में उनका आदर किया। और चार आना भाग मौजा परसौना में, जिसे पांच हजार रूपये में क्रय किया था, बक्श दिया तथा उनके मोसाहिरा (वेतन) में दस रूपये माहवारी की बढ़ोत्तरी कर दिया। अतएव मुंशी जयनारायण सिंह अपनी उम्र भर 50 रू० वेतन पाते रहे । खुशहाली के साथ अपनी उम्र इस रियासत में व्यतीत किया। उनको इन खानदान के हालात मालूम थे।

दूसरे विवाह का जिक्र

पहली पत्नी का गौना अगहन सूदी 1277 फसली में बड़ी धूमधाम के साथ हुआ। कुछ दिन राजा साहब की माता की इच्छानुसार वह अपने सास के घर रही और फिर राय साहब के महल में आयी।

इनके पेट से दो पुत्रियां पैदा हुई किन्तु वे शिशुकाल में ही मर गयी। राय मदन गोपाल राय सन्तान के तरसे थे। उनको इन घटनाओं ने तरह तरह के अन्देशे दिलाये। उन्होंने यह तय किया कि अपने उत्तराधिकारी का दूसरा विवाह करें। अपनी पत्नी जिसको अपने पति के प्रति अच्छी श्रद्धा थी, राय साहब की राय से तनिक भी आपत्ति नही प्रकट किया। अन्त मे उन्ही पहली पत्नी की दूसरी छोटी बहन के साथ राजा उदित नारायण राय का दूसरा विवाह माघ सूदी 10, 1282 फसली को हो गया। विवाह के जलसे में एक सौ पांच हाथी गये थे। इसी से बारात की और तैयारी का अनुभव किया जा सकता है। राय मदन गोपाल राय ने 16 अगस्त सन् 1880 ई० मुताविक सावन सुदी एकादसी 1207 फसली को उदित नारायण राय के नाम वसीयतनामा लिख दिया। वसीयतनामा लिखने के कुछ वर्षों तक किसी मसलहत से शान्ति रही। यह मामूली बात है कि जब हवा बन्द होती है तो आंधी आती है। चुनान्चे कुछ दिनों के बाद जिले का बन्दोबस्त शुरू हुआ। मदन गोपाल राय ने 8 फरवरी सन् 1886 में इस मजमून की दरख्वास्त प्रस्तुत किया कि उदितनारायण राय, जो मेरे जायदाद में शामिल हैं, उनका नाम भी रियासत देहात के खेवट में दर्ज किया जाये।

बाबू विन्ध्याचल प्रसाद राय ने पहली मार्च 1886 में उजुरदारी दाखिल कर दिया। मुकदमा चला। 8 मई 1891 ई० में यह मुकदमा डिसमिस हो गया। और फैसला राजा साहब के पक्ष में हुआ। उन्होंने मुकदमा का सारा खर्च विन्ध्याचल प्रसाद राय से वसूल नहीं किया।

राजा साहब उदितनारायण राय के धार्मिक ख्याल और इलाके की धार्मिक पाबन्दिया : राजा साहब शिकार के शौकीन थे। गुलेल

चलाने में प्रवीण थे परन्तु मदन गोपाल राय के जाननसीनी होने के दो वर्ष बाद कृष्ण जी के उपासक वैष्णवी हो गये। उसके बाद पूरा खानदान वैष्णवी रंग में डूब गया। लोगों ने गले में कण्ठियाँ बांध ली। वैसे तो प्रत्येक वैष्णवी लहमयात (लहसुन) से परहेज करता है परन्तु राजा साहब के खानदान के एहतियात सबसे बढ़े हुए थे। यहाँ लाल रंग की तरकारियां इसलिए निषेध समझी जाती थीं कि उनका रंग गोस्त के रंग से मिलता जुलता है। और भी जज्बात इसी ढंग से अनोखे थे। शजरे शादाब के लेखक मोहम्मद अब्दुल गफूर फारूकी लिखते हैंः

''अगर गैर मजहब का आदमी इन पाबन्दियों में मुव्तला कर दिया जाये तो उसके बिल्कुल खसस मौसमें सरमाये सर जमीन पडरौना पर नकद हयात को छोड़कर आराहे अदम की तरफ भागना पड़ेगा, गालिबन आदत का असर या मजहबी जोश ने दिलों में कुवत पैदा कर दी है कि ये लोग इन मुश्किलात को हल करते हैं और फिर तन्दुरूस्त भी हैं और सहीउल मिजाज भी हैं।''

पडरौना रियासत में पोखरों की संख्या अधिक है। झरही और वाणी नदियाँ बहती हैं। इन पोखरों की मछलियां राजा साहब की दयालु हृदयता से सुरक्षित रखी जाती थीं। केवल मौत के फिरिश्ते अपने कर्तव्यों के पालन करने के खातिर इन बेजवान हयातों को मारते थे क्योंकि मृत्यु किसी को छोड़ती नहीं है।

ठाकुर द्वारे का निमार्ण ईश्वरी प्रताप राय ने किया था लेकिन उसके दरवाजे और चौकठों पर मोटे पत्थर चांदी, के राजा साहब ने मड़वा दिये तथा फर्श को संगमरमर तथा संमूता की पटरियो से सजा दिया। लगभग पचास हजार रूपये के आभूषण ठाकुर जी की

नगर में राय साहब व राजा साहब के समय में हो चुका है। ठाकुर जी को रोजाना भोग लगता था। भोग में उत्तम किस्म के पकवान बनाये जाते थे। रोजाना भजन गाये जाते थे। और साल में एक दिन ऐसा होता था कि चार सौ से अधिक किस्म के पकवान भोग के लिए तैयार किये जाते थे। स्वयं राजा साहब प्रतिदिन शाम को मय राजकुमारों तथा हिन्दू मुलाजिमों के साथ मन्दिर में उपस्थित होते थे और धार्मिक संस्कार पूरा करते थे।

महल में एक दूसरा ठाकुर द्वारा स्त्रियों के लिए था। और [illegible] पर बड़े ठाकुर द्वारे में भी पूजा पाठ होते रहते थे। बड़े ठाकुर द्वारे में [illegible] साधुओं को बड़ी [illegible] मेहमान होती थी और [illegible] बड़ी संख्या में आते थे। कुछ लोगों को [illegible] खोलकर [illegible] भोजन बनाया जाता था और जब वे अपने घर लौटते थे तो उनको [illegible] तथा [illegible] दिया जाता था।

यद्यपि राजा साहब पक्के वैष्णवी थे परन्तु दूसरे धर्म वालों से [illegible] में [illegible] नहीं करते थे। बल्कि जहाँ तक सम्भव था उनकी सहायता करते थे। [illegible] साहब जिला गोरखपुर के प्रभावशाली [illegible] में बहुत दिनों तक पडरौना रियासत एक ही [illegible] मुसलमान रियाया के [illegible] का ख्याल करता था, उनको कुर्बानियों के [illegible] और [illegible] की सहायता दी जाती थी। पडरौना से पश्चिम [illegible] पर [illegible] शहीद का मजार है। उसकी पूजा और [illegible] राज [illegible] देती थी। वहाँ के मेले में स्वयं राजा साहब [illegible] जाते थे। उनकी उपस्थिति से मेले की शोभा बढ़ जाती थी और मुसलमानों का दिल, राजा साहब के [illegible] से [illegible]

होता था। मोहर्रम में ताजिये राजा साहब के सहन से निकलते थे और ये हिन्दू रईस उनकी इज़्ज़त करते थे।

साहिष्णुता इस खानदान की प्राचीन संस्कृति है। चुनान्चे पड्रौना की जामा मस्जिद और दरगाह के निर्माण में राय ईश्वरी प्रताप राय ने बड़ी रकम चन्दा में दिया था। जामा मस्जिद के निर्माण के सामप्ति के बाद जो पहली नमाज जुमा की पढ़ी गयी उसमें नमाजियों की दावत बड़ी खुशदिली के साथ राजा साहब ने किया था। ऐसा हो कि हम सब हिन्दू मुसलमान इसका अनुशरण करें तो भारत वर्ष की धार्मिक कटुता जो कभी-कभी जिल्लत और रूसवाई का कारण बन जाती, है दूर हो जाये और हम लोग शीर और शक्कर (दूध और चीनी) मिलाकर मिस्ल मुल्की भाईयों के स्वतन्त्र भारत में सुख और शान्ति के जीवन का आनन्द लेते रहें।

रिश्तेदारों और मुलाजिमों के साथ बर्तावः राजा उदित नारायण राय के सामने दो समस्यायें थीं। उनके रिश्तेदारों की तंगदस्ती, तनज्जुली (अवन्नति) और मुलाजिमों की शोखियां (गुस्ताखियां)। इनके रिश्तेदारों की आर्थिक दशा दयनीय थी। कोई-कोई तो रिश्तेदार लम्बे परिवार होने के कारण भूखमरी के तट पर पहँच गये थे। परन्तु इन्ही रिश्तेदारों में जब कुल रियासत कब्जे से निकल गयी थी तो कुल मुकदमे के खर्च में ईश्वरी प्रताप राय की पूरी सहायता की थी। परन्तु आश्चर्य है कि जब राय साहब मुकदमे में सफल हो गये और उनकी समृद्धि के दिन आये तो उन्होंने इन रिश्तेदारों के साथ सलूक लायके तजकीरा नहीं किया। राजा साहब उदित नारायण राय ने जिस दिन से रियासत की बागडौर अपने हाथ में लिया, इनका ध्यान इन रिश्तेदारों की तरफ आकर्षित हुआ।

सुप्रसिद्ध [illegible] [illegible] दिलवाये राय बहादुर गोपाल दास की [illegible] [illegible] दिया था, ईमानदारी और स्वामिभक्तिता से [illegible] [illegible] अगर कोई कड़ाई की जाती थी तो वे कार्य [illegible] [illegible] होते थे। राय साहब को इन [illegible] को [illegible] [illegible], क्योंकि इनके स्थानों की पूर्ति के लिए योग्य [illegible] [illegible] थे। राजा साहब ने इनके स्थानों की पूर्ति अपने योग्य, [illegible] और ईमानदार [illegible] से कर दी। अब इन [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] और [illegible] की [illegible] [illegible] परन्तु उनका [illegible] इनकी [illegible] [illegible] इस पर राजा साहब ने [illegible] [illegible]।

[illegible]

([illegible] [illegible] एक [illegible] दी कथा)

[illegible] [illegible] कोई [illegible] नहीं था। उसके निर्माण [illegible] था, परन्तु धन के अभाव में निर्माण [illegible] राजा साहब ने अपने स्मृति की [illegible] [illegible] कार्य के लिए दिये। परन्तु ऐसे [illegible] आवश्यकता थी। [illegible] [illegible] राजा साहब का ध्यान [illegible] [illegible] की निर्माण की [illegible] [illegible] राजा साहब ने [illegible] हजार रु० नकद खजाना से [illegible]

निकाल कर दे दिया और टाउन हाल का निर्माण हो गया। यह राजा साहब के विशाल हृदय का द्योतक है। इसी तरह सैय्यद मिमोरियल अलीगढ़ के लिए राजा साहब ने बहुत बड़ी धनराशि चन्दे में दिया।

राजा बृज नारायण सिंह एवं राय जगदीश नारायण सिंह

राजा उदित नारायण राय के पश्चात सन् 1900 ई० में उनके पुत्र बृज नारायण सिंह राजा हुए। उन्हे युद्ध के समय उनकी कुशलता पूर्ण सेवाओं के उपलक्ष्य में ब्रिटिश सरकार द्वारा सन् 1919 ई० में राजा बहादुर की उपाधि से विभूषित किया गया तथा वे आजीवन द्वितीय श्रेणी आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाये गये। सन् 1924-1926 ई० में वह विधान परिषद के सदस्य भी रहे। उनकी सरकार एवं जनता के मध्य अच्छी छवि थी। उनके भाई बाबू जगदीश नारायण सिंह को उनका दाहिना हाथ माना जाता था। जगदीश नारायण सिंह को सन् 1923 ई० में राय बहादुर की उपाधि दी गयी तथा आजीवन आनरेरी मुन्सिफ बनाये गये।

Who is who Indian Princes, Chiefs and Nobles 1987......... Padrauna: Raja Bahadur Braj Narain Singh, Raja of Padrauna Raj in the district of U.P. was born in 1875 and suceeded his father Raja Udit Narain Singh in 1900. This Family of Gaharwar Kshatriyas came into prominence in the first half of 17Th century. In 1686 then head of the family Rai Nath Rai received a Nankara grant of 33 villages and arms from Aurangzeb. The title of Raja Bahadur was conferred as a personal distinction in 1919 in recognition of his meritorious services during the great war. The title of Raja being

hereditary. The Raja Bahadur is a second class Honorary Majistrate for life and was the member of the Provincial Legislative Council during 1924-26. Where he proved himself to be a man of great tact and resourcefulness. He is liked by the government and the public for his numerous services to them.

Rai Bahadur Jagdish Narain Singh, the younger brother of the Raja Bahadur of Padrauna is his right hand and no account of him or his estate can be considerd complete without a mention of the prominent part he has taken in it's amelioration. He was born in 1885 and made Rai Bahadur in 1923 for his meritorious services. He is an Hony. Munsif for life and a widely travelled man.



चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

पुस्तक में वर्णित इतिहासिक प्रमाणों तथा लेखों से स्पष्ट होता है कि राजा मझौली तथा मधुबन के विसेन क्षत्रिय (मल्ल) एक ही राजवंश के हैं। उनके एक ही आदि पुरूष महाराजा विश्वसेन थे। मझौली की प्राचीन राजधानी तथा कोट ककराडीह, तहसील नगरा, वर्तमान मधुबन जिला-आजमगढ़ अब वर्तमान जिला-मऊ है।

मझौली में परम्परागत राजयाभिषेक के समय अबतक ककराडीह कोट से मिट्टी मंगायी जाती है और धार्मिक संस्कार सम्पन्न किया जाता है। ककराडीह गांव सदा से ही लखनौर मधुबन के बाबूआनों की जमीन्दारी का गांव जमींदारी उन्मूलन तक रहा है, यह जाहिर करता है कि मधुबन के मल्ल मझौली के हकीकी पट्टीदार हैं। राजा प्रसाद मल्ल मझौली और माधव मल्ल मधुबन, दोनो सहोदर भाई थे।

सन् 1565 ई० में मुगल बादशाह अकबर ने प्रबंध के दृष्टिकोण से मझौली राज का बँट्वारा कर दिया था। जिसके अनुसार सरयू नदी के दक्षिणी भूभाग जो विस्तार में तीन सौ वर्गमील का था, का बाबू माधव मल्ल को स्वामी बनाया और राजा की पदवी से विभूषित किया और राजा भीम मल्ल पुत्र राजा प्रसाद मल्ल को महाराजा की पदवी प्रदान किया। राजा माधव मल्ल ने माधववन गांव बसाया जो आज का मधुबन है तथा एक विशाल किला बनवाया जिसका भग्नावेश आज भी उसका प्रतीक है।

यही मधुबन क्षेत्र सन् 1942 के आन्दोलन में बड़ी बहादुरी से हिस्सा लिया था। जो देश स्तर पर विख्यात है। मल्लान के बाबूआनों ने तात्कालिक आवश्यक्तानुसार शहीद इण्टर कालेज मधुबन की स्थापना किया सीधा- अहिलासपुर कालेज की स्थापना हेतु बाबू रमाशंकर मल्ल, सीधा तथा लखनौर के विसेन जमीन्दारों ने गुरुम्हा ग्राम में क्रमशः 25+14 बीघा भूमि दान किया था, जो आज भी कालेज के अधिकार में है।

यह भी प्रमाणित हुआ कि मधुबन के विसेन क्षत्रियों के संबंधी सैथवार शब्द से संबोधित क्षत्रिय प्रमाणित क्षत्रिय हैं। जो सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में पश्चिमी प्रान्तों पंजाब, राजस्थान, कश्मीर आदि स्थानों से जंगैटौस के बाद राजा नत्थ मल्ल के साथ पूर्वांचल की ओर आये और गोरखपुर, बस्ती, देवरिया जिलो में आबाद हो गये। इस गोल में 36 किस्म के विभिन्न वंश एवं गोत्र के क्षत्रिय सम्मिलित हैं। वंश, गोत्र आदि की तालिका पुस्तक में वर्णित है।

उक्त आगन्तुक क्षत्रिय समूह के नेता (अगुवा) बीर राजा मोतीदास गौड़ थे, जो पंजाब के जालन्धर जिले के सिहत के राजा थे। इस स्थान तथा मोतीदास के कोट का निरीक्षण ''क्षत्रिय बंशार्णव'' के लेखक स्वर्गीय ठाकुर सूबेदार भगवानदीन सिंह सोमबंशी प्रतापगढ़ ने किया और व्हाँ से मोतीदास की वंशावली भी ले आये। जो पुस्तक में वर्णित है।

राजा मोतीदास को सिहत से आने के कारण सहतवार या सैथवार शब्द से संबोधित किया जाने लगा। चूंकि मोतीदास उक्त क्षत्रिय समूह के अगुआ थे। इसलिये जनता गोल के सभी क्षत्रियों

को सैथवार कहने लगी। कुछ अवांछित तत्वों (विकृत मानसिकता) वालों ने नाम के आगे दास शब्द लगाने का गलत अर्थ लगाकर जनता में उक्त क्षत्रियों के बारे में जातीय भ्रम फैलाना शुरू कर दिया। दास शब्द का शाब्दिक अर्थ बता कर नौकर तथा सेवक श्रेणी की मान्यता का प्रचार किया। भोली भाली जनता धीरे धीरे ग्राह्य करने लगी और फिर प्रचार ने उन्हे और प्रौढ़ कर दिया।

उन महानुभावों के बुद्धि और विवेक की बलिहारी है जिन्होंने इस प्रकार का असामाजिक घृणित कार्य किया। उन्हे नहीं मालूम कि दास पदवीधारक अनेक क्षत्रिय राजा हुये हैं। जैसे राजा भगवान दास, राजा गोपाल दास, राजा बिट्ठल दास, राजा रघुदास, बीर दुर्गा दास आदि।

सिंह की पदवी तो प्राचीन नहीं है। पश्चिम प्रान्तों में सिंह की पदवी सिक्ख धारण करते हैं। क्षत्रियों की पदवी राय, राम, रावत, दास आदि की ही प्रायः प्रचलित थी।

असलियत छिप नहीं सकती बनावट के वसूलों से।
खुशबू आ नही सकती कभी कागज के फूलों से॥

पुस्तक में वर्णित इतिहासिक प्रमाणित तथ्यों से सिद्ध है कि पडरौना रायान गहरवार क्षत्रिय हैं। यह राजा जयचन्द के भाई राजा मानिकचन्द के वंशज हैं। जैसा कि पुस्तक में इनकी वंशावली दी गयी है। पडरौना राज के आदि पुरूष तथा संस्थापक भुआल राय या भूपाल राय थे जो मुसलमानों के अत्याचार से तंग आकर बरबाद होकर बड़े मानिकपुर से पूर्वान्चल गोरखपुर की तरफ आये।

मुसलमानो में अत्यन्त क्रूर तथा अत्याचारी खाँ बन्धुओं अली कुली खाँ व बहादुर खाँ ने गहरवार क्षत्रियों के ऊपर इतना कहर गुजारा, कत्लेआम किया कि कड़ेमानिकपुर से सभी क्षत्रिय अन्यत्र पलायित हुए। उसी सिलसिले में भुआल राय अपने फूफा राजा माधव मल्ल मधुबन के पास आकर शरण लिये। कालान्तर में राजा माधव मल्ल की सहायता से मकवानी राजाओं को हराकर एक छोटा सा राज पडरौना स्थापित किया। धीरे-धीरे इस खानदान के पुरूषार्थी लोगों ने अपने पराक्रम से इस राज को एक विशाल राज्य के रूप में बदल दिया जो जमीन्दारी काल में बहुत बड़ा पडरौना राज था। पडरौना के रायानों ने अनेकों सामाजिक काम किया है। अनेको कूयें, विशाल पोखरे, मन्दिर-मस्जिद में सहायता, लखरांव बाग, जिसमें लाख आम के पेड़ थे, लगाया। गोरखपुर का टाउन हाल आदि बनवाने में मदद किया।

विसेन वंश वाटिका के लेखक द्वारा एक मनगढन्त अमर्यादित कथानक लेख लिख कर जनता में भ्रम पैदा किया गया। यद्यपि लेखक महोदय, एक माने जाने वाले विद्वान पुरूष थे, परन्तु उनके इस प्रकार के निन्दनीय कार्य उनके व्यक्तित्व के लिए अशोभनीय है। बिना बुद्धि जरे विद्या की कहावत चरित्रार्थ होती है। आप ही द्वारा अपने ही खानदान में वंश भेद पैदा करने की साजिश अपनी पुस्तक में की गयी है।

विसेन वंश वाटिका के लेखक महोदय ने अपनी पुस्तक में अप्रमाणित झूठी मनगढ़न्त बातों, लेखों को लिख कर वाटिका को एक ऐसी विषैली तीर बना कर, सही इतिहासिक प्रमाणित घटनाओं

की हत्या करने की साजिश किया है, जो अमर्यादित है। यह तारीखी गलतियां किसी स्वार्थ वश जान बूझ कर की गई हैं या न जानकारी से लिखी गयी है, इसका निर्णय करना कठिन है, परन्तु

झूठ तो झूठ ही है, सच हो सकता नही।
पानी में मिला चूने का घोल, दूध बन सकता नहीं॥

वाटिका के लेखक महोदय ने राजा नत्थ मल्ल जो एक इतिहासिक पुरुष थे, जिनके नाम पर मऊ जिले में नत्थूपुर नामक परगना है, उनका अस्तित्व ही मिटाने की साजिश विसेन वंश वाटिका में किया है। इसके तहत आपने अनेकों झूठी अप्रमाणित तथ्यों का सहारा लिया है। अपनी पुस्तक में दी गई वंशावली में राजा नत्थमल्ल का नाम नहीं दिया है, उड़ा दिया है।

आईना अवध के लेखक सैय्यद अब्दुल हसन मानिकपुरी को अपनी पुस्तक लिखते समय जब मझौली राजघराने की वंशावली आप द्वारा मिली (मझौली राजा द्वारा)। आइना अवध के लेखक ने इस वंशावली में राजा नत्थ मल्ल का नाम न देख कर अपनी पुस्तक में लिखा हैः 'राजा मझौली द्वारा प्रस्तुत यह वंशावली यकीनन फर्जी है क्योंकि राजा नत्थ मल्ल जमींदार मझौली को मुगल बादशाह जहाँगीर ने अपने प्रारम्भिक जुलूस में जो सन् 1605 ई० में हुआ था, 5000 रूपये बतौर इनाम के दिया, लिखा था। 'तुजुक जहाँगीरी' जिसको बादशाह ने स्वयं लिखा है उसमें पृष्ठ संख्या 38-39 में उक्त इबारत लिखी गयी है। वास्तविकता छिपाई नहीं जा सकती है, न दबाई जा सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक में विसेन वंश वाटिका के उक्त सभी लेख, तथ्यहीन संदर्भों को बड़े ही अच्छे ढंग से इतिहासिक प्रमाणों द्वारा खण्डन किया गया है।

अब पाठक गण सच्चाई एवं प्रमाणिकता की कसौटी पर कस कर वाटिका के भ्रमपूर्ण लेखों का, भ्रांतियों का उन्मूलन कर वास्तविकता को, जो इस पुस्तक में इतिहाससिक प्रमाणों द्वारा सिद्ध है, जनता में प्रस्थापित करें।

यही क्षत्रिय समाज के लिये उपयोगी होगा। क्षत्रिय संगठन को बल मिलेगा। संगठन का विस्तार होगा। आपसी तनाव दूर होंगे। आत्मीयता प्रगाढ़ होगी। क्षत्रिय महासभा की तरफ से जैसा कि पिछले अध्यायों में वर्णन किया गया है, सुधार कार्य हो रहे हैं। बिछुडे एवं धर्मान्तरित बन्धुओं को मूल धारा में समाहित करने का अभियान चलाया जा रहा है। परन्तु गति धीमी है। पुरानी मानसिकता बदलनी पड़ेगी। स्वच्छ तथा उदारता पूर्वक आपसी समरसता का व्यवहार कर सघन सम्बन्ध स्थापित करके क्षत्रिय एकता को सार्थक करना होगा।

अतः जाति हितैषियों से निवेदन है कि आपस के नीच-ऊंच अगले-पिछड़े के भेद-भाव को मिटाकर इस विशाल बहुवंशीय क्षत्रियों को सुसंगठित करके उन्हे अपने वास्तविक अतीत के कर्म रक्षा करना जो क्षत्रिय कर्म है, करें। समाज में फैली बुराईयों, ध्रुम्रपान, फिजूल खर्ची, दहेज आदि व्याधियों से अपने तथा अपनी सन्तान को बचाना होगा। इसी भावना के विस्तार से सारे समाज व राष्ट्र का उत्थान हो

सकता है। यही पुस्तक की सच्ची सार्थकता होगी और लेखक को हार्दिक, अपार सुख सन्तोष प्राप्त होगा।

सत्य सिद्धान्तों पर आधारित।
देश भक्ति का हो अतिरेक॥
क्षत्रियत्व ध्वजा उन्नत रखने को।
राजपूत सब होवें एक॥

जय क्षत्रिय समाज

महताब नारायण मल्ल
एम. ए. अंग्रेजी, इतिहास
प्रवक्ता अंग्रेजी राजकीय
जुबिली इण्टर कालेज, गोरखपुर
ग्रा० लखनौर, जनपद-मऊ



परिशिष्ट-2

वंशावली

वंशावली विसेन वंश खानदान मझौली मय कालाकाँकर मधुबन, वगैरह

आदि पुरूष विश्वसेन-मूलस्थान-ककराडीह, तहसील नगरा (वर्तमान-मधुबन)

जिला-आजमगढ़ (वर्तमान मऊ)

- राजा रघुवंश मल्ल (९३ पीढ़ी)
  - (मझौली राज) राजा रतन मल्ल
    - राजा राम मल्ल
      - राजा नृप मल्ल
        - राजा हरिश्चन्द्र मल्ल
          - महाराजा देव मल्ल
            - राजा प्रसाद मल्ल
              - महाराजा भीममल्ल
                - राजा नारायण मल्ल
                  - राजा रूप मल्ल
                    - राजा विक्रमादित्य मल्ल
                      - राजा बोध मल्ल
                        - भवानी मल्ल
                          - भीम मल्ल(द्वितीय)
                        - लक्ष्मी मल्ल
                          - राजा शिव मल्ल
                            - राजा अजीत मल्ल (रानी दिलराज कुँवरी) ने गोद लिया तेज मल्ल (ङ)
                          - बा०कृष्ण प्रसाद मल्ल
                            - बा० सर्वजीत मल्ल
                              - तेज मल्ल
                        - आनन्द मल्ल
                          - गोविन्द मल्ल
                            - पृथ्वी मल्ल
                              - प्रताप मल्ल
                                - शेई मल्ल
                              - जुवा मल्ल
                              - हरिपाल मल्ल (घ)
                              - कन्हैया मल्ल
                          - इन्दर मल्ल
                    - बा०माधव मल्ल (द्वितीय) (महेन के पूर्वज)
                  - चतुर शाह
                  - बा० छत्तर शाही
                - बावू राम शाही
            - माधव मल्ल (मधुबन)
              - राजा नत्थ मल्ल (ग)
              - बा. अजई मल्ल
            - रायमल्ल (नरहरपुर के राजा)
        - राम प्रताप मल्ल (गोंडा)
  - बा० रूप मल्ल (क) (काला कांकर जि० प्रतापगढ़ के पूर्वज)

इनके वंशज नत्थूपुर, बहरामपुर, पलिया, खीरी कोठा, छपरा नेवादा, लालनपुर, उसरी, नन्दौर, गांगेवीर आदि गाँवों में बसे हैं।

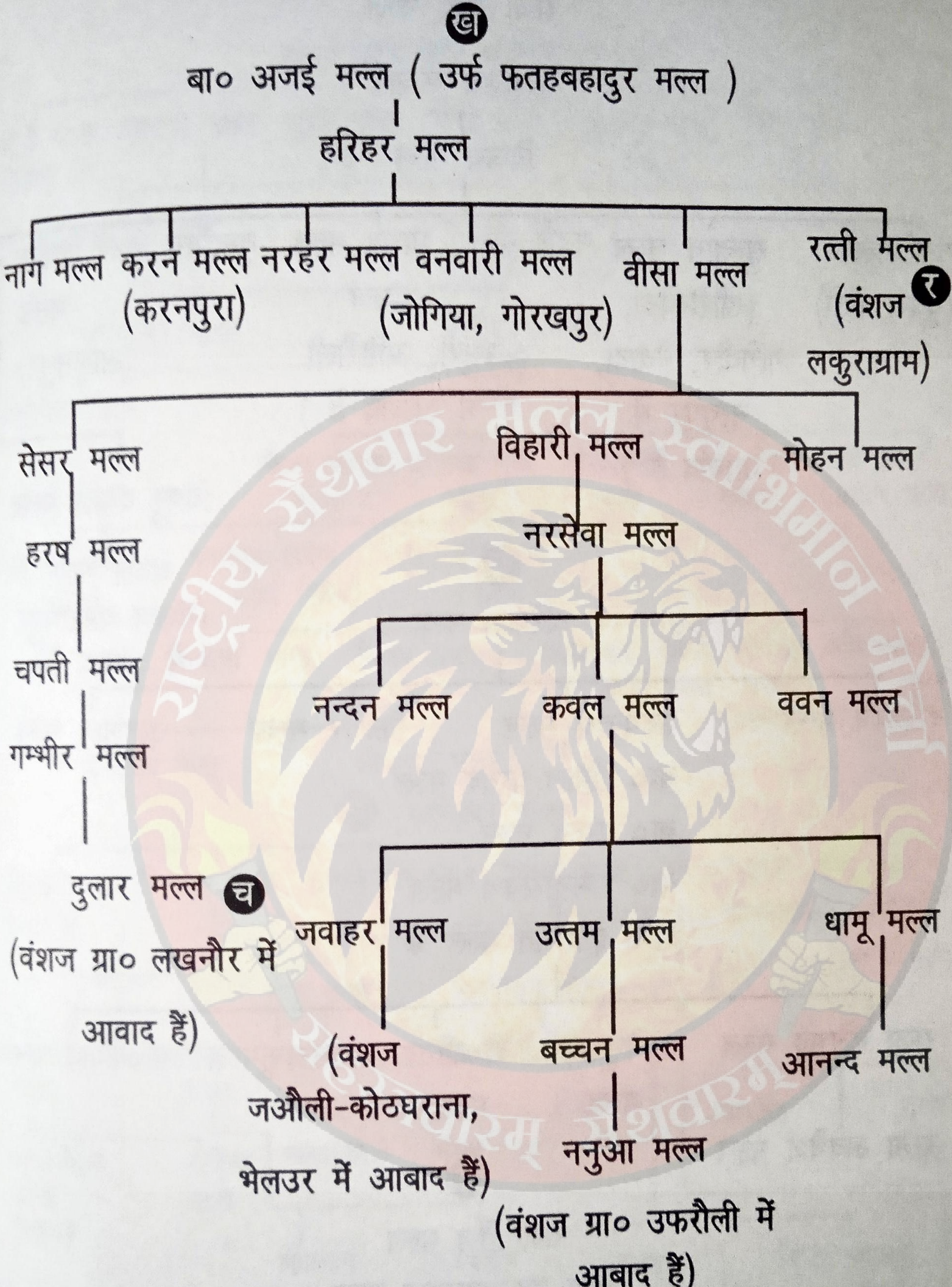
उर्फ फतह बहादुर मल्ल (ख)

वंशावली विसेन वंश (काला कांकर जि० प्रतापगढ़)

क

(काला कांकर जि० प्रतापगढ़ के पूर्वज)
(नोट- होम मल्ल को ननिहाल (सुन्दर देव राय) में रहने के कारण उन्हें भी राय से सम्बोधन किया जाने लगा।

- बा०रूपमल्ल
  - राय होम मल्ल
    - राय पुरन्दर मल्ल
      - राय गोपाल मल्ल
        - राय राघो
        - बाबू राम
          - राय असकरन
            - रूद्र प्रताप
              - टोड़ल (टोडर मल्ल)
                - धारू शाह
                  - वरलस राय
                    - राय जै सिंह
                      - राय श्याम सिंह
                        - राय संग्राम सिंह
                        - माऊ सिंह
                          - राय कमल सिंह
                            - लाल बलवंत सिंह
                              - लाल वेरीसात
                                - राय हनुमंत सिंह
                                  - लाल प्रताप सिंह
                                    - राजा रामपाल सिंह
                                      - दतफ पुत्र रमेश सिंह
                                        - राजा अवधेश सिंह
                                          - राजा दिनेश सिंह (भूतपूर्व विदेश मंत्री)
                                        - वृजेश सिंह
                                        - सुरेश सिंह
                                  - लक्षमण सिंह
          - राय काशी
          - राय खेमकरन
        - राय रनजीत


ख
बा० अजई मल्ल (उर्फ फतहबहादुर मल्ल)
हरिहर मल्ल
नाग मल्ल
करन मल्ल (करनपुरा)
नरहर मल्ल
वनवारी मल्ल (जोगिया, गोरखपुर)
वीसा मल्ल
रत्ती मल्ल
र
(वंशज लकुराग्राम)
सेसर मल्ल
हरष मल्ल
चपती मल्ल
गम्भीर मल्ल
दुलार मल्ल
च
(वंशज ग्रा० लखनौर में आवाद हैं)
विहारी मल्ल
मोहन मल्ल
नरसेवा मल्ल
नन्दन मल्ल
कवल मल्ल
ववन मल्ल
जवाहर मल्ल
(वंशज जऔली-कोठघराना, भेलउर में आबाद हैं)
उत्तम मल्ल
बच्चन मल्ल
ननुआ मल्ल
(वंशज ग्रा० उफरौली में आबाद हैं)
धामू मल्ल
आनन्द मल्ल

ग

राजा नत्थ मल्ल
|
अजित मल्ल
|
विजय मल्ल

- गंगा मल्ल (पूर्वज पाँती)
- सुल्तान मल्ल (खीरीकोठा, गांगेवीर, नेवादा, नत्थूपुर में आबाद हैं)
- नवल मल्ल
- माधव मल्ल
- वृन्दावन मल्ल
- (नवल मल्ल, माधव मल्ल, वृन्दावन मल्ल के वंशज उसुरी, अहिरौली में आवाद हैं)
- विक्रमा मल्ल (लालनपुर)
  - विष्णु दयाल मल्ल
    - धवल मल्ल (वंशज बहरामपुर में आवाद हैं)

घ

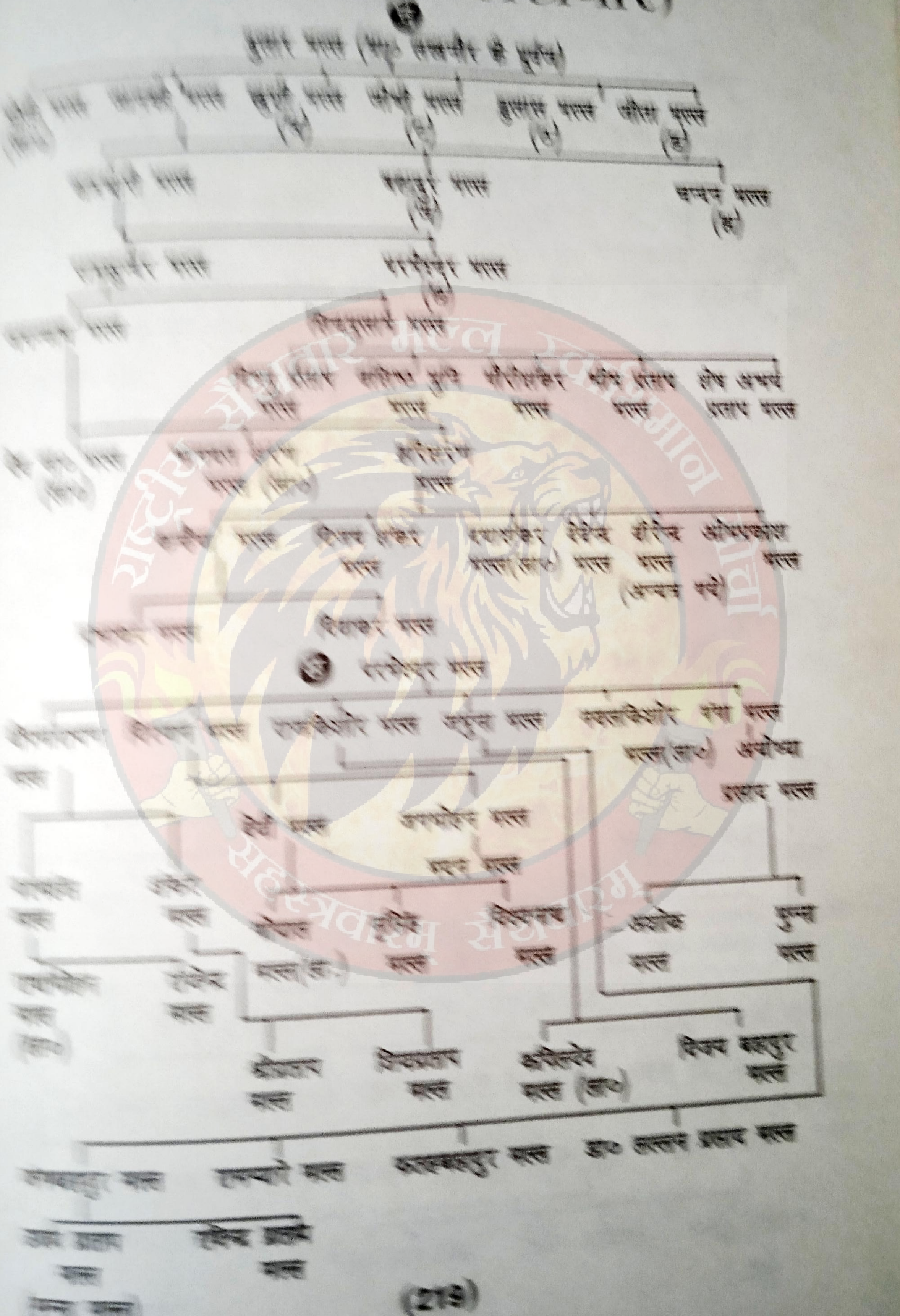
हरिपाल मल्ल

- दुखहरन मल्ल
- उदयनाथ मल्ल
  - बा० शीतल प्रसाद मल्ल
    - बा० प्रसाद मल्ल
      - बा० रामनारायण मल्ल
        - राजा इन्द्रजीत मल्ल *
          - राजा बलभद्र मल्ल
            - राजा अवधेश मल्ल
          - बा०वेनूप्रातप मल्ल
          - बा०झीनक मल्ल
          - बा०नन्हकूमल्ल
          - बा०केशव मल्ल
- किशोर मल्ल
- अहलाद मल्ल

ङ

राजा तेज मल्ल
|
राजा उदयनारायण मल्ल
|
खड्ग बहादुर मल्ल
|
राजा कौशल किशोर मल्ल
|
(रानी श्याम सुन्दरी कु०) (नोट रानी श्यामसुन्दरी के बाद इन्द्रजीत मल्ल राजा बने) *

(वंशावली ग्राम लखनौर)



ज बहादुर मल्ल

अज्ञात

गुफतार मल्ल | सुहावन मल्ल. (ला.) | अज्ञात

साधुशरण मल्ल

राजवली मल्ल | रामअवध मल्ल

ठाकुर मल्ल

रामप्रसाद मल्ल (ला.)

रूद्रप्रताप मल्ल

शिवप्रसादमल्ल | रामजी मल्ल | जयगोविन्द मल्ल | छांगुर मल्ल

कमला मल्ल | शिवचनमल्ल | राम गोविन्द मल्ल

रघुवीर मल्ल | शिवकुमार मल्ल

राजकुमार मल्ल

राजेन्द्र मल्ल | सुरेश मल्ल (ला.) | अजीत मल्ल (ला.) | भीम मल्ल | जगदीश मल्ल

अवधेश मल्ल

झ चन्दन मल्ल

अज्ञात

मंगल मल्ल | विष्णु दयाल मल्ल

राजा राम मल्ल

जगत नारायन मल्ल | महेश मल्ल

उदय शंकर मल्ल | हृदय शंकर मल्ल

श्यामनारायन मल्ल | राजनारायन मल्ल

दिलीप मल्ल | रूपनारायन मल्ल | जगवीर मल्ल | शिवशकर मल्ल(ला.)

दौलत मल्ल | सूर्य नारायण मल्ल | सत्यनारायण मल्ल (ला.)

रमाशंकर मल्ल

रणवीर मल्ल (ला.) | रणधीर मल्ल | अविनाश मल्ल

रामपाल मल्ल

(ज)

खुशी मल्ल

अज्ञात

रघुनाथ मल्ल

रामदास — पदारथ मल्ल

भागवत मल्ल

रामलगन मल्ल — फौजदार मल्ल — श्रीकृष्ण मल्ल

वीरेन्द्र प्रताप मल्ल

लालबहादुर मल्ल (ला०) — वैजनाथ मल्ल — केदारनाथ मल्ल — हंसनाथ मल्ल — ओंमकार मल्ल — पशुपति नाथ मल्ल

जीतेन्द्र मल्ल — उदयनारायण मल्ल — सुरेन्द्र नाथ मल्ल

(ट) जोधी मल्ल (पूरब द्वार पट्टी)

(ट/१)

गौरी मल्ल — अज्ञात — अज्ञात

पलकधारी मल्ल — मोहन मल्ल — रामयश मल्ल

रामगुलाम मल्ल — भैरव मल्ल — रामनारायण मल्ल(ला.) — जगेसर महाराजमल्ल मल्ल — उदितनारायण मल्ल

(ट/२)

गया मल्ल

रामलषण मल्ल

सत्यनारायण मल्ल

उमाशंकर मल्ल

महाप्रसाद मल्ल(ला.) — विजयशंकर मल्ल — शत्रुघ्न मल्ल — रूद्रप्रताप मल्ल(ला.) — सतीश मल्ल (ला०)

श्रीनाथ मल्ल
योगेन्द्र मल्ल
व्रजनारायण मल्ल
दर्पनारायण मल्ल
तेज शंकर मल्ल

अनुपम मल्ल — अमित कुमार मल्ल

(मठिया-गोरखपुर)

परमेश्वर मल्ल — रामअवध मल्ल

रामदवर मल्ल — रामकरन मल्ल — रामरेखा मल्ल — पारस नाथ मल्ल — श्यामविहारी मल्ल — रामभवन मल्ल — विभव मल्ल

(ट/२)

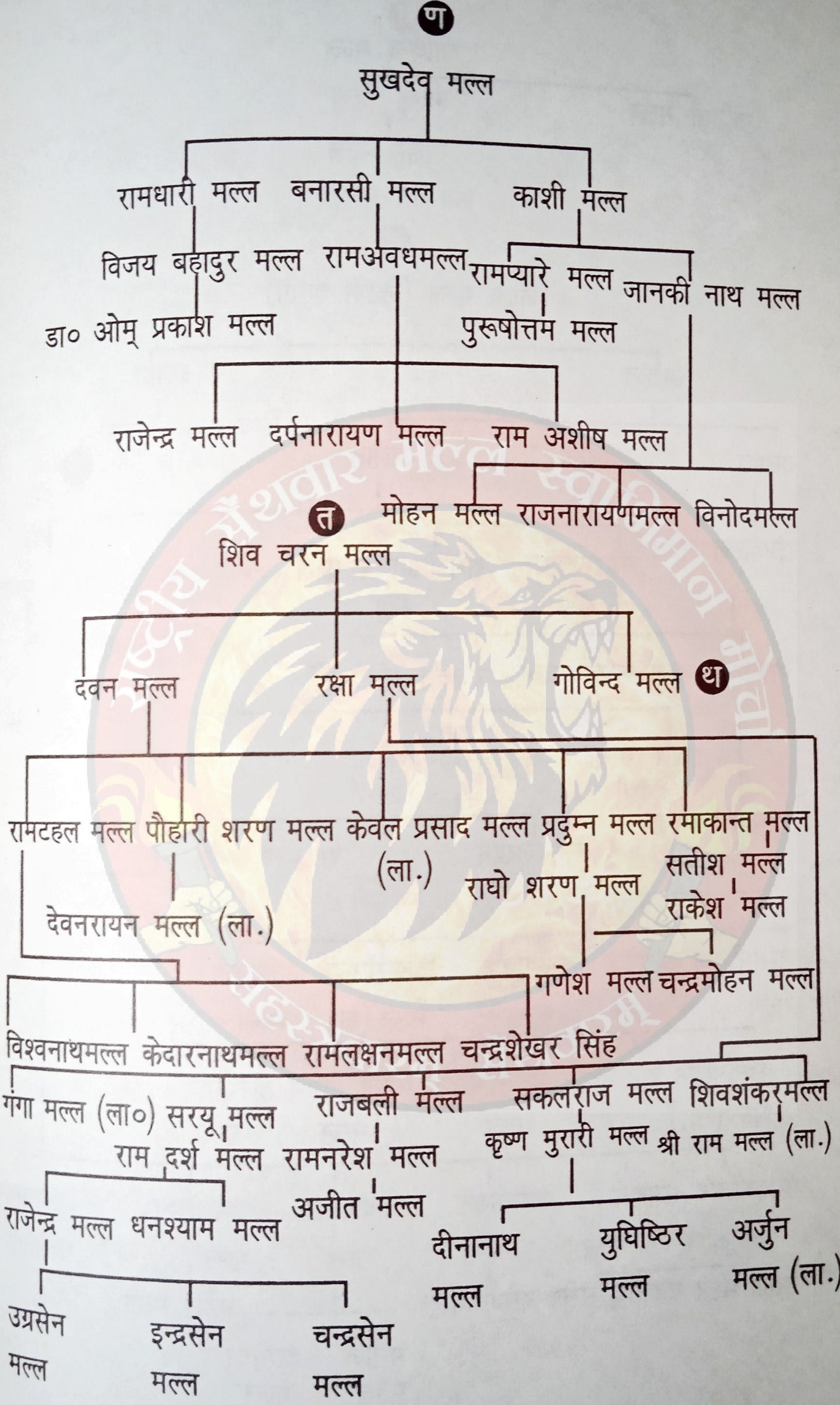
- महराज मल्ल
  - अभिराज मल्ल
    - साधुशरण मल्ल
      - रामवली मल्ल (ला०)
      - रामप्यारे मल्ल
        - ब्रह्मदेव मल्ल
        - धर्मदेव मल्ल
    - वंशबहादुर मल्ल
      - रामजी मल्ल

(ट/१)

- अज्ञात
  - रामयश मल्ल
    - जुगुलकिशोर मल्ल
      - बंधू मल्ल
        - हरिशंकर मल्ल
          - कृष्ण प्रताप मल्ल
          - विष्णु प्रताप मल्ल
          - राजेन्द्र मल्ल
          - नागेन्द्र मल्ल
          - रामप्रताप मल्ल

(ठ)

- हुलास मल्ल
  - अज्ञात
    - हंसराज मल्ल (ला०)
    - इन्द्रासन मल्ल
      - रामदेव मल्ल
        - लक्ष्मी मल्ल
          - पृथ्वीपति मल्ल
            - महताबनारायण मल्ल
              - रविप्रकाश मल्ल
              - डा०चन्द्रप्रकाश मल्ल
              - अरूण कुमार मल्ल
              - अमित कुमार मल्ल
            - रणजीत मल्ल (ला०)
        - बलदेव मल्ल
          - अयोध्या प्रसाद मल्ल
            - सत्य प्रकाश मल्ल
            - इन्द्र प्रकाश मल्ल
    - कुमारमल्ल
      - रामदयाल मल्ल
        - संतबक्शमल्ल
          - चन्द्रभान मल्ल
            - राधेश्याम मल्ल
        - ज्वाला मल्ल (ला.)
      - शिवदेव मल्ल
        - जंग बहादुर मल्ल
          - दान बहादुर मल्ल
        - वीर बहादुर मल्ल
          - राम बहादुर मल्ल
        - तेज बहादुर मल्ल
          - शमशेर बहादुर मल्ल
      - सुखदेव मल्ल (ण)
    - शिवचरन मल्ल (त)


ण
सुखदेव मल्ल
रामधारी मल्ल
बनारसी मल्ल
काशी मल्ल
विजय बहादुर मल्ल
रामअवधमल्ल
रामप्यारे मल्ल
जानकी नाथ मल्ल
डा० ओम् प्रकाश मल्ल
पुरूषोत्तम मल्ल
राजेन्द्र मल्ल
दर्पनारायण मल्ल
राम अशीष मल्ल
मोहन मल्ल
राजनारायणमल्ल
विनोदमल्ल
त
शिव चरन मल्ल
दवन मल्ल
रक्षा मल्ल
गोविन्द मल्ल
थ
रामटहल मल्ल
पौहारी शरण मल्ल
केवल प्रसाद मल्ल (ला.)
प्रदुम्न मल्ल
रमाकान्त मल्ल
सतीश मल्ल
राकेश मल्ल
राघो शरण मल्ल
देवनरायन मल्ल (ला.)
गणेश मल्ल
चन्द्रमोहन मल्ल
विश्वनाथमल्ल
केदारनाथमल्ल
रामलक्षनमल्ल
चन्द्रशेखर सिंह
गंगा मल्ल (ला०)
सरयू मल्ल
राजबली मल्ल
सकलराज मल्ल
शिवशंकरमल्ल
राम दर्श मल्ल
रामनरेश मल्ल
कृष्ण मुरारी मल्ल
श्री राम मल्ल (ला.)
अजीत मल्ल
राजेन्द्र मल्ल
धनश्याम मल्ल
दीनानाथ मल्ल
युधिष्ठिर मल्ल
अर्जुन मल्ल (ला.)
उग्रसेन मल्ल
इन्द्रसेन मल्ल
चन्द्रसेन मल्ल

गोविन्द मल्ल

महीपत मल्ल　मल्लू मल्ल

नृसिंह मल्ल

सर्वजीत मल्ल

ड

जीता मल्ल (जेठरी पट्टी)

अज्ञात　अज्ञात

शिव दयाल मल्ल

अज्ञात　अज्ञात　अज्ञात

फ

रामदीहल मल्ल　महराज मल्ल　रामजीआवन मल्ल　रटन मल्ल　जयराज मल्ल

द　ध

(न गुरूम्हा ग्रा० में)

राजधारी मल्ल　जगदेवमल्ल　रजवत मल्ल　प

ठाकुर मल्ल (ला.)　जीव नरायन मल्ल　मगन मल्ल

सूर्यवली मल्ल

राम लखन (ला.)　रामहरष मल्ल

रामनरायन मल्ल

कृष्णसेवक मल्ल　चन्द्रदेव मल्ल　चन्द्रभूषण मल्ल　विद्यासागर मल्ल (ला.)　अत्रिमुनी मल्ल

कृष्णमोहन मल्ल(ला.)　राधामोहन मल्ल　मदन मोहन मल्ल　विष्णु मोहन मल्ल　हरिमोहन मल्ल

रामअवतार मल्ल(ला.)　रामबचन मल्ल　रामकरन मल्ल　केदारनाथ मल्ल　रामलोचन मल्ल　रामलक्षन मल्ल(ला.)

गिरीश मल्ल　प्रहलाद मल्ल　रमेश मल्ल　महेश मल्ल

मनोज मल्ल　दामोदर मल्ल

द

- महाराज मल्ल
  - बांके बिहारी मल्ल *(ने बैजनाथ मल्ल पुत्र देऊ मल्ल को गोद लिया)
    - नरेन्द्र प्रताप मल्ल
    - नागेन्द्र प्रताप मल्ल
  - कोमल मल्ल (ला०)
  - इमिरित मल्ल
    - श्याम विहारी मल्ल
      - राम प्रसाद मल्ल (ला०)
    - रामरेखा मल्ल (ला०)

ध

- रामजिआवन मल्ल
  - लक्ष्मन मल्ल
    - सुभग मल्ल
      - शिवबली मल्ल
        - रामरूप मल्ल
          - सूर्यभान मल्ल
          - मंगल मल्ल
    - देऊ मल्ल
      - *बैजनाथ मल्ल
    - अवधू मल्ल (ला.)
    - रोशू मल्ल
      - शिवेणी मल्ल
        - राजेन्द्र मल्ल
        - विरेन्द्र मल्ल
    - दलसींगार मल्ल(ला.)
  - भरत मल्ल
    - राजवली मल्ल(ला.)
    - वंशराज मल्ल
      - छेदी मल्ल
        - रामाज्ञा मल्ल
        - रामप्रताप मल्ल
        - रामविजय मल्ल
    - वासदेव मल्ल(ला.)

न (गुरुम्हाग्राम)

- रतन मल्ल
  - मिश्रीमल्ल
    - सूर्यवंशी मल्ल
      - रामनाथ मल्ल
      - परमहंस मल्ल
      - रामाशंकर मल्ल
  - रामजी मल्ल
    - वेनीमाधो मल्ल
      - हरदेव मल्ल
        - विजयशंकर मल्ल
        - महेन्द्र प्रताप मल्ल
        - देवेन्द्र प्रताप मल्ल
  - रामअवध मल्ल
    - रामसुन्दर मल्ल
      - विश्वनाथ मल्ल
        - सत्यनरायन मल्ल
        - श्यामनरायन मल्ल
        - अर्जुन मल्ल
- जयराज मल्ल
  - सर्वजीत मल्ल(ला.)
  - सकलराज मल्ल
    - साहव मल्ल (ला.)
    - गोरख मल्ल
      - रमायण मल्ल
      - गुलाब मल्ल
    - जगतनरायन मल्ल (ला.)

प

रजवत मल्ल
- रामगती मल्ल
  - कुंज बिहारी मल्ल (ला०)
  - सूर्यनारायण मल्ल (ला०)
- सुमेश्वर मल्ल
  - महावीर मल्ल
    - रामसेवक मल्ल
      - चन्द्रमोहन मल्ल

फ

शिवदयाल मल्ल
- सहदेव मल्ल
  - महादेव मल्ल (ला०)
  - सुन्दर मल्ल (ला०)
  - महावीर मल्ल
    - ब्रज विहारी मल्ल
      - हरिशंकर मल्ल
    - अवध विहारी मल्ल
      - विश्वनाथ मल्ल (ला.)
      - बैजनाथ मल्ल
        - प्रभुनाथ मल्ल
      - विजयशंकर मल्ल
        - लक्ष्मी प्रताप मल्ल
        - विनोदकुमार मल्ल
      - रमाशंकर मल्ल
- भोला मल्ल
  - हरिद्वार मल्ल
    - वासदेव मल्ल
      - राम प्रसाद मल्ल **म**
      - राधा मोहन मल्ल(ला.)
    - लालता मल्ल
    - कुंज विहारी(द्वितीय) मल्ल **भ**
  - मथुरा मल्ल
    - राम लाल मल्ल (ला.)
  - द्वारिका मल्ल **य**
- शिवनाथ मल्ल **घ**

द्वारिका मल्ल **य**
- विन्ध्याचल मल्ल (ला.)
- गोपी मल्ल
  - जमुना मल्ल
- रामजनेसर मल्ल (ला.)

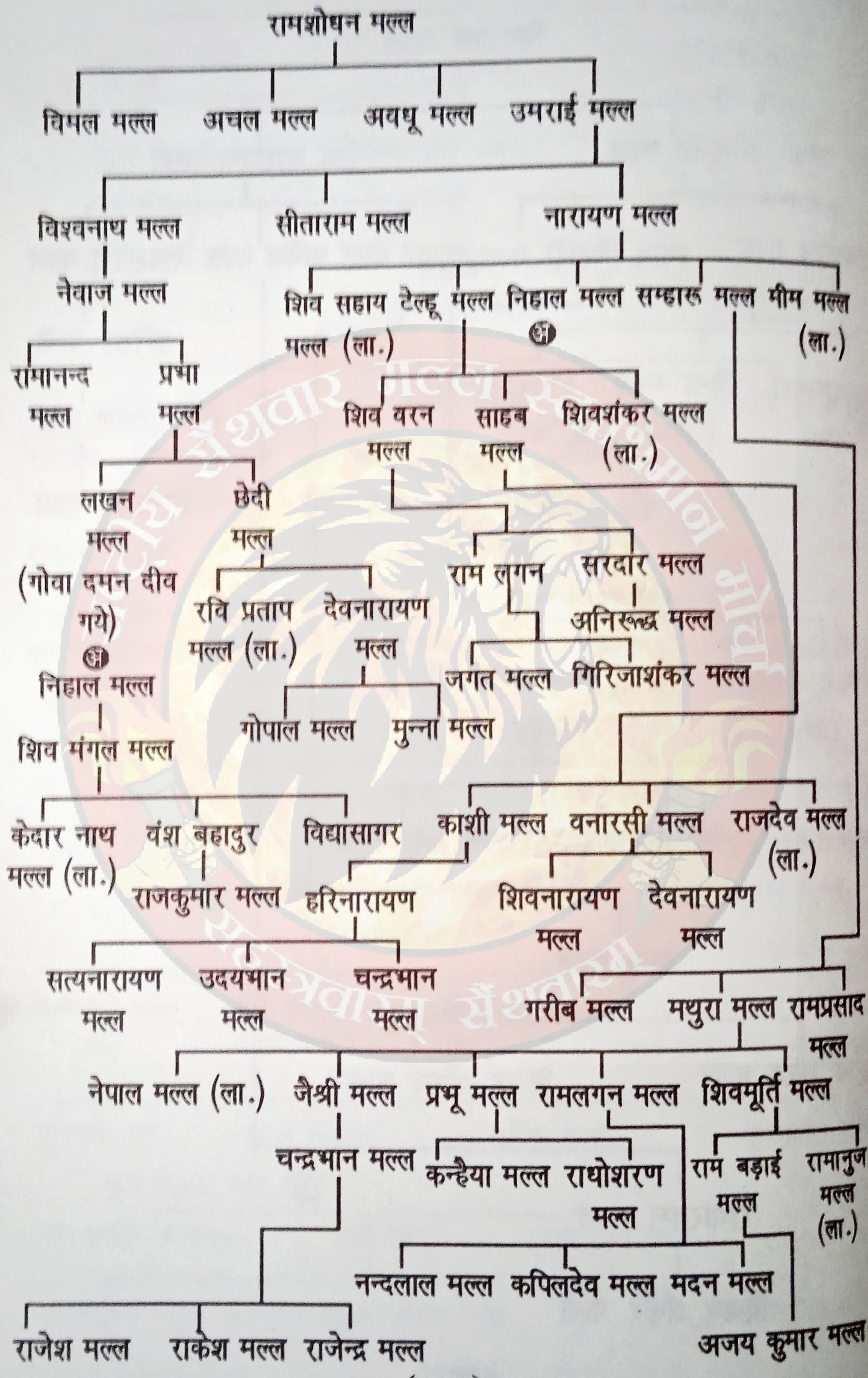
राम प्रसाद मल्ल **म**
- भगवती मल्ल
- सुवाष मल्ल
- कन्हैया मल्ल
- कृष्णप्रताप मल्ल

कुंज बिहारी मल्ल **भ**
- रामअवतार मल्ल(ला.)
- हीरा मल्ल
  - चन्द्रभूषण मल्ल
  - ब्रजभूषण मल्ल
  - दिनेश मल्ल
- श्याम लाल मल्ल
  - महात्तम मल्ल

(ब)

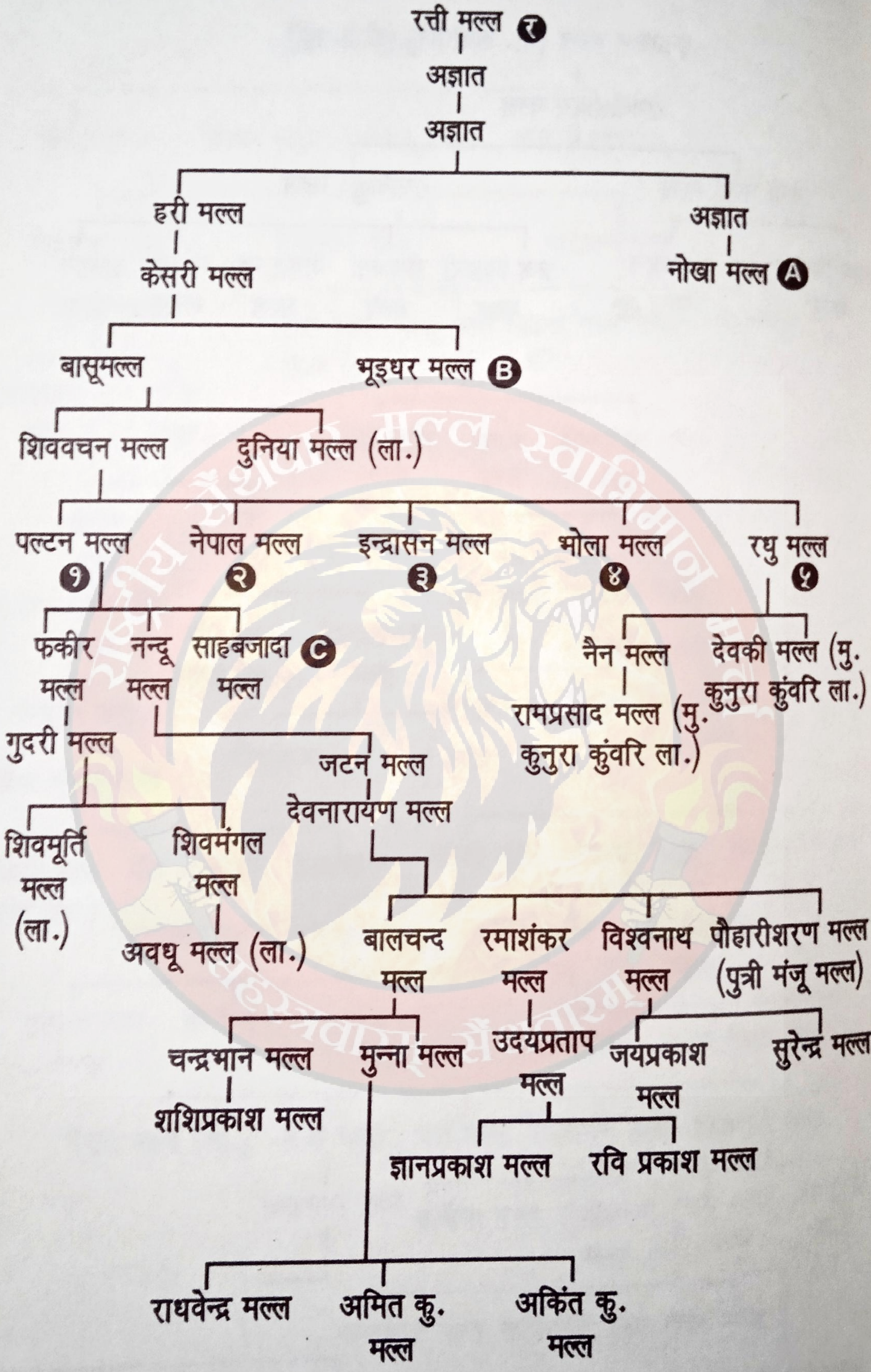
- शिवनाथ मल्ल
  - कुबेर मल्ल
    - जयकरन मल्ल
      - रामनारायण मल्ल
      - रविन्द्र मल्ल (ला०)
      - रमाशंकर मल्ल
        - सुखारी मल्ल
    - श्याम बिहारी मल्ल
      - रामनाथ मल्ल (ला०)
      - देवनारायण मल्ल
        - अवधेश मल्ल
        - विनोद मल्ल
        - ब्रजकिशोर मल्ल
        - राजेश मल्ल
  - टेक नारायण मल्ल
    - ठाकुर मल्ल
      - बच्चू मल्ल
        - हृदय शंकर मल्ल
        - विजय शंकर मल्ल
    - नागेश मल्ल
      - राधारमण मल्ल
        - विजय शंकर मल्ल
    - शिवशरण मल्ल
      - हरिहर मल्ल
        - सूर्य नारायण मल्ल
          - ज्ञानेश्वर मल्ल

वंशावली बिसेन वंश ग्रा. लखनौर (पट्टी डीहापार के मल्ल बाबूआन)



- इन्द्रासन मल्ल (ग्रा. लखनीर) (डीहा पट्टी)
  - रामखेलावन मल्ल
    - वेनी माधो मल्ल
      - श्याम बिहारी मल्ल
      - रामलखन मल्ल (मृ०)
    - रामकिसुन मल्ल
      - ब्रज बिहारी मल्ल
      - रामचन्द्र मल्ल
      - जगत ना. मल्ल
      - महेन्द्र मल्ल
      - लल्लन मल्ल

बिसेन वंश वंशावली ग्रा. लकुरा, जनपद - मऊ



C

- साहबजादा मल्ल
  - स्वामी नाथ मल्ल (ला.)
  - रजई मल्ल
    - बाँका बहादुर मल्ल
      - उदयभान मल्ल (ला.)
      - हरिशरण मल्ल
        - संतोष कुमार मल्ल
        - विनोद कुमार मल्ल
    - कालिका मल्ल
      - अनन्त मल्ल
        - अश्वनी कुमार मल्ल
        - महातम मल्ल
    - बद्रीनारायण मल्ल (ला.)
  - रामबली मल्ल
    - दलसिंगार मल्ल
      - सूर्यभान मल्ल
        - विजयशंकर मल्ल
      - ब्रहमा मल्ल
        - अरविन्द कुमार मल्ल
        - पवन कुमार मल्ल
    - रामदेव मल्ल
      - महेन्द्र प्रताप मल्ल
        - बृजेश कुमार मल्ल

२

- नेपाल मल्ल
  - हरिद्वार मल्ल
    - दुक्खी मल्ल
      - रामलखन मल्ल (ला.)
  - तुलसी मल्ल
    - रामभवन मल्ल (मु. प्यारी कुंवरि ला.)
  - अकालू मल्ल
    - दूधनाथ मल्ल
      - अवधविहारी मल्ल
      - रमाकान्त मल्ल
    - जगन्नाथ मल्ल (ला.)
  - गुफ्तार मल्ल (ला.)

४

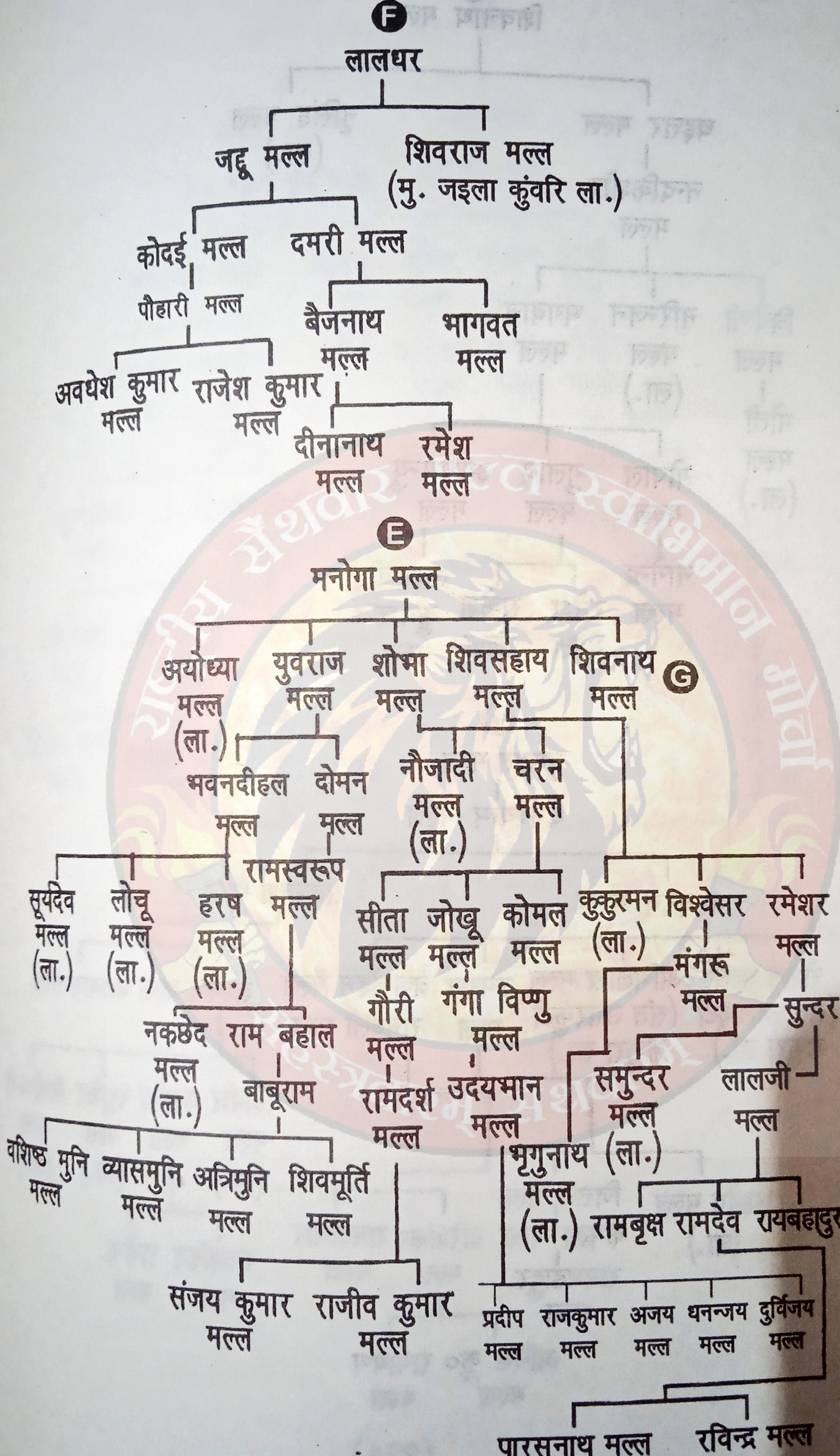
- भोला मल्ल
  - लगन मल्ल
    - पड़ोही मल्ल
      - रमाशंकर मल्ल
        - श्यामकरन मल्ल
        - विजय बहादुर मल्ल
      - सूर्यभान मल्ल
        - खड्ग बहादुर मल्ल
        - संजय मल्ल

३

- इन्द्रासन मल्ल
  - [illegible] मल्ल
    - [illegible] मल्ल (ला.)
    - गोरख मल्ल (ला.)
  - द्वारिका मल्ल
    - महाबीर मल्ल
      - दीप नारायण मल्ल
        - परमहंस मल्ल
          - कमलेश मल्ल
          - रमेश मल्ल
        - वीरेन्द्र मल्ल
    - पटेश्वर मल्ल (ला.)
  - पलकधारी मल्ल
    - महादेव मल्ल
      - रामाश्रय मल्ल
        - नरेन्द्र मल्ल
      - राम अवध मल्ल
    - जोखन मल्ल
      - प्रभुनाथ मल्ल
        - ओऽमकार मल्ल उर्फ बेचू
        - हरिनाथ मल्ल

- (B) भुइधर मल्ल
  - धिनहू मल्ल
    - टिकइत मल्ल
      - फेकू मल्ल
        - गुरसहाय मल्ल
          - माता (मु. लखपति ला.)
      - भजन मल्ल (ला.)
    - चुरावन मल्ल (संत कुटी लकुरा ला.)
    - भोज मल्ल
      - हंसराज मल्ल
        - रोशन मल्ल (ला.)
        - जगरोशन मल्ल (ला.)
        - रोमन मल्ल (ला.)
        - विक्रमा मल्ल
          - राम दयाल मल्ल (ला.)
          - शिवदेव मल्ल (मु. गुलाबी देवी ला.)
      - महाराज मल्ल
    - शिव दयाल मल्ल
      - रामकुंवर मल्ल
        - कवल मल्ल
          - जिवधन मल्ल (ला.)
        - मधुरा मल्ल (ला.)
        - गोकुल मल्ल (ला.)
      - भीम मल्ल
        - बहादुर मल्ल
          - रघुनाथ मल्ल
            - सूर्यबली मल्ल
              - कालिका मल्ल
              - रामधारी मल्ल
              - शिवपूजन मल्ल
                - रामविलास मल्ल
                - गुलाब मल्ल
                - रामसींगार मल्ल
            - बलिराज मल्ल
              - बुनियादी
              - विश्वनाथ
              - ब्रजनाथ
            - अभिराज मल्ल
              - रामयादी मल्ल
              - ठाकुर मल्ल
              - मनेजर मल्ल
            - राजबली मल्ल (मु. सुनझारी कुंवरि ला.)
        - श्री कृष्ण मल्ल
          - लक्ष्मन मल्ल (ला.)
      - लालधर मल्ल (F)
  - मनोगा मल्ल (E)
  - सुखइत मल्ल (D)

उपरोक्त रघुनाथ मल्ल का परिवार सिंहपुर देवरिया में है।

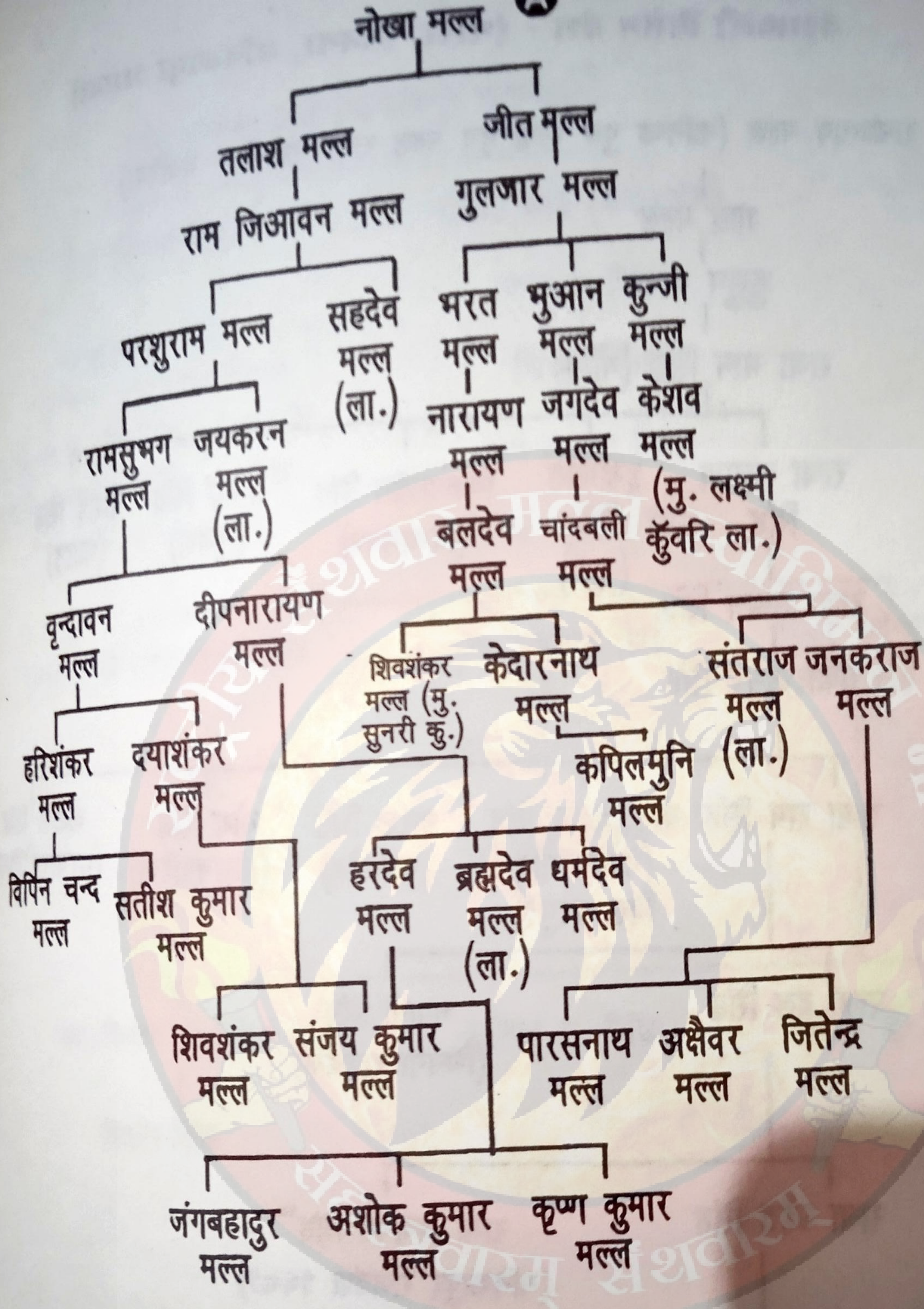

F
लालधर
जद्दू मल्ल
शिवराज मल्ल
(मु. जइला कुंवरि ला.)
कोदई मल्ल
दमरी मल्ल
पौहारी मल्ल
बैजनाथ मल्ल
भागवत मल्ल
अवधेश कुमार मल्ल
राजेश कुमार मल्ल
दीनानाथ मल्ल
रमेश मल्ल
E
मनोगा मल्ल
अयोध्या मल्ल (ला.)
युवराज मल्ल
शोभा मल्ल
शिवसहाय मल्ल
शिवनाथ मल्ल
G
भवनदीहल मल्ल
दोमन मल्ल
नौजादी मल्ल (ला.)
चरन मल्ल
सूर्यदेव मल्ल (ला.)
लोचू मल्ल (ला.)
हरष मल्ल (ला.)
रामस्वरूप मल्ल
सीता मल्ल
जोखू मल्ल
कोमल मल्ल
कुकुरमन (ला.)
विश्वेसर
रमेशर मल्ल
मंगरू मल्ल
सुन्दर
गौरी मल्ल
गंगा
विष्णु मल्ल
नकछेद मल्ल (ला.)
राम बहाल
बाबूराम
रामदर्श मल्ल
उदयभान मल्ल
समुन्दर मल्ल (ला.)
लालजी मल्ल
भृगुनाथ मल्ल (ला.)
वशिष्ठ मुनि मल्ल
व्यासमुनि मल्ल
अत्रिमुनि मल्ल
शिवमूर्ति मल्ल
रामबृक्ष
रामदेव
रायबहादुर
संजय कुमार मल्ल
राजीव कुमार मल्ल
प्रदीप मल्ल
राजकुमार मल्ल
अजय मल्ल
धनन्जय मल्ल
दुर्विजय मल्ल
पारसनाथ मल्ल
रविन्द्र मल्ल

(E)

- शिवनाथ मल्ल
  - छहत्तर मल्ल
    - नन्दकिशोर मल्ल
      - त्रिवेणी मल्ल
        - मोती मल्ल (ला.)
      - नरिन्जन मल्ल (ला.)
      - भगवान मल्ल
        - गोपाल मल्ल
          - नागेन्द्र मल्ल
        - गुलाब मल्ल
          - रमेश मल्ल
          - राकेश मल्ल
        - अभिमन्यु मल्ल
          - अश्वनी कुमार मल्ल
  - नृसिंह मल्ल (ला.)

(D)

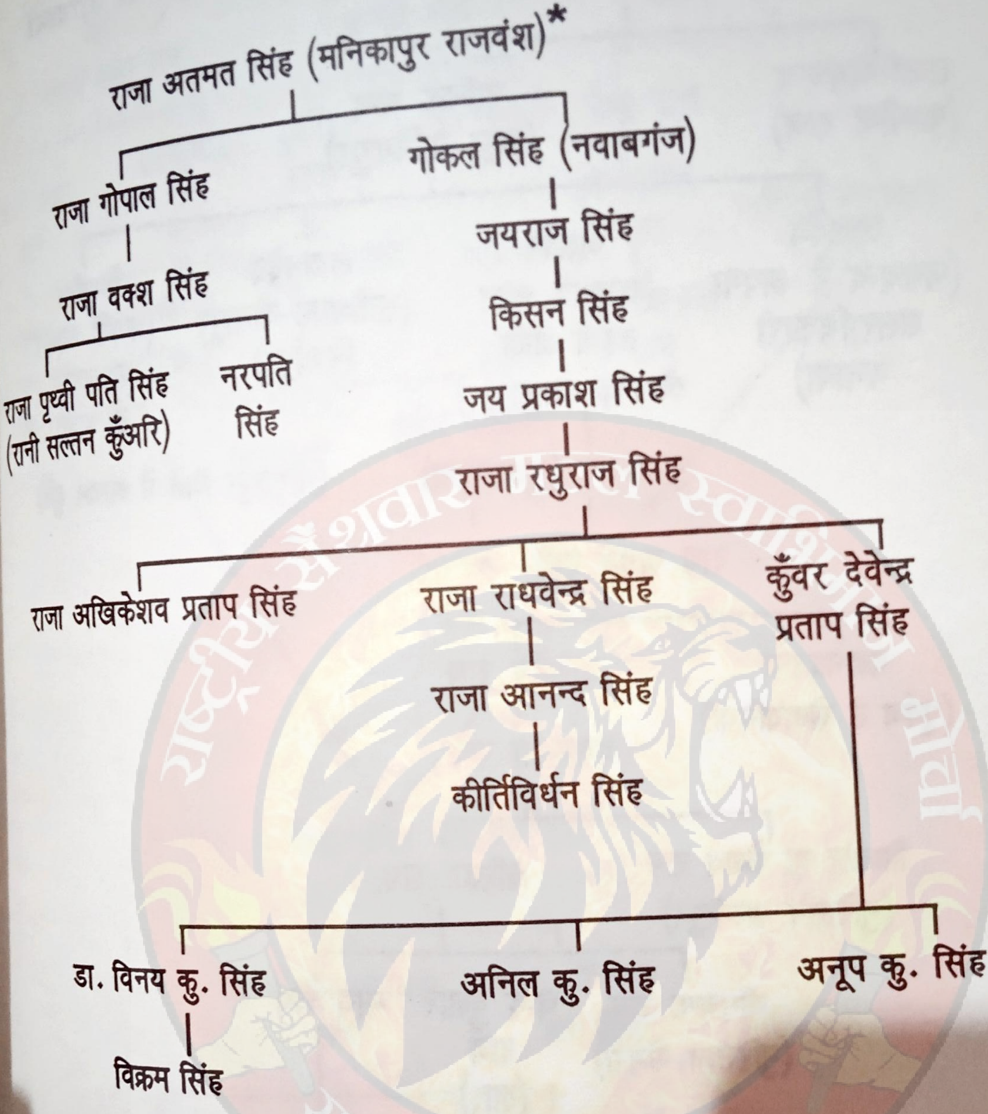
- सुखइत मल्ल
  - धनश्याम मल्ल
    - राम वरन मल्ल
      - रोशन मल्ल (संत उत्तरकुटी लकुरा ला.)
      - अभिलाख मल्ल (संत उत्तरकुटी लकुरा ला.)
      - उमराव मल्ल
        - सहदेव मल्ल (ला.)
        - जित्तन मल्ल
          - कमला मल्ल
            - रामबहादुर मल्ल
      - ब्रजमोहन मल्ल
        - रामबली मल्ल
          - हरिशंकर मल्ल
            - अनिल कु० मल्ल
            - रामायण मल्ल
          - रामअधार मल्ल
    - संतबक्श मल्ल
      - लक्ष्मण मल्ल
        - महावीर मल्ल (ला.)
        - महादेव मल्ल
          - रमाशंकर मल्ल
          - राजेन्द्र मल्ल
        - रघुवीर मल्ल (ला.)
        - बिन्देश्वरी मल्ल (ला.)
      - कल्यान मल्ल



नोखा मल्ल
तलाश मल्ल
जीत मल्ल
राम जिआवन मल्ल
गुलजार मल्ल
परशुराम मल्ल
सहदेव मल्ल (ला.)
भरत मल्ल
भुआन मल्ल
कुन्जी मल्ल
रामसुभग मल्ल
जयकरन मल्ल (ला.)
नारायण मल्ल
जगदेव मल्ल
केशव मल्ल (मु. लक्ष्मी कुँवरि ला.)
बलदेव मल्ल
चांदबली मल्ल
वृन्दावन मल्ल
दीपनारायण मल्ल
शिवशंकर मल्ल (मु. सुनरी कु.)
केदारनाथ मल्ल
संतराज मल्ल (ला.)
जनकराज मल्ल
हरिशंकर मल्ल
दयाशंकर मल्ल
कपिलमुनि मल्ल
विपिन चन्द मल्ल
सतीश कुमार मल्ल
हरदेव मल्ल
ब्रह्मदेव मल्ल (ला.)
धर्मदेव मल्ल
शिवशंकर मल्ल
संजय कुमार मल्ल
पारसनाथ मल्ल
अक्षैवर मल्ल
जितेन्द्र मल्ल
जंगबहादुर मल्ल
अशोक कुमार मल्ल
कृष्ण कुमार मल्ल

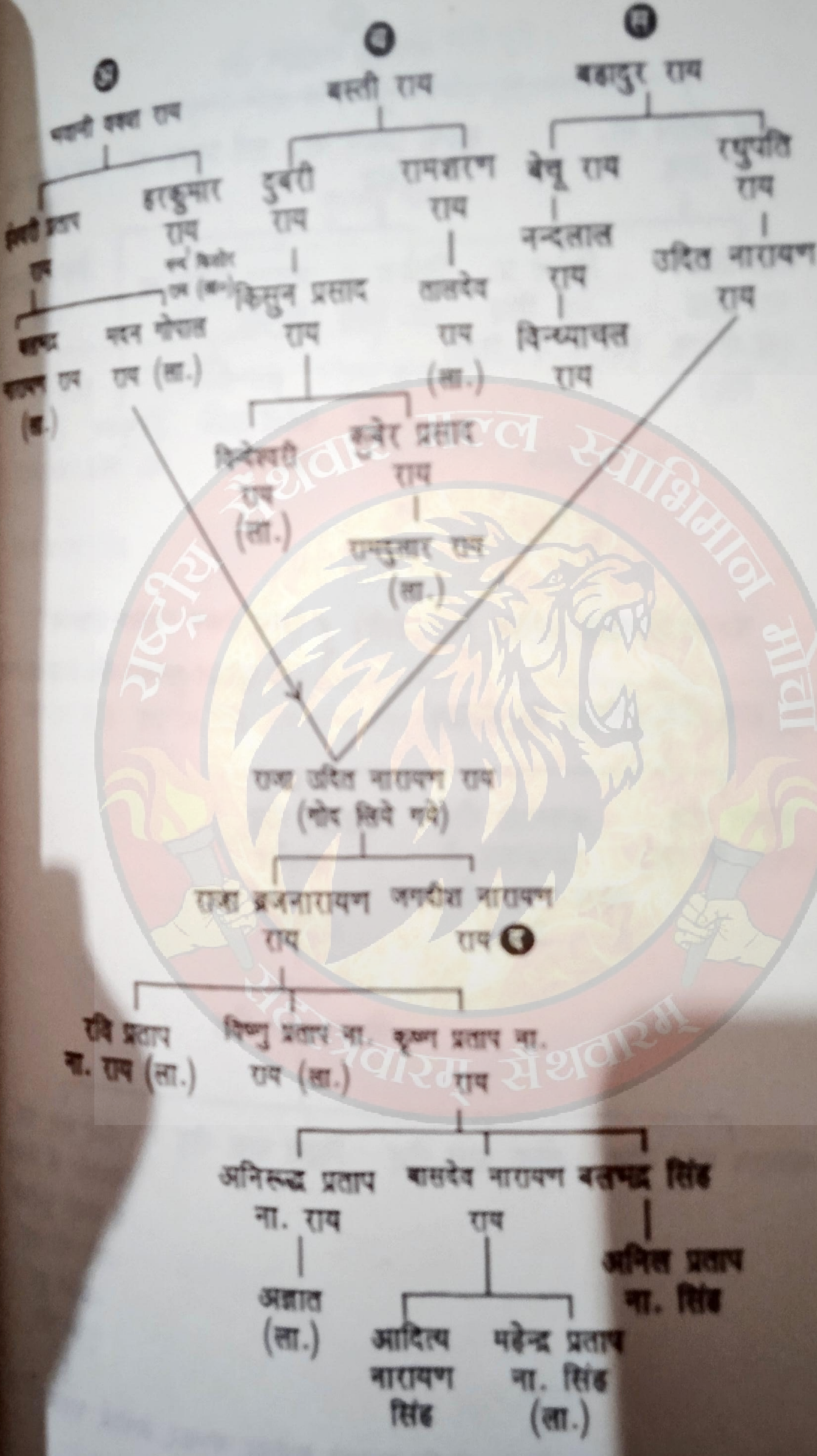
वंशावली विसेन वंश - (गोंडा, भिनगा, मनिकापुर शाखा)

- रामप्रताप मल्ल (कनिष्ठ पुत्र राजा नृप मल्ल राजा मझौली - देवरिया)
  - शाह मल्ल
    - कुसुम मल्ल
      - राजा मान सिंह (गोंडा)
        - राजा लक्ष्मण सिंह
          - राजा सखन सिंह
            - राजा अमर सिंह
              - राजा राम सिंह
                - राजा दल सिंह
                  - राजा उद्दैत सिंह
                    - राजा मंगल सिंह
                      - राजा शिव प्रसाद सिंह
                        - राजा जय सिंह
                    - विश्वान सिंह
                      - दुनियानाथ सिंह
                        - राजगुमान सिंह
                          - राजा देवी वक्श सिंह (गोण्डा)
                      - विद्यापति सिंह
                      - माधव सिंह
                  - राजा अजमत सिंह* (मनिकापुर राजवंश १६८१)
                - भवानी सिंह (भिनगा राजवंश)
              - वीर विक्रम सिंह (पक्का गॉव विसम्भरपुर)
              - पारस सिंह (वानडीह)
              - बोध सिंह (विसुनपुरिया)
              - केशरी सिंह (वरपारमोहिया)
        - इन्द्रजीत सिंह (मढ़ी)
        - विक्रमाजीत सिंह (विंध्यनगर)
        - प्रताप सिंह (मुजल)
        - केशई सिंह (पहाड़)


राजा अतमत सिंह (मनिकापुर राजवंश)*
राजा गोपाल सिंह
गोकल सिंह (नवाबगंज)
जयराज सिंह
राजा वक्श सिंह
किसन सिंह
राजा पृथ्वी पति सिंह
(रानी सल्तन कुँअरि)
नरपति सिंह
जय प्रकाश सिंह
राजा रधुराज सिंह
राजा अखिकेशव प्रताप सिंह
राजा राधवेन्द्र सिंह
कुँवर देवेन्द्र प्रताप सिंह
राजा आनन्द सिंह
कीर्तिविर्धन सिंह
डा. विनय कु. सिंह
अनिल कु. सिंह
अनूप कु. सिंह
विक्रम सिंह

वंशावली गहरवार क्षत्रिय, (पडरौना के रायान) (शजरे शादाब)

- महाराजा सोमदत्त
  - राजा जयचन्द (कन्नौज राज)
  - मानिक चन्द (कड़ा मानिकपुर)
    - तालदेव (जयचन्द नें अपना उत्तराधिकारी बनाया)
    - अलदेव (राजगाने मांड़ा ढइया आदि खैरागढ़-इलाहाबाद)
      - भुपालराय (भुआलराय) (गोरखपुर जिले में आबाद हुये)
        - राय जगत राय
          - वलभद्रराय (पूर्वज से सेखवनियां)
          - वासदेव राय
            - वनमाला राय
              - किशोर या केशव राय (मुरिसान लक्ष्मीपुर)
              - हरिहर राय
                - भीमचन्द राय (मुरिसान सेमरा)
                - चन्द दुलार राय (ला.)
                - नाथ राय
                  - राम सूरत राय (ला.)
                  - भूपनारायण राय (ला.)
                  - हुलास राय
                    - राम दत्त राय (ला.)
                    - बान सिंह राय
                      - कृष्णशंकर राय (ला.)
                    - हरगोविन्द राय
                      - रामनारायण राय
                        - विश्वेश्सर राय (ला.)
                        - भवानी बक्श राय (अ)
                      - मेहरवान राय
                        - बस्ती राय (ब)
                        - बहादुर राय (स)
                      - धनहू राय
    - लखनदेव (सतीशगढ़-बीजापुर मिर्जापुर)
    - प्रेमजीत (गजनी जाकर मुसलमान हो गया)


बस्ती राय
दुबरी राय
रामशरण राय
किसुन प्रसाद राय
लालदेव राय (ला.)
बहादुर राय
बेलू राय
रघुपति राय
नन्दलाल राय
उदित नारायण राय
विन्ध्याचल राय
हरकुमार राय
मदन गोपाल राय (ला.)
कुबेर प्रसाद राय
राजा उदित नारायण राय
(गोद लिये गये)
राजा ब्रजनारायण राय
जगदीश नारायण राय
रवि प्रताप ना. राय (ला.)
विष्णु प्रताप ना. राय (ला.)
कृष्ण प्रताप ना. राय
अनिरूद्ध प्रताप ना. राय
बासदेव नारायण राय
बलभद्र सिंह
अज्ञात (ला.)
आदित्य नारायण सिंह
महेन्द्र प्रताप ना. सिंह (ला.)
अनिल प्रताप ना. सिंह

६

जगदीश नारायण राय

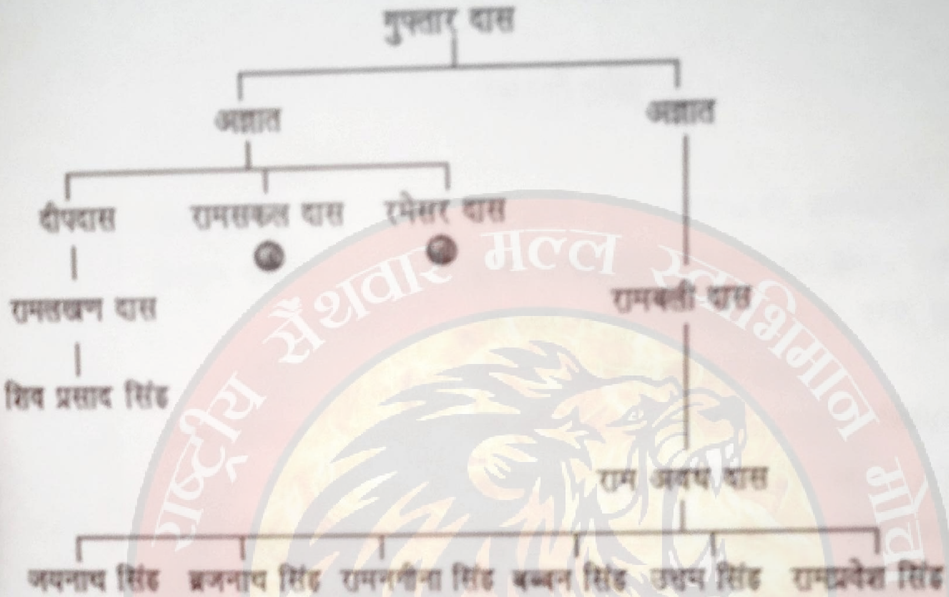
- रुद्र प्रताप ना. सिंह
  - चन्द्र प्रताप ना. सिंह (सी.पी.एन. सिंह)
  - दिनेश प्र. ना. सिंह (डी.पी.एन.सिंह)
- लक्ष्मी प्रताप ना. सिंह
  - विजेन्द्र प्र. ना. सिंह
  - अज्ञात (काका)
  - मुकुन्द ना. सिंह
- सर्व प्रताप ना. सिंह
  - देवेन्द्र प्र. ना. सिंह
  - त्रिभुवन ना. सिंह
- राम प्रताप ना. सिंह
  - हेमन्त कुमार सिंह

वंशावली गौड़ क्षत्रिय (नागवंशी) { (द्वारा लेखक "क्षत्रिय वंशार्णव") (श्री सूबेदार भगवान दीन सिंह-प्रतापगढ़)

हेमु राज गौड़ (बंगाल का शासक)

- बालन गौड़ (बंगाल में रहा)
- लषणसी गौड़ (लखनऊ के आस-पास अधिकार किया)
- वत्सराज गौड़ अजमेर
  - थानेश्वर
    - वंशज गोपाल दास गौड़
      - बलराम दास गौड़
      - सोला दास गौड़
      - विट्ठल दास गौड़
      - मोती दास गौड़ (जालन्धर के निकट के राजा) पूर्वांचल आये, गोरखपुर आबाद हुए मुख्य गाँव
        - दोघरा, पाली, पथसरा, नीरपुर, कोदरी, गायघाट, थानेपुर, गंगपार, अमोढ़ा, मलउर बसौत

गोरखपुर जनपद से आये हुये :
वंशावली गौड़, क्षत्रिय (नागवंशी) (ग्रा. लखनौर)



परिशिष्ट-3

संदर्भिका

फारसी स्त्रोत

1.	अल्लामी, अबुल फजल	आइना-ए-अकबरी, सम्पादित-एच. ब्लोकमेन, कलकत्ता प्रति, 1877, अंग्रजी अनुबाद, वाल्यूम 2, एच. एस. जैरेट, कलकत्ता 1949 ।
2.	राम, केवल	तजकिरात-उल-उमरा, एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल कलकत्ता, हस्तलिपि।
3.	जहांगीर	तुजुक-ए-जहांगीरी, अंग्रेजी अनुवाद, रोजर्स एण्ड बेवरिज, लन्दन, 1909 ।
4.	हजरत, मुफ्ती गुलाम	कवायफ-ए-जिला-ए-गोरखपुर इण्डिया आफिस लन्दन, हस्तलिपि संख्या 4540 ।

उर्दू ग्रन्थ

1.	अहमद, सैय्यद सफीक	तजकिरे अहमद वादपा रहमतुल्लाह अलय ।
2.	बदायूँनी, कादिर	मुन्तखवुल तवारिख उर्दू प्रति, नवल किशोर प्रेस लखनऊ मुद्रित।
3.	फारुकी, अब्दुल गफूर	शज़रे-शादाब, गोरखपुर, 1901 ।
4.	मानिक पुरी, सैयय्यद मोहम्मद अब्दुल हसन	आईना-ए-अवध ।

5. ---- अखबार मौरिखान।

6. ---- जहूरे कितवी।

7. ---- तारीख-ए-हिन्दुस्तान।

अंग्रेजी ग्रन्थ

1. क्रुक, डब्लू — दि ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ दि नार्थ- वेस्टर्न प्राविंसेज एण्ड अवध, 4 वाल्यूम्स, कलकत्ता, 1896 ।

2. कनिंघम — -----------

3. खां, ए. आर. — चीफटेन्स इन दि मुगल इम्पायर ड्यूरिंग दि रेन आफ अकबर, शिमला, 1977 ।

4. जायसवाल, डा० काशी प्रसाद — हिन्दू राजतन्त्र।

5. टाड — राजस्थान।

6. नेविल, एच. आर. — गोरखपुर : सप्लीमेन्ट्री नोट्स एण्ड स्टेटिस्टिक्स टू, वाल्यूम 32 आफ दि डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ दि यूनाइटेड प्राविंसेज आफ आगरा एण्ड अवध, इलाहाबाद, 1921 ।

7. पाण्डेय, हरि नन्दन सुपरिटेन्डेन्ट, आर्केलाजिकल डिपार्टमेन्ट आफ इण्डिया — ---------------------

8. वैद्य, चिन्तामणि विनायक — ---------------------

------------ हू इज हू

9. इण्डियन प्रिन्सेज, चीफ्स एण्ड नोबल्स, 1967 ।

10. श्रीवास्तव आशीर्वादी लाल — दि फर्स्ट टू नवाब्स आफ अवध, लखनऊ, 1933, हिन्दी संस्करण, अवध के प्रथम दो नवाब के रुप में आगरा, 1957 ।

हिन्दी ग्रन्थ

1. ओझा, राय बहादुर महामहोपाध्याय पं० गौरी शंकर हीरा चन्द — टाड राजस्थान हिन्दी अनुवाद ।
2. पाण्डेय डा० राजबली — गोरखपुर जपनद और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास, गोरखपुर, 2003 विक्रमी (1946 ई०)।
3. भाष्कर, शिवनाथ — क्षत्रिय वंश भाष्कर ।
4. मल्ल, लाल खड्ग बहादुर — विसेन वंश वाटिका ।
5. मिश्र, पं० ज्वाला प्रसाद — जाति भाष्कर ।
6. रिज़वी, सैय्यद नजमुल रज़ा — अठारहवीं सदी के जमींदार।
7. विसेन, बब्बन मल्ल — शाही दर्पण ।
8. --------- — क्षत्रिय कल्प द्रुम ।
9. --------- — क्षत्रिय कल्पावतार ।
10. शास्त्री, ढुढिराज — टीका मुद्रा राक्षस ।
11. श्रीवास्तव, आर्शीवाद लाल — मध्यकालीन भारत ।

12. सांकृत्यायन, राहुल — अकबर।

13. सांकृत्यायन, राहुल — आज़मगढ की पुरातत्व यात्रा।

14. सांकृत्यायन, राहुल — बुद्ध चर्या।

15. स्वामी, श्रीधर — टीका विष्णु पुराण।

16. सिंह, राजा अवधेश (कालाकांर) — क्षत्रिय मित्र।

17. सिंह, भिनगा नरेश राजर्षि उदय प्रताप — भिनगा फेमिली।

18. सिंह, कुंवर क्षत्रपति — विसेन वंशागम।

19. सिंह, जगदीश नारायण — इतिहास लौटा।

संस्कृत ग्रंथ

वाल्मीकी रामायण।

विष्णु पुराण।

बौद्ध ग्रंथ।

दिव्य दान।

महा वंश।

महा परिनिर्वाण सुतान्त।

अनुवाद

1. डा मोमिन महीनुद्दीन सदर शोवये अलूम बम्बई यूनिवर्सिटी — सैय्यद अहमद वादपा रहमतुल्लाह के नाम जारी शाही फरमान का फारसी से हिन्दी अनुवाद।

प्रकाशित लेख

1. त्रिपाठी, राजेश — जब मझौली इस्टेट की रानी के भेजे सिन्दूर की लाज रखी महबानो ने राष्ट्रीय सहारा, 19 नवम्बर 2000 ई० ।

2. मल्ल, स्व० बाबू जमुना — जर्नल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल (रिपोर्ट) ।

राजकीय दस्तावेज

1. कमिशनरर्स आफिस गोरखपुर, रेवेन्यू रिकार्ड्स, रिलेटिंग टू दि गोरखपुर डिस्ट्रिक्ट (इन्क्लूडिंग बस्ती) खण्ड-1 फाइल नं०4, सिरियल नं० 16, पृष्ठ 103 ।
2. कैलेन्डर आफ पर्सियन करेस्पान्डेन्स, खण्ड 6, पत्र सं० 19,83 ।
3. गजेटियर, गोरखपुर, 1909, पृष्ठ 110-111 ।
4. गजेटियर, प्रतापगढ़ ।
5. गजेटियर, मिर्जापुर ।
6. जिल्द बन्दोबस्त, रोबकार कचहरी बड़गांव, सिकटा, 1933 ।
7. फारेन सीक्रेट कन्सलटेशन, फोर्ट विलियम, 16 जनवरी 1781 ई०, फाइल नं० 4, पृष्ठ 2, फाइल नं०5, पृष्ठ 1-3 ।
8. फारेन सीक्रेट प्रोसीडिंग्स, फोर्ट विलियम, (12 जून-30 जून 1783 ई०) सिरियल नं० 57, फाइल नं० 1ए पृष्ठ 2336 ।
9. वही, पृष्ठ 68-75, 104, 105,।